GOVERNMENT OF TAMIL NADU

Hindi Reader

हिन्दी रीडर

STANDARD - X

दसवीं कक्षा

Department Of School Education

Untouchability is Inhuman and a Crime

10 thPreface.indd 1 10-01-2019 11:47:20

Government of Tamil Nadu

First Edition - 2019

Reprint - 2020, 2021, 2022,

2023, 2024

(Published under New Syllabus)

Content Creation

State Council of Educational Research and Training

© SCERT 2019

Printing & Publishing

Tamil NaduTextbook and Educational Services Corporation

www.textbooksonline.tn.nic.in

Preface.indd 2 28-01-2019 10:11:54

प्रस्तावना

नई सोच, नई आशाओं के साथ पुस्तक वर्ग २, वर्ग ७, वर्ग १० और वर्ग १२ का सृजन किया गया है।

आगे के प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष के वातावरण में बच्चों का सम्यक शारीरिक एवं मानसिक विकास बहुत आवश्यक है ताकि वे भविष्य में आनेवाली चुनौतियों का मुकाबला आसानी से कर सकें। उनके लिए ज्ञान विज्ञान की बातें उतनी ही आवश्यक है जितनी साहित्य और कला संबंधी जानकारी देश विदेश में हो रही घटनाओं से परिचित होना अगर आवश्यक है तो जीवन जीने की व्यावहारिक कला में निपुण होना भी उतना ही आवश्यक है। इन बातों को ध्यान में रखकर ही इस श्रृंखला का सृजन किया गया है। छात्र छात्राओं का सर्वांगीण करना है।

श्रृंखला तैयार करते समय निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखा गया है।

- पाठों की प्रस्तुति के लिए विधा , कौतूहल और भाषा की सरलता आवश्यक है, यही समझते हुए ऐसे पाठों का चयन किया गया है जो बच्चे की जिज्ञासाओं एवं रूचियों को बढावा दे सके। साहित्य की विभिन्न विधाओं से अवगत कराने हेतु कविताएँ, कहानियाँ, लेख, यात्रा वृत्तांत, हास्य कथा, एकांकी, साक्षात्कार, आत्मकथा, डायरी आदि को सम्मिलित किया गया है।
- पर्यावरण संरक्षण आज के युग की सबसे बडी माँग है। बच्चों को प्राथमिक कक्षाओं से ही पर्यावरण की समस्याओं एवं उसके संरक्षण के प्रति जागरूकता लाने के लिए पर्यावरण संबंधी कहानियों एवं कविताओं के साथ साथ समाचार पत्रों में छपे लेख, पोस्टर आदि को भी सम्मिलित किया गया है।
- बच्चों को पुस्तक के केंद्र में रखने के कारण ऐसे पाठों को ही चुना गया ताकि खेल खेल में, मनोरंजन करते हुए अपनी बात बच्चों तक पहुँचा सकें। कक्षा का वातावरण बोझिल न हो, इसलिए रूचिकर पाठों के साथ साथ चुटकुले, शब्द पहेली, चित्रकथाएँ आदि भी दिए गए है।
- समालोचनात्मक सोच, समस्या समाधान, प्रभावशाली संप्रेषण तथा रचनात्मक प्रवृत्ति जैसे कौशलों का विकास करने वाले कार्यकलापों को विशेष रूप से सम्मिलित किया गया है।
- भाषा ज्ञान के अंतर्गत व्याकरण को सम्मिलित कर लिया गया है ताकि वह अलग अलग न होकर उसके साथ जुडा रहे।
- मौखिक वार्तालाप, लिखित कार्य, समूह कार्य, संवाद प्रदर्शन आदि को ध्यान में रखते हुए अभ्यासों का निर्माण किया गया है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन करते समय इस विविधता को ध्यान में रखा जाए। मूल्यांकन करते समय प्रश्न कल्पनाशीलता को उभारें, विषयवस्तु को विस्तार प्रदान करने वाले हों, पाठ्यपुस्तक की परिधि से बाहर वृहतर परिधि को समेटने वाले हों, इन सभी बिंदुओं को ध्यान में रखकर ही अभ्यास में सभी प्रकार के प्रश्नों का समावेश किया गया है।

सीखने के वातावरण को आनंदमयी बनाए रखना अध्यापकों की बहुत बडी जिम्मेदारी है। कक्षा में विद्यार्थियों के संप्रेषण को महत्व दें। बच्चे अपनी बात बोलते समय न हिचकें। उन्हें बोलते अथवा लिखते समय जो भी सहायता चाहिए, प्रदान करे ।

बच्चों के मनोविज्ञान, उनके मानसिक क्षितिज को समझते हुए, उनके जगत से तारतम्य बनाते हुए हमारी ओर से प्रयास है।

10 thPreface.indd 4 10-01-2019 11:47:21

देशीयगीतम्

जन गण मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा
द्राविड उत्कल बङ्गा
विन्ध्य हिमाचल यमुना गङ्गा
उच्छल जलधि तरङ्गा
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा
जन गण मङ्गल दायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय जय हे !

महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरः

अस्पृश्यत्वम् अपचारः
अस्पृश्यत्वम् अपराधः
अस्पृश्यत्वम् अमानवधर्मः



Preface.indd 5 28-01-2019 10:22:39

तमिल माता की वंदना
(तमिलताय वाळ्तु)

नीरारूम कडलुडुत्त निलमडन्दै केळिलोळुगुम
सीरारूम वदनमेन तिगळ् भारत खंडमिदिल,
तेक्कण्मुम अदिर्चिरन्द द्राविडनल् तिरूनाडुम
तक्कचिरू पिरैनुदलुम तरित्तनरून्तिलकमुमे
अत्तिलक वासनैपोल अनैत्तुलगुम इन्बमुर
ऍत्तिशैयुम पुगळ मण्क्क इरून्द पेरूंद् तमिलअणंगे!
तमिलअणंगे!
उन सीर इलमै तिरम वियन्दु सेयलमरन्दु वाळ्त्तुदुमे!
वाळ्त्तुदुमे!
वाळ्त्तुदुमे!

'मनोनमणियम' पे. सुन्दरम पिल्लै

10 thPreface.indd 7 10-01-2019 11:47:21



राष्ट्रिय प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है।

सब भारतवासी मेरे भाई-बहन है।

मैं अपने देश से प्रेम करता/करती हूँ।

इसकी समृद्ध एवं विविध संस्कृति पर मुझे गर्व है।

मैं सदा इसका सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न करता/करती रहूँगा/रहूँगी।

मैं अपने माता-पिता, शिक्षको एवं गुरुजनो का सम्मान करूँगा/करूँगी और प्रत्येक के साथ विनीत रहूँगा/रहूँगी।

मैं अपने देश और देशवासियों के प्रति सत्यनिष्ठा की प्रतिज्ञा करता/करती हूँ।

इनके कल्याण एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।



10 thPreface.indd 8 10-01-2019 11:47:21

विषय – सूची

पद्य

1.	कबीर के दोहे	001
2.	कर्मवीर	003
3.	रसखान के पद	006
4.	मातृभूमि	009
5.	अब्दुर्रहीम खानखाना	012
6.	मैं नीर भरी दुःख की बदली	015
7.	पांचजन्य	017
8.	मोम-दीप मेरा	020
9.	कलम और तलवार	023

गद्य

10.	व्यक्तित्व	025
11.	लोभ	029
12.	आत्मनिर्भरता	033
13.	ऐसे-ऐसे (एकांकी)	037
14.	जीवन और शिक्षण	044
15.	संस्कृति क्या है?	051
16.	युवकों का समाज में स्थान	056

कहानी

17.	मिठाईवाला	061
18.	हींगवाला	068
19.	बाप का हृदय	073
20.	बदला	080
21.	रक्षा बंधन	087

व्याकरण

22.	व्याकरण	097

10 thPreface.indd 9 10-01-2019 11:47:21

Hindi Reader

STANDARD - **X**

10 thPreface.indd 10 10-01-2019 11:47:21

1 कबीर के दोहे

कबीरदास

कवि परिचय:

कबीरदास भक्तिकाल की ज्ञानमार्गी शाखा के प्रतिनिधि कवि थे। वे अनपढ़ थे। रहस्यवादी कवि थे। उनका जन्म सं.1455 में हुआ था। नीरू और नीमा दंपति ने कबीर का पालन पोषण किया था। बचपन से ही कबीर धर्म परायण थे। वे ईश्वर को निराकार, निरंजन तथा सर्वांतर्यामी मानते थे। वे मूर्ति पूजा के कट्टर विरोधी थे। बड़े समाज सुधारक थे। साखी, सबद, रमैनी कबीरदास की रचनाएँ हैं। जो 'बीजक' नामक ग्रंथ में संग्रहित हैं। उनकी भाषा सधुक्कड़ी है।



कबीरदास

(1) जाको राखै साँइयाँ, मारि न सकै कोय।
बाल न बाँका करि सकै, जो जग बैरी होय॥

संदर्भ : इसमें भगवान की महिमा बताई गई है।

व्याख्या : कबीरदास कहते हैं- भगवान जिसकी रक्षा करता है, उसे कोई मार नहीं सकता। चाहे सारी दुनिया उनकी शत्रु हो जाए तो भी उसका कुछ भी नुकसान नहीं हो सकता। (इसलिए हरेक को भगवान की कृपा प्राप्त करनी चाहिए)

कठिन शब्दार्थ : **जाको-जिसको, राखै-रक्षा करता है। साँइयाँ-भगवान, बाल बाँका न करना - जरा-सा नुकसान नहीं पहुँचाना।**

(2) साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार-सार को गहि रहै, थोथा देई उड़ाय॥

संदर्भ : इसमें साधु के स्वभाव की विशेषता बतायी गयी है।

व्याख्या : कबीरदास जी कहते हैं साधु का स्वभाव सूप के समान होता है जो सारत्व को ग्रहण कर लेता है और थोथी वस्तु अर्थात तत्वहीन वस्तु को छोड़ देता है।

कठिन शब्दार्थ : **सूप-अनाज साफ करने का छाज, सुभाय-स्वभाव, गहि रहे-ग्रहण करता है,** थोथा-निस्सार।

10th Standard.indd 1 10-01-2019 12:09:41

(3) जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान।
जैसे खाल लोहार की, साँस लेत बिनु प्रान॥

संदर्भ : इसमें प्रेमहीन व्यक्ति के बारे में बताया गया है।

व्याख्या : कबीरदास जी कहते हैं जिस हृदय में प्रेम का संचार नहीं होता, उसे मृत समझना चाहिए। ऐसा व्यक्ति प्राण रहित साँस लेने वाली लोहार की धौंकनी के समान है। लोहार की धौंकनी प्राणों के न होने पर भी साँस लेती है, उसी प्रकार साँस लेने पर भी प्रेमहीन व्यक्ति प्राण रहित होता है।

कठिन शब्दार्थ : **जा-जिस, घट-शरीर, सो-वह, संचरै-संचार होता है, लोहार की खाल-लोहार की धौंकनी, बिनु-बिना।**

(4) जिन ढूँढा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठि।
मैं बपुरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठि॥

संदर्भ : इसमें बताया गया कि साहस करने वाले को ही सब कुछ मिलता है।

व्याख्या : कबीरदास जी कहते हैं जिन लोगों ने समुद्र के गहरे पानी में जाकर कुछ ढूँढा है, उन लोगों ने अमूल्य रत्नों को प्राप्त किया। जो बेचारा डूबने से डरा वह किनारे पर ही बैठा रहा। अर्थात कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाया।

कठिन शब्दार्थ : जिन-जिन्होंने, तिन-वे लोग, पाइयाँ-प्राप्त किया, पैठि-घुसकर, प्रेवश कर, बपुरा-बेचारा

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. संत कबीर के बारे में आप क्या जानते हैं?
2. कबीर ने ईश्वर की महिमा का वर्णन कैसे किया है?
3. कबीर दास ने प्रेम के महत्व को कैसे बताया?
4. कबीर का साधु के बारे में विचार क्या है?
5. कबीर ने परिश्रम के फल के बारे में क्या कहा है?

10th Standard.indd 2 10-01-2019 12:09:41

2

कर्मवीर

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

कवि परिचय:



अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

सन्1865 में आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) में 'हरिऔध' जी का जन्म हुआ।'हरिऔध' द्विवेदी युग के एक प्रमुख कवि हैं। 'खड़ीबोली' की रचनाओं के कारण आपको प्रसिद्धि मिली। आप एक कुशल वक्ता और सफल अध्यापक भी थे। सन्1914 ईस्वी में आपकी सर्वप्रथम रचना 'प्रियप्रवास' महाकाव्य का प्रकाशन हुआ। आपकी अन्य काव्य रचनाएँ हैं 'चुभते-चौपदे', 'चोखे-चौपदे' और 'पारिजात'।'हरिऔध' जी ने प्रकृति के साथ-साथ राष्ट्रीयता की भावना को भी उजागर किया है। कविवर हरिऔध जी कर्म के महत्व को दर्शाते हुए परिश्रमी लोगों की प्रशंसा करते हैं।भाग्य के भरोसे बैठे रहने वाले की अपेक्षा पुरुषार्थ करके लक्ष्य को प्राप्त करने वाले ही कर्मवीर कहलाते हैं। सच्चे कर्मवीर कभी बातें नहीं बनाते, बाधाओं से विचलित नहीं होते और संघर्ष से मुंह नहीं मोड़ते। वे कठिन-से-कठिन कार्य को भी अपने परिश्रम से संभव कर दिखाते हैं। समाज और देश की उन्नति ऐसे ही कर्म वीरों के पुरुषार्थ पर निर्भर होती है। देश के नवयुवकों को लगन और मेहनत की सीख देने वाली प्रेरक कविता।

''आज करना है जिसे करते उसे हैं आज ही।
सोचते कहते हैं जो कुछ कर दिखाते हैं वही॥
मानते जी की हैं सुनते हैं सदा सबकी कहीं।
जो मदद करते हैं अपनी इस जगत में आप ही॥

भूल कर भी दूसरों का मुंह कभी ताकते नहीं।
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं॥
जो कभी अपने समय को यूँ बिताते हैं नहीं।
काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं॥

10th Standard.indd 3 10-01-2019 12:09:41

आज कल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं।
यत्न करने में कभी जी को चुराते हैं नहीं॥
बात है वह कौन जो होती नहीं उनके लिए।
वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिए॥

चिलचिलाती धूप को जो चांदनी देते बना।
काम पडने पर करें जो शेर का भी सामना॥
जो कि हँस-हँस के चबा लेते हैं लोहे का चना।
है कठिन कुछ भी नहीं जिनके है जी में यह ठना॥

कोस कितने ही चलें पर वे कभी थकते नहीं।
कौन-सी है गाँठ जिसको खोल वे सकते नहीं॥
काम को आरंभ करके यूँ नहीं जो छोड़ते।
सामना करके नहीं जो भूल कर मुंह मोड़ते॥

वे गगन के फूल बातों से व्यथा नहीं तोड़ते।
संपदा मन से करोड़ों की नहीं जो जोड़ते॥
बन गया हीरा उन्हीं के हाथ से है कारवान।
काँच को करके दिखा देते हैं वे उज्ज्वल रतन॥

पर्वतों को काटकर सड़कें बना देते हैं वे।
सैकड़ों मरुभूमि में नदियाँ बहा देते हैं वे॥
गर्भ में जल-राशि के बेड़ा चला देते हैं वे।
जंगलों में भी महामंगल रचा देते हैं वे॥

भेद नभतल का उन्होंने है बहुत बतला दिया।
है उन्होंने ही निकाली तार की सारी क्रिया॥
सब तरह से आज इतने देश है फूले-फले।
बुद्धि, विद्या, धन, वैभव के हैं जहाँ डेरे डले॥

10th Standard.indd 4 10-01-2019 12:09:41

वे बनाने से उन्हीं के बन गए इतने भले।

वे सभी हैं हाथ से ऐसे सपूतों के पले॥

लोग जब ऐसे समय पाकर जन्म लेगें कभी।

देश की और जाति की होगी भलाई भी तभी॥

कठिन शब्दार्थ -

जी-मन, मुंह ताकना-किसी के भरोसे बैठे रहना,नमूना-आदर्श जिसका अनुकरण किया जाए,लोहे के चने चबाना-अत्यंत कठिन कार्य को करना, आंख खुलना-उलझन दूर करना, विभव-शक्ति, प्रभुत्व, मदद-सहायता, मरुभूमि-रेगिस्तान।

I) सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. आज करना है .....

   .....इस जगत में आप ही।

2. जो कभी अपने समय.....

   .....औरों के लिए।

3. चिलचिलाती धूप को.....

   .....खोल वे सकते नहीं।

4. पर्वतों को काटकर.....

   .....की सारी क्रिया।

II)'कर्मवीर' कविता का सारांश लिखिए।

10th Standard.indd 5 10-01-2019 12:09:41

3 रसखान के पद

रसखान

कवि परिचय:

रसखान दिल्ली के पठान थे। वे वल्लभ संप्रदाय के गोस्वामी विट्ठलनाथ के शिष्य थे। गुरु से दीक्षा लेकर वे भगवान कृष्ण के भक्त बन गये।

उनकी रचनाओं में भक्ति, शृंगार एवं वात्सल्य रस की प्रधानता है। रसखान की रचनाएँ हैं- (1) प्रेम वाटिका और (2) सुजान रसखान, प्रेमवाटिका में प्रेम के महत्व का वर्णन है। सुजान रसखान में प्रेम और भक्ति का अद्भुत समन्वय है।



रसखान

1. **मानुष हौं तौ वही रसखानि, बसौं ब्रज-गोकुल-गाँव के ग्वारन ।**
   जो पसु हौं तौं कहा बसु मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन ॥
   पाहन हौं तौं वही गिरि कौ, जो धर्यौं कर छत्र पुरंदर-धारन ।
   जो खग हौं तौं बसेरो करौं, मिली कालिंदीकूल कदंब की डारन ॥

प्रसंग :

कवि रसखान श्री कृष्ण के परम भक्त थे। वे श्रीकृष्ण से प्रार्थना करते हैं यदि मेरा पुनर्जन्म हो तो कृष्ण जहाँ रहते हैं, वहीं होना चाहिए।

व्याख्या :

रसखान प्रार्थना करते हैं कि यदि मुझे अगले जन्म में मनुष्य का जन्म मिले तो व्रज भूमि-गोकुल-गाँव के ग्वाले के घर में जन्म मिले। पशु का जन्म हो तो नंद की गाय के रूप होना चाहिए जिसे रोज़ श्रीकृष्ण चरने ले जाएँगे। पत्थर के रूप में जन्म हो तो वे गोवर्धन गिरि का पत्थर बनना पसंद करेंगे। जिसे श्रीकृष्ण ने छत्र बनाकर लोगों को अति वर्षा से बचाया था। पक्षी के रूप में जन्म हो तो कालिंदी नदी के कदंब के पेड़ पर के घोंसले में होना चाहिए। रसखान अपनी अनन्य भक्ति के कारण हर जन्म में कृष्ण के संपर्क में रहना चाहते हैं।

विशेष :

पठान रसखान की श्रीकृष्ण के संपर्क में रहने की कामना हिन्दू धर्म और कृष्ण की महिमा का उदाहरण है।

10th Standard.indd 6 10-01-2019 12:09:42

शब्दार्थ :

धेनु-गाय, पसु-पशु, ग्वारन-ग्वाला,कूल-किनारा,डारन-डाली, पाहन-पत्थर,चर-चरना,

2. **मोर-पंखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरे पहिरौंगी।**
ओढ़ि पीताम्बर ले लकुटी बन, गोधन ग्वारिनसंग फिरौंगी॥
भावतो वोहि मेरे 'रसखानि', सो तेरे कहे सब स्वांग भरौंगी।
या मुरली मुरलीधर की, अधरान धरी अधरान धरौंगी॥

प्रसंग :

यह पद्यांश रसखान रचित 'रसखान लहरी' से दिया गया है।

व्याख्या :

मुगल पठान होने पर भी कृष्ण के प्रति रसखान की अनन्य भक्ति का परिचय मिलता है। रसखान श्रीकृष्ण प्रेमी होने से उनकी हर चाल का अनुसरण करना चाहते हैं। गोपिका बनकर वे कृष्ण की वेश-भूषा में मोहित होकर कहते हैं कि मैं कृष्ण की तरह सिर पर पंख रखूँगी। गले में गुंजों की माला पहनूँगी। पीतांबर पहनकर गायें चराने हाथ में लाठी लेकर वन में जाऊँगी। श्रीकृष्ण की मुरली को अपने अधरों में रखकर बजाऊँगी।

विशेष :

भक्तों को अपने ईश्वर जैसी वेश-भूषा धारण करने में बड़ा आनंद आता है। आज भी कृष्ण जयंती के दिन अपने पुत्रों का भी कृष्णालंकार करके माता-पिता प्रसन्न होते हैं। यह मनुष्य का स्वभाव है।

शब्दार्थ:

मोर-मयूर, पहिनैंगी-पहनूँगी, स्वांग-नाटक, अभिनय, अधरान-ओंठ

3. **सेस महेस गणेश दिनेस, सुरेसहुँ जाहि निरंतर गावैं ।**
जाहि अनादि अनंत अखंड, अछेद अभेद सुवेद बतावें ॥
नारद से सुक व्यास रटै, पचि हारे तऊ पुनि पार न पावैं ।
ताहि अहीर की छोहरियाँ, छछिया भरि छाछपे नाच नचावैं ॥

भावार्थ :

ज्ञान, ध्यान, तप, वैराग्य, भक्ति ये सब भगवत प्राप्ति के मार्ग हैं, लेकिन इन सबमें भक्ति को सुलभ मार्ग कहा गया है। भक्ति के बस में आकर भगवान भक्तों के कैसे निकट आते हैं और लीलाएं करते हैं। उसकी

10th Standard.indd 7 10-01-2019 12:09:42

एक झाँकी इस सवैये में दिखाई गई है। सहस्त्र मुखों के आदिशेष, भगवान महेश्वर समस्त देवगणों के अध्यक्ष विनायक, प्रकाश के देवता, सूर्य और देवराज इन्द्र, जिसका गुणगान निरंतर करते हैं, जिसको श्रेष्ठ वेद (उपनिषद) आदि और अनंत (शाश्वत) तथा अखंड और अच्छेद्य व अभेद कहकर वर्णित करते हैं और नारद से लेकर व्यास शुक तक के भक्त महर्षि जिसका गुणगान निरंतर करते हुए भी तंग आकर थक जाते हैं, किन्तु पास नहीं पहुँच पाते, अर्थात पूर्णतः जान नहीं सकते उस भगवान कृष्ण को ग्वाल बालिकाएँ एक छोटी-सी मटकी भर छाछ के लिए नचा रही हैं। अर्थात जब ग्वाल बालिकाएँ छाछ बेचने मटका सिर पर रखकर जा रही थीं तब बालक कृष्ण उनके सामने जाकर पीने के लिए छाछ माँगता है तो वे देती नहीं तब कृष्ण बाँहें फैलाकर उछल-कूद करते हुए उनके आगे मचलने लगते हैं। भाव यह है कि नारद आदि ज्ञानी-भक्ति युगों तक साधना करते हुए भी जिसका अनुराग प्राप्त न कर सके, उसको अहीर बालिकाएँ निश्चल प्रेम के द्वारा वशीभूत करती हैं। अनुप्रास अलंकार का सुंदर उदाहरण इस पद्य में देखा जा सकता है। अंतिम पंक्ति द्वारा कृष्ण लीला का दृश्य प्रस्तुत किया गया है।

कठिन शब्दार्थ -

जाहि-जिसको, सुवेद-श्रेष्ठ वेद, सुक-शुकमहर्षि, रटैं-जपते हैं, पचि हारे-थककर हार मान गये, तऊ-तब भी छोहरियाँ-छोकरियाँ, छछिया-मिट्टी का छोटा पात्र।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. रसखान रसों की खान हैं कथन स्पष्ट कीजिए।
2. रसखान के काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
3. रसखान की कृष्ण भक्ति पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
4. रसखान कृष्ण दर्शन के लिए क्या-क्या चाहते हैं?
5. रसखान ने कृष्ण की महिमा का उल्लेख किस प्रकार किया है?
6. रसखान के कृष्ण-प्रेमी का रूप वर्णन कीजिए।

10th Standard.indd 8 10-01-2019 12:09:42

4

मातृभूमि

मैथिलीशरण गुप्त

कवि परिचय:



मैथिलीशरण गुप्त

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन 1886 में उत्तर प्रदेश के झांसी जिले में स्थित चिरगाँव नामक गाँव में हुआ था। कविता करने की प्रेरणा आपको अपने पिता से प्राप्त हुई थी। गुप्तजी भारतीय संस्कृति के गायक हैं।'साकेत' आपका महाकाव्य है। आपकी अन्य रचनाएँ हैं 'पंचवटी','भारत भारती','चित्रकूट','काबा और कर्बला','यशोधरा' आदि। आप भारत के राष्ट्रकवि हैं।

राष्ट्रकवि गुप्त जी इस कविता में मातृभूमि की महिमा का बखान करते हैं। जन्मभूमि की प्राकृतिक शोभा किसके मन को आनंदित नहीं करती? मातृभूमि भारत वर्ष के भौगोलिक स्वरूप में से सर्वेश के दर्शन करते हैं। मनोहारणी प्रकृति के भिन्न-भिन्न अंग, पर्वत, नदियां, वृक्ष, वायु आदि सब उन्हें मातृभूमि का अभिनंदन करते प्रतीत होते हैं। शांति और मंगलदायक मातृभूमि की संतान होने पर उन्हें गर्व है।

"नीलांबर परिधान हरित पट पर सुंदर है,
सूर्य-चंद्र योग मुकुट, मेखला रत्नाकर है,
नदियाँप्रेम-प्रवाह, फूल तारे मंडन है,
बंदीजन, खगवृन्द, शेषफन सिंहासन हैं,
करते अभिषेक पयोद है, बलिहारी इस वेष की।
हे मातृभूमि, तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की॥

निर्मल तेरा नीर अमृत के सम उत्तम है,
शीतल मंद सुगंधित पवन हर लेता श्रम है,
षट्ऋतुओं का विविध दृष्ट युत अद्भुत क्रम है,
हरियाली का फर्श नहीं मखमल से कम है,
शुचि-सुधा सींचता रात में तुझ पर चंद्रप्रकाश है।
मातृभूमि दिन में तरिण करता तम का नाश है॥

10th Standard.indd 9 10-01-2019 12:09:42

सुरभित, सुंदर सुमन तुझ पर खेलते हैं,
भांति-भांति के सरस सुधोपम फल मिलते हैं,
औषधियाँ हैं प्राप्त एक से एक निराली,
खानें शोभित कहीं धातु से एक निराली,
जो आवश्यक होते हमें, मिलते सभी पदार्थ हैं,
हे मातृभूमि, वसुधा, धरा तेरे नाम यथार्थ है॥

दीख रही है कहीं दूर पर शैलश्रेणी,
कहीं घनावलि बनी हुई है तेरी वेणी,
नदियाँ पैर पसार रही है बनकर चेरी,
पुष्पों से तरु-राशि कर रही पूजा तेरी,
मृदु मलय वायु मानो तुझे चंदन चारु चढ़ा रही,
हे मातृभूमि, किसका न तू सात्विक भाव बढ़ा रही॥

क्षमामयी, तू दयामयी है, क्षेममयी है,
सुधामयी, वात्सल्यमयी तू प्रेममयी है,
विभवशालिनी, विश्वपालिनी, दुखहर्त्री है,
भय निवारण, शांतिकारिणीसुखकर्त्री है।
हे शरणादायिनी देवी तू करती सब का त्राण है।
हे मातृभूमि, संतान हम तू जननी तू प्राण है॥"

कठिन शब्दार्थ:-

परिधान-पहनावा, मेखला-करधनी,खग-वृन्द-पक्षी-समूह, पवन-वायु हवा, तरू-राशि-वृक्ष समूह, पयोद-मेघ, फर्श-बिछी हुई कालीन, बिछावन शैल श्रेणी-पर्वतों की पंक्ति, चारू-सुंदर, प्रिय क्षेम-मंगल, दुखहर्त्री-दुःख हरने वाली, त्राण-रक्षा।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. मैथिलीशरण गुप्त का जन्म कब और कहाँ हुआ?
2. मैथिलीशरण गुप्त की प्रमुख रचनाएँ क्या–क्या हैं?
3. मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी 'मातृभूमि' कविता में क्या संदेश दिया है?
4. 'मातृभूमि' कविता का प्रकृति-चित्रण कीजिए।

10th Standard.indd 10 10-01-2019 12:09:42

5. मैथिलीशरण गुप्त मातृभूमि की संतान किसे मानते हैं?

6. मातृभूमि के विविध रूप का परिचय दीजिए।

I) सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1. नीलाम्बर परिधान हरित.....

.....सगुण मूर्ति सर्वेश की।

2. क्षमामयी, तू दयामयी है.....

.....तू जननी, तू प्राण है।

II) 'मातृभूमि' कविता का सारांश लिखिए।

10th Standard.indd 11 10-01-2019 12:09:42

5

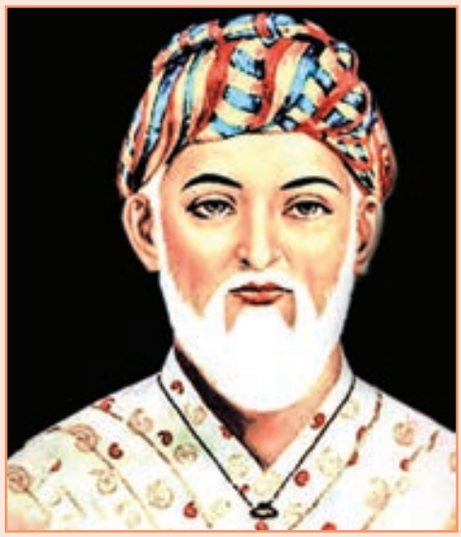
अब्दुर्रहीम खानखाना

अब्दुर्रहीम खानखाना

कवि परिचय:

कविवर रहीम के पिता बैरामखाँ थे, जो क्रमशः बादशाह हुमायूँ तथा अकबर के प्रधान मंत्री थे। अकबर ने उनकी शिक्षा-दीक्षा का संपूर्ण भार अपने ऊपर उठा लिया था और योग्य अध्यापकों को रख संस्कृत, अरबी, फारसी आदि भाषाओं का ज्ञान उन्हें कराया था।

रहीम के ग्रंथों में 'रहीम दोहावली','बरवै नायिका भेद','मंदनाष्टक, रासपंचाध्यायी' और 'शृंगार सोरठा' प्रसिद्ध हैं। 'बरवै छंद' के वे आरंभकर्ता हैं।



अब्दुर्रहीम खानखाना

1. **माँगे घटत रहीम पद, कितो करौ बड़ काम।**
   तीन पैग बसुधा धरी, तऊ बावनै नाम॥

शब्दार्थ:

कितो-कितना ही, पैग-पाँव, वसुधा-भूमि, तऊ-तोभी, बावनै-वामन।

भावार्थ :

रहीम भी कबीरदास की तरह माँगने की निंदा करते हैं। रहीम कहते हैं कि चाहे कितना भी बड़ा काम करो, दूसरे से कुछ माँगने से पद घट जाता है। बड़ा व्यक्ति छोटा बन जाता है। भगवान विष्णु ने सारी भूमि की तीन पंगों में नापकर अद्भुत कार्य किया, तब उसका नाम वामन पड़ गया। ऐसा माँगने के कारण हुआ है। यहाँ विष्णु के वामनावतार की कथा की ओर संकेत किया गया है। भगवान विष्णु ने वामन के रूप में राजा बलि से तीन पग जमीन का दान माँगा था। बलि ने वह दान दे दिया। विष्णु ने भूमि और आकाश को दो पगों में नाप दिया और तीसरे पग के लिए जगह माँगी तो बलि ने अपना सिर प्रस्तुत किया। विष्णु ने राजा बलि को बंदी बनाकर पाताल लोक में भेज दिया और स्वर्ग का राज्य देवताओं को दे दिया। इतना बड़ा काम करने पर भी चूंकि विष्णु ने राजा बलि से दान माँगा था। अतः वे वामन कहलाने लगे। अर्थातरन्यास अलंकार का सुंदर वर्णन हुआ है।

10th Standard.indd 12 10-01-2019 12:09:42

2. **रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल।**
आपु तो कहि भीतर गयी, जूती खात कपाल॥

शब्दार्थ:

जिह्वा-जीभ, बावरी-पगली, कहिगइ-कह गयी, सरग पताल-ऊँच-नीच, भला-बुरा, आपु-स्वयं, कपाल-सिर।

भावार्थ :

रहिमन कहते हैं यह जीभ बड़ी पगली है, वह भला-बुरा जो सूझा कह देती है। वह तो कहकर भीतर चली जाती है, लेकिन उसका फल या कुफल सर को भोगना पड़ता है। दूसरे की निंदा जीभ करती है परंतु जूती सिर पर पड़ती है। भाव यह है कि मुंह से बात निकालने के पहले खूब सोच समझ कर लेना चाहिए।

3. **अन्तर दाव लगी रहै, धुवाँ न प्रगटै सोई।**
कै जिय आपन जानही, कै जिहि बीती होइ॥

शब्दार्थ:

दाव-दावग्नि, चिन्ता की ज्वाला, कै-या:, जिय-हृदय, आपन-आप, जानही-जानता है, जिहि-जिस पर।

भावार्थ :

चिन्ता की ज्वाला अंदर ही अंदर दावाग्नि की तरह जलती रहती है। उसका धुआँ (चिंता के लक्षण) बाहर प्रकट नहीं होते। उसकी वेदना तो हृदय ही जानता है। जिस पर से होकर वह गुजरी हो वही जानता है। भाव यह है कि चिंता की वेदना और तीव्रता या तो स्वयं अनुभव करने वाला जानता है या तो जिसने इसके पहले उसका अनुभव किया हो, वह जानता है। अन्य लोग उसको नहीं समझ सकते। दावाग्नि वह अग्नि है जो जंगल में गर्मियों के समय अपने आप लग जाती है और अनेक पेड़-पौधों और वन्य प्राणियों को जला डालती है। उसी प्रकार चिंता भी मनुष्य के उत्साह और उसकी खुशियों को नष्ट कर देती है। चिंता ग्रस्त मनुष्य बाहर से शांत दिखने पर भी अंदर ही अंदर घुलता रहता है।

4. **रहिमन विपदाहू भली, जो थोरे दिन होइ।**
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोइ॥

शब्दार्थ:

विपदाहू-विपत्ति भी, हित-भलाई चाहने वाला, हित-चिंतक, अनहित-अहित चिंतक शत्रु।

10th Standard.indd 13 10-01-2019 12:09:42

भावार्थ :

रहीम कहते हैं यदि थोड़े दिन हो तो विपत्ति भी भलाई करती है क्योंकि उससे यह मालूम होता कि इस दुनिया में उसका कौन हित चिंतक है और कौन अहित चिंतक है। सुख और संपत्ति के दिनों में सब लोग साथ रहते हैं लेकिन जो सच्चे मित्र भलाई चाहते हैं, वे विपत्ति में साथ रह जाते हैं। अतः थोड़े दिनों की विपत्ति भी लाभकारी होती है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. रहीम के काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

2. रहीम ने विपदा को क्यों भली माना है?

3. रहीम माँगने की वृत्ति के बारे में क्या कहते हैं?

4. रहीम जिह्वा को नियंत्रण रखने की सलाह क्यों देते हैं?

10th Standard.indd 14 10-01-2019 12:09:42

6

मैं नीर भरी दुःख की बदली!

महादेवी वर्मा

कवि परिचय:

महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में फरूखाबाद (उत्तर प्रदेश) में एक सुसंपन्न परिवार में हुआ था। महादेवी जी रहस्यवादी एवं छायावादी कवयित्री ही नहीं कुशल चित्रकार भी थी। आपकी प्रसिद्ध रचना' यामा' के लिए आपको 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार मिला है। 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्य गीत' आदि आपकी रचनाएँ हैं। लोग इनको 'आधुनिक मीरा' मानते हैं।



महादेवी वर्मा

कविता:-

इस कविता में कवयित्री महादेवी वर्मा के मन की पीड़ा उभरकर आई है। पर साथ ही उनकी परिणति सुख के रूप में अभिव्यंजित हुई है। दुःख में अंतर्निहित सुख के रूप में वह कभी निर्झरणी बनकर मचलती हैं तो कभी मलय-बयार बनकर बहती है। कभी नवजीवन का अंकुर बनकर विकसित होती हैं तो कभी सुख की सिहरन बनकर खिल उठती हैं, दुःख की बदली सुख बरसाकर, अपना इतिहास रचकर विलीन हो जाती है। कविता में रहस्यवाद की झलक स्पष्ट है।

मैं नीर भरी दुःख की बदली!

स्पन्दन में चिर निस्पन्दन बसा,
क्रन्दन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली!
मेरा पग-पग संगीत भरा,
श्वासों से स्वप्न-पराग झरा,
नभ के नव रंग बुनते दुकूल,
छाया में मलय-बयार पली!
मैं क्षितिज-भृकुटि पर घिर धूमिल,
चिन्ता का भार बनी अविरल,

10th Standard.indd 15 10-01-2019 12:09:43

रज-कण पर जल-कण हो बरसी,

नवजीवन-अंकुर बन निकली।

पथ को न मलिन करना आना,

पद-चिह्न न दे जाता जाना,

सुधि मेरे आगम की! जग में!

सुख की सिहरन हो अन्त खिली!

विस्तृत नभ का कोई कोना,

मेरा न कभी अपना होना,

परिचय इतना इतिहास यही,

उमड़ी कल थी मिट आज चली।

कठिन शब्दार्थ:-

बदली-मेघ, स्पन्दन-गतिशीलता, कंपन, निस्पंद-स्पंदनहीन, पराग-मकरंद, नभ-आकाश, नव-नवीन, दुकूल-वस्त्र, अविरल-निरंतर, आगम-आना।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. महादेवी वर्मा का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
2. महादेवी वर्मा की प्रमुख रचनाओं का नाम उल्लेख कीजिए।
3. मैं नीर भरी दुःख की बदली' का भाव समझाइये।
4. महादेवी वर्मा ने अपने मन की पीड़ा को किस प्रकार प्रस्तुत किया है?
5. दुःख को सुख में कवयित्री ने किस प्रकार परिणति की है?
6. महादेवी वर्मा ने अपना परिचय किस प्रकार दिया।

I) सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1.मेरा पग-पग संगीत भरा,.....

.....छाया में मलय-बयार पली!

2.विस्तृत नभ का.....

.....थी मिट आज चली।

II)'मैं नीर भरी दुःख की बदली' कविता का सारांश लिखिए।

10th Standard.indd 16 10-01-2019 12:09:43

7

पांचजन्य

हरिवंशराय 'बच्चन'

कवि परिचय:

श्री'बच्चन' जी का जन्म इलाहाबाद में हुआ। हिन्दी के लोकप्रिय गीतकारों में आप अग्रगण्य माने जाते हैं। बच्चन जी महान साहित्यकार थे। इनकी कला निष्कपट और निश्छल है। मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, एकांत संगीत, निशा-निमंत्रण आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं।



हरिवंशराय 'बच्चन'

कविता:-

पांचजन्य कवि की राष्ट्र-प्रेम संबंधी रचना है जिस तरह श्रीकृष्ण ने महाभारत के भीषण युद्ध में अपना पांचजन्य नामक शंख बजाकर धर्म की जय की घोषणा की, उसी तरह भारत के स्वाधीनता-संग्राम में भारत को विजय देने के लिए कवि पांचजन्य का आह्वान करते हैं। भारत के जन-जन में जिन गुणों की अपेक्षा है, उन पर कवि सुंदर शब्दों में प्रकाश डालते हैं।

पांचजन्य, कर पुनः गान।
यह मृतकों का सा देश,
बिसराकर अपना वीरवेश,
सब शौर्य-शक्ति हो गई नष्ट,
बस कायरता रह गयी शेष,
बज कर अतीत से एक बार
दे सबके अंदर फूँक प्राण,
रे पांचजन्य, कर पुनः गान।

जर्जर जीवन का हटे भार,
तन-मन से हो यौवन प्रसार
जन की डाली में पात पत्र
गिर पड़ेवेग, आये बहार,

10th Standard.indd 17 10-01-2019 12:09:43

सुन पड़े चतुर्दिक से नूतन,
कोकिल कवियों की नयी तान,
रे पांचजन्य, कर पुनः गान।

नूतन युग का हो नया राग,
ले अनिल पले नूतन पराग
उज्जवल अतीत से हो सगर्व
पर जगह हृदय में नयी आग,
प्राचीन कीर्ति से हो न तुष्ट
हम रचें नित्य नूतन महान,
रे पांचजन्य, कर पुनः गान।

हम चलें विश्व को देने को
मानव स्वतंत्रता का संदेश
कर्तव्य मार्ग पर दृढ़ रहना,
हो एक ध्येय का एक ध्यान
रे पांचजन्य, कर पुनः गान।
हो पूर्ण विश्व आलस्यहीन
हो सब सत्कृत्यों में प्रवीण
हम जन्मसिद्ध अधिकारों को
लें एक दूसरों से न छीन,
पर पापी-शत्रुओं के ऊपर
हो खुली नित्य नंगी कृपाण,
रे पांचजन्य, कर पुनः गान।

कठिन शब्दार्थ:

-पांचजन्य-श्रीकृष्ण का शंख, बिसरकर-बलकर, प्रसार-फैलाव, विस्तार, अनिल-पवन, दृढ़-स्थिर, मजबूत, नूतन-नवीन, आग-वेग, शक्ति, तृष्ट-तृप्त, ध्येय-लक्ष्य, आलस्य-सुस्ती, हीन-रहित।

10th Standard.indd 18 10-01-2019 12:09:43

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. पांचजन्य कविता की रचना किसने की?
2. कवि पांचजन्य का पुन: गान करने के लिए क्यों कहते हैं?
3. कवि तन-मन से किसका प्रचार करने के लिए कहते हैं?
4. कवियों की नयी तान क्या है?
5. कवि नित्य क्या करना चाहते हैं?
6. कवि नूतन युग में क्या-क्या चाहते हैं?
7. कवि देश की स्थिति के बारे में क्या कहते हैं?
8. कवि पांचजन्य शंख नाद के द्वारा देश के हालत को कैसे सुधारना चाहते हैं?
9. पांचजन्य कविता में कवि की कामना क्या है?
10. कवि इस किवता के द्वारा क्या संदेश देना चाहते हैं?
11. पांचजन्य कविता का सारांश लिखिए?

10th Standard.indd 19 10-01-2019 12:09:43

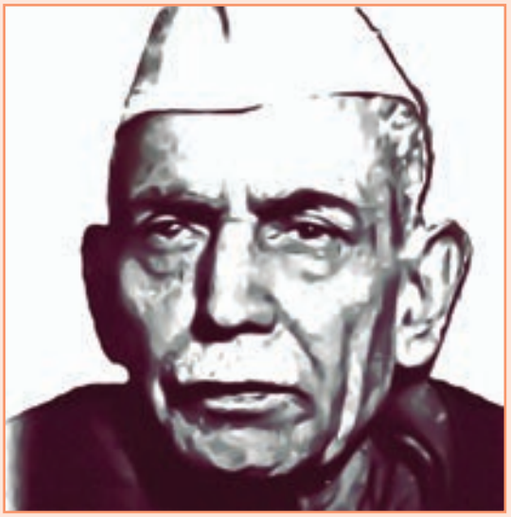
8

मोम-दीप मेरा

माखनलाल चतुर्वेदी

कवि परिचय:

माखनलाल चतुर्वेदी जी का जन्म होशंगाबाद जिले (मध्यप्रदेश) के बावई नामक गाँव में हुआ था। चतुर्वेदी कवि ही नहीं सफल पत्रकार, गद्यकार, और नाटककार भी थे। आपके काव्य-संग्रहों में माता, युग-चरण, समर्पण, मरण-ज्वर आदि बहुप्रशंसित हैं। कवि की सभी रचनाएँ खड़ी बोली हिन्दी में हैं। आपका काव्य-साहित्य, देश-भक्ति, मानव-प्रेम और आध्यात्मिकता का त्रिवेणी संगम है।



माखनलाल चतुर्वेदी

कविता:-

सूर्य और चन्द्र अपने आलोक से पृथ्वी को आलौकिक करते हैं, पर इन दोनों के प्रभाव में तमाच्छादित भूलोक में, नक्षत्र-मंडल की प्रभा यहाँ तक नहीं पहुँच पाती, उस समय केवल मोम-दीप प्रत्येक बिन्दु के रूप में अपने रक्त की धारा से अपने चारों ओर के परिमित स्थान को प्रकाशित करता है, वह सूर्य-चन्द्र की तरह उदय-अस्त होने वाला नहीं, सुख-दुःख में सदैव साथ रहता है। इच्छा होने पर जाग उठता है और इच्छा होने पर सो जाता है। वह साधु है, गरीब है, अल्प वस्तु है, फिर भी महान् कहे जने वाले अन्य सबसे अधिक उदार है।

सूझ का साथी
मोम-दीप मेरा!
कितना बेबस है यह
जीवन का रस है यह
छन-छन, पल-पल, बल-बल
छू रहा सबेरा,
अपना अस्तित्व भूल
सूरज का टेरा.....
मोम-दीप मेरा!

10th Standard.indd 20 10-01-2019 12:09:43

कितना बेबस दीखा
इसने मिटना सीखा
रक्त-रक्त, बिन्दु-बिन्दु
झर रहा प्रकाश-सिन्धु
कोटि-कोटि बना व्याप्त
छोटा-सा घेरा।
मोम-दीप मेरा!

जी से लग, जब बैठ
तम-बल पर जमा बैठ
जब चाहूँ जाग उठे
जब चाहूँ सो जावे
पीड़ा में साथ रहे
लीला में खो जावे।
मोम-दीप मेरा!

नभ की तम गोद भरे-
नखत कोटि;पर न झरे
पढ़ न सका, उनके बल
जीवन के अक्षर ये,
आ न सके उतर-उतर
भूल न मेरे घर ये!
इनपर गर्वित न हुआ
प्रणय गर्व मेरा,
मेरे बस साथ मधुर
मोम-दीप मेरा!

जब चाहूँ मिल जावे
जब चाहूँ मिट जावे
तम से जब तुमुल युद्ध
ठने, दौड़ जुट जावे

10th Standard.indd 21 10-01-2019 12:09:43

सूझों के रथ-पथ का
ज्वलित लघु चितेरा।
मोम-दीप मेरा!

यह गरीब, यह लघु-लघु
प्राणों पर यह उदार
बिन्दु-बिन्दु
आग-आग
प्राण-प्राण
यज्ञ ज्वार
पीढ़ियाँ प्रकाश-पथिक
जग-रथ-गति-चेरा।
मोम-दीप मेरा!

कठिन शब्दार्थ:

-बेबस-विवश, बल-बल-जलता हुआ, टेरना-बुलाना, नखत-नक्षत्र, तुमुल-भीषण।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. माखनलाल चतुर्वेदी का परिचय दीजिए।
2. माखनलाल चतुर्वेदी की प्रमुख रचनाओं का नाम लिखिए।
3. माखनलाल चतुर्वेदी अपने आप को क्या मानते है?
4. मोमदीप की विशेषता बताइये।
5. मोम दीप के बारे में कवि की धारणा क्या है?
6. कवि मोमदीप को सूझ का साथी क्यों मानते हैं?

I) सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

1.कितना बेबस है.....

.....सूरज का टेरा।

2.नभ की तम.....

.....मेरे बस साथ मधुर।

II)'मोम दीप मेरा' कविता का सारांश लिखिए।

10th Standard.indd 22 10-01-2019 12:09:43

9 कलम और तलवार

रामधारी सिंह 'दिनकर'

कवि परिचय:

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार प्रांत मुंगेर जिले में स्थित सिमरियाघाट नामक स्थान में हुआ था। इन्होंने राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी के जयद्रथ वध, भारती भारत आदि सेप्रेरित होकर अनेक रचनाएँ की। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी के बाद राष्ट्रकवि के रूप में दिनकर का नाम लिया जाता है। दिनकर क्रांति और विद्रोही भावों के ओजस्वी कवि थे। रश्मिरथी, परशुराम की प्रतीक्षा और कुरुक्षेत्र आपकी श्रेष्ठ रचनाएँ हैं। उनकी भाषा शैली ओज की प्रधानता है।



रामधारी सिंह 'दिनकर'

कविता:-

कविवर दिनकर जी इस कविता में कलम और तलवार के माध्यम से मानसिक बल और शारीरिक शक्ति का विवेचन करते हैं। मानव के लिए दोनों ही अनिवार्य है। अज्ञान को हटाने के लिए कलम जरूरी है तो अन्याय को मिटाने के लिए तलवार भी आवश्यक है। कवि के अनुसार वह समाज जो जागृत, सावधान और निर्भय है शस्त्र के बिना भी विजयी बना सकता है। परंतु जब तक ऐसी स्थिति न हो, कलम और तलवार दोनों ही महत्वपूर्ण है।

दो में से क्या तुम्हें चाहिए कलम या कि तलवार?
मन में ऊँचे भाव की तन में शक्ति अजय, अपार?
अंध कक्ष में बैठ रचोगे ऊँचे, मुझे मीठे गान?
या तलवार पकड़ जीतोगे बाहर जा मैदान?

जला ज्ञान का दीप सिर्फ फैलाओगे उजियाली?
अथवा उठा कृपाण करोगे घर की भी रखवाली?
कलम देश की बड़ी शक्ति है भाव जगाने वाली,
दिल ही नहीं दिमाग में भी आग लगाने वाली,

10th Standard.indd 23 10-01-2019 12:09:44

पैदा करती कलम विचारों के जलते अंगारे,

और प्रज्वलित-प्राण देश क्या कभी मरेगा मारे?

लहू गर्म रखने को रखो मन में ज्वलितविचार,

हिंस्र जीव से बचने को चाहिए किंतु तलवार।

एक भेद है और, जहाँ निर्भय होते नर-नारी,

कलम उगलती आग, जहाँ अक्षर बनते चिंगारी।

जहाँ मनुष्य के भीतर हरदम जलते हैं शोले,

बाँहों में बिजली होती, होते दिमाग में गोले।

जहाँ लोग पालते लहू में हलाहल की धार,

क्या चिंता यदि वहाँ हाथ पर हुई नहीं तलवार?

कठिन शब्दार्थ :-

तन-शरीर, भेद-फर्क, कलम-लेखनी,अंध-अंधकारयुक्त, बंद, प्रज्वलित-प्राण -दहकते हुए प्राण-शोले आग की लपटें, हलाहल-विष

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. श्रीरामधारी सिंह दिनकर का जन्म कब और कहाँ हुआ?
2. श्रीरामधारी सिंह दिनकर किन-किन पुस्तकों से प्रेरित हुए?
3. श्रीरामधारी सिंह की प्रमुख रचनाओं का नाम लिखिए।
4. 'कलम और तलवार' की विशेषता कवि ने किस प्रकार जिक्र किया है?
5. 'कलम और तलवार' के बारे में कवि का विचार क्या है?
6. कलम और तलवार का अंतर स्पष्ट कीजिए।

I) सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

दो में से.....

.....बाहर जा मैदान?

2.एक भेद है.....

.....दिमाग में गोले.

II)'कलम और तलवार'कविताकासारांशलिखिए।

10th Standard.indd 24 10-01-2019 12:09:44

10

व्यक्तित्व

माखनलाल चतुर्वेदी

माखनलाल चतुर्वेदी जी का जन्म होशंगाबाद जिले (मध्यप्रदेश) के बावई नामक गाँव में हुआ था। चतुर्वेदी कवि ही नहीं सफल पत्रकार, गद्यकार, और नाटककार भी थे। आपके काव्य-संग्रहों में माता, युग-चरण, समर्पण, मरण-ज्वर आदि बहुप्रशंसित हैं। कवि की सभी रचनाएँ खड़ी बोली हिन्दी में हैं। आपका काव्य-साहित्य, देश-भक्ति, मानव-प्रेम और आध्यात्मिकता का त्रिवेणी संगम है।



माखनलाल चतुर्वेदी

शासन की विधि पूरी करने एक बात है, शासन की कला का ज्ञान होना और बात। कला के ज्ञाता में व्यक्ति (पर्सनैलिटी) होती है, विधि को पूरा करनेवाला इसकी ओर बहुत कम लक्ष्य देता है। कला कुछ व्यक्तियों का ही नहीं, कुछ जातियों तक का स्वभाव हो जाता है। प्रत्येक व्यक्ति में जीवन के कम-से-कम दो हिस्से रहते हैं – एक तो उसका कार्य, जिसकी ज़िम्मेदारी वह कुली की तरह निबाहने के लिए बाध्य है और दूसरे उसका अपना व्यक्तित्व, जो उसके एक या अनेक कार्यों में चमक चढ़ाता है। दूसरे रूप में मनुष्य दो स्वरूपों में विश्व के सामने खड़ा है, एक तो उसका व्यक्तित्व, उसके कार्यों और उसकी जिम्मेदारियों को वह अपना कहकर विश्व के सम्मुख अपने को खुला-उघाड़ा, बे-पर्द छोड़ने को बाध्य होता है और दूसरे वह व्यक्ति खुद जो केले के भीतरी स्तंभ की तरह व्यक्तित्व के एक या अनेक पर्दों की तह में उज्जवल या निरूज्ज्वल बनकर छिपा रहता है। व्यक्तित्व कहते हैं उस वस्तु को जो मनुष्य के बाहरी और भीतरी जीवन में संबंध स्थापित रखती और उन दोनों विभाजित जीवन के हिस्सों को एक-दूसरे का जीवन-रस पान कराने का अवसर देती है। व्यक्तित्व बाहर अपने आप प्रकट होता है और भीतर संपूर्ण जीवन को संगठित किया करता है व्यक्तित्व के योग दर्शन उस व्यक्ति के पास हो सकेंगे जो अपने अंतरतम से बहुत दूरी पर खड़ा नहीं होता, न जो अपने अंतरतम की उपेक्षा करता है।न जो अपने अंतरतम का अपनी क्रूरता पूरी करने के लिए सौदा करता है व्यक्तित्व बहुत शीघ्र पकड़ा जा सकता है अकड़ और आडंबर का नाम व्यक्तित्व नहीं है व्यक्तित्व की आंखें हमें न्योता देकर बुलाती हैं उसमें हमें बेबस प्यार प्रेम और विश्वास भी होने लगता है जिसमें व्यक्तित्व का प्रभाव होगा उसकी ओर हमारी तवज्जो ही नहीं होगी, और अपनी ओर हमारा ध्यान खींचने के लिए प्रचार या षड्यंत्र

10th Standard.indd 25 10-01-2019 12:09:44

किसी ने किया हो तो हमारा विश्वास उसमें ना होगा व्यक्तित्व को और खेल कम आता है वह प्राणों का खेल-खेलकर ही जिंदा रहता है व्यक्तित्व के अभाव में व्यक्ति अपने आप को जगत का महा प्रमुख बनाए रखने के लिए कितने ही उद्योग करता है उसमें शील के नाम पर तकल्लुफ होता है उसको चर्चा में और अपने से छोटा बताने का प्रत्यक्ष प्रचार होता है और लोगों का जी दुखाने के पीछे ताने होते हैं। वह दलालों के दलाल की हैसियत से विश्व के बाजार में बड़ा आदमी बन कर रहना चाहता है परंतु भक्ति के अभाव में जिस तरह भगवान को खींचने में समर्थ नहीं हो सकते उसी तरह बाहरी समय साधक आभूषणों और उपकरणों के बल पर व्यक्तित्व का नारा ही बुलंद किया जा सकता है।

व्यक्तित्व के अभाव में हम हृदय के रूखेपन और कोमल संबंधों में उद्दण्डता के रूप में परिचित होते हैं, ऐसे व्यक्तियों के भावों में अतिरेकमय चंचलता होती है,ऐसे व्यक्ति के मन का यद्यपि पता नहीं लग पाता, परंतु यह जानकर कि हृदय की जागीर उसके पास थोड़ी है, हम प्रारंभ से ही उसके मनोभावों से बचने और उसके तकल्लुफ, व्यवहारिकता और प्रचार के सकरे जाल से मुक्त रहने की सावधानी लेते हैं। ये सब कठिनाइयाँ, ये स्वभाव की खराबियाँ हममें तभी जन्म लेती या फूलती-फलती हैं जब हम बाहरी जीवन को भी भीतरी जीवन के प्रति उत्तरदायी न मानकर अपनी दुनिया बनाने बैठते हैं। परिणाम यह होता है विश्व में कोई भी अपना हमारा नहीं होता। और हम जिस-जिस क्षेत्र से गुजरे होते हैं यद्यपि तकल्लुफ और व्यवहारिकता के नाम से उन सब स्थानों की निंदा न करने और व्यक्तित्व तोड़ने का तौल संभालते रहते हैं, किंतु हम पर कोई विश्वास नहीं करता और प्रायः व्यक्ति टूट जाते हैं, क्योंकि एक तो मीठे शब्दों और अपनी महानता साबित करने के लिए सिवा कभी कुछ हमारे पास नहीं होता, दूसरे से कोमल से कोमल भावों का सौदा करने लगते हैं और तीसरे हम आत्म-निवेदन (कन्फैशन) पर विश्वास न करके अपने हृदय का समस्त मल छिपाए रहते हैं, जो हमें भीतर ही भीतर विश्व की सेवा और उपयोगिता से रहित करता जाता है। हमारे जीवन की कोमलता, सेवाऔर दोषों सहित खुलेपन का अभाव ही हमारे व्यक्तित्व का अभाव ही है। व्यक्ति वह नहीं जिसका लोगों पर आतंक छाए, व्यक्तित्व वह है जिसकी तस्वीर जमाना अपने आप में खोदता चला जाए।

इसी व्यक्तित्व की जरूरत हमें जीवन के शासन आदि अनेक क्षेत्रों में होती है। उस समय व्यक्तित्व की रक्षा के लिए हमें अपनी लहरों, अपने मनोवेगों, अपनी तौल संभालने के नाम पर तौल बिगाड़ने वाली भीतरी आदतों पर पहरा देने की जरूरत होती है, इसलिए जिससे भीतरी और बाहरी विश्व के बीच हम बे-मेल न हो बैठें। ये दोष भी हृदय की स्वच्छता में झरने की तरह अपने आप बहने वाले शब्द व्यक्तित्व को बर्बाद न कर सकेंगे। हाँ इसमें जीवन के झरने की गति को हम कुछ दिनों गदला और सड़ा हुआ अवश्य कर देंगे। और समय के साथ आने वाली नई धराएँ इस गंदगी को अवश्य धो बहाएंगी। यदि हम स्वयं उस गंदगी को अधिक दिनों रोके रहने का यत्न करें, तो भी खुले हृदय में हम उसी तरह नुकसान उठाने के लिए बे-काबू हैं। हम सन्निकट स्वार्थ की पूर्ति के लिए ही हृदय का दिवाला काढ़ते हैं और इस प्रयत्न में हम अपनी और अपने सन्निकट स्वार्थ की कब्र बनाते हैं।

10th Standard.indd 26 10-01-2019 12:09:44

शासन में हम 'जानकार मन' का मूल्य कूतकर, उसको बलवान मानकर, उसी को व्यक्तित्व मानकर गर्व करने लगते हैं। परंतु विश्व में व्यक्तित्व ही जानकारों के कुंभीपाक बने हुए हैं। शासन में व्यक्तित्व, शब्द व्यक्तित्व ही सफल होता है। श्रम, सेवा,स्नेह और आकर्षण विश्वजीतने की ये गुण खुले हृदय के व्यक्तित्व में यह सब होते हैं, सूचनाओं की संग्रहित पिटारी में नहीं। व्यक्तित्व है तो यह सब संग्रह खजाना है, व्यक्तित्व के प्रभाव में यह सारा मिट्टी पत्थरों का ढेर है। सूचनाएं पैसे से खरीदी जा सकती हैं किंतु हृदय यानी व्यक्तित्व पैसे से नहीं खरीदा जा सकता। हाँ व्यक्तित्व भी व्यक्तित्वके हृदयों के संघर्षण से बढ़ता है। अच्छी आदतों से व्यक्ति बनता है ये ठीक है, किंतु उन्हीं अच्छी आदतों से बाहरी और भीतरी जीवन के मेल-मिलाए रहें, यही मेल मनुष्य के जीवन में आकर्षण, प्रकाश और विश्वास पैदा करता है।हृदय की सरसता अपने संचित ज्ञान और श्रम को लेकर जब विश्व बनाने बैठती है, तब वह व्यक्तित्व का निर्माण करती जाती है और व्यक्तित्व पर मरकर अमर हो जानेवाली दुनिया का भी।

शब्दार्थ :–

बाध्य- मजबूर, विवश; उघाड़ा-खोला हुआ; अन्तरतम-अन्त:करण ;सौदा करना-क्रय-विक्रय करना; न्योता-निमंत्रण ; बे-इख्तियार-अधिकार रहित ; तवज्जोह-ध्यान, ख्याल ; षड्यंत्र-कुचक्र, साज़िश ; तकल्लुफ़-दिखावटी नम्रता; दलाल-मध्यस्थ; षोडशोपचार-पूजा के सोलह पूर्ण अंग; उपकरण-समान, सामग्री; रूखापन-नीरसता; अतिरेक-अतिशय, ज्यादती; जागीर-राज्य की ओर से प्राप्त भूमि ; सन्निकट-समीप ; कूतना-अनुमान लगाना

I) पाँच वाक्यों में उत्तर दीजिए।

1. माखनलाल चतुर्वेदी व्यक्तित्व किस वस्तु को कहते हैं?
2. व्यक्तित्व के अभाव में व्यक्ति का क्या हाल होता है?
3. व्यक्तित्व की ज़रूरत जीवन के किन-किन क्षेत्रों में होती है?
4. अच्छी आदतों से बाहरी और भीतरी जीवन का मेल मनुष्य के जीवन में कैसा असर डालता है?

II) टिप्पणी लिखिए

व्यक्तित्व की रक्षा

III) व्यक्तित्व पाठ का सारांश लिखिए।

IV) सही या गलत चुनकर लिखिए

1. माखनलाल चतुर्वेदी जी की सभी रचनाएँ खड़ी बोली हिन्दी में हैं।
2. व्यक्तित्व बाहर अपने आप प्रकट होता है और भीतर संपूर्ण जीवन को संगठित किया करता है
3. अकड़ और आडंबर का नाम व्यक्तित्व नहीं है

10th Standard.indd 27 10-01-2019 12:09:44

4. आभूषणों और उपकरणों के बल पर व्यक्तित्व का नारा ही बुलंद किया जा सकता है।

5. अच्छी आदतों से व्यक्ति बनता है

V) खाली जगह भरिए

1 व्यक्तित्व भीतर संपूर्ण जीवन को _____ किया करता है।

2 _____ वह है जिसकी तस्वीर जमाना अपने आप में खोदता चला जाए

3 विष्व में व्यक्तित्व ही जानकारों के _____ बने हुए है॥

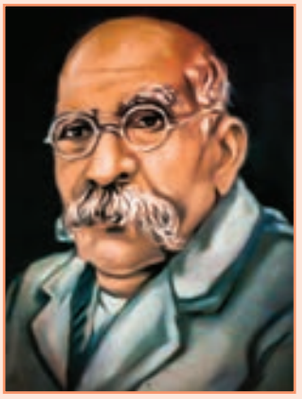
10th Standard.indd 28 10-01-2019 12:09:44

11

लोभ

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी भी उन्हीं दुर्लभ हस्तियों में से थे जिन्होंने आज की हिंदी के लिए रास्ता बनाया. किसी बड़े और घने दरख़्त की तरह वे एक लंबे समय तक साहित्यिक जगत के सिर पर साया बनकर खड़े रहे. उनकी इस छाया में हिंदी साहित्य के कई नाम फले-फूले. यह उनका अतुलनीय योगदान ही था जिसके चलते आधुनिक हिंदी साहित्य का दूसरा युग 'द्विवेदी युग' (1893–1918) के नाम से जाना जाता है.



आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

लोभ बहुत बुरा है। वह मनुष्य का जीवन दुःखमय कर देता है क्योंकि अधिक धनी होने से कोई सुख नहीं होता है। धन देने से सुख मोल नहीं मिलता। इसलिए जो मनुष्य सोने और चाँदी के ढेर को ही सब कुछ समझता है वह मूर्ख है। मूर्ख नहीं तो वह वृथा अहंकारी अवश्य है, जो बहुत धनवान है, वह यदि बुद्धिमान और बहुत योग्य भी होता तो हम धन ही को सब-कुछ समझते, परंतु ऐसा नहीं है। धनी मनुष्य सबसे अधिक बुद्धिमान नहीं होते। इसलिए धन को विशेष आदर की दृष्टि से देखना भूल है क्योंकि उससे सच्चा सुख नहीं मिलता। इस देश के पहुँचे हुए विद्वानों ने धन को तुच्छ माना है। यह बात आजकल के समय के अनुकूल नहीं है। यूरोप और अमेरिका के ज्ञानी धन ही को बल, बल नहीं सर्वस्व समझते हैं परंतु जब धन के कारण अनेक अनर्थ होते हैं, उस धन को प्रधानता कैसे दी जा सकती है? और देशों में उसे भले ही प्रधानता दी जाए परंतु भारतवर्ष में उसे प्रधानता मिलना कठिन है। जिस देश के निवासी संसार ही को माया में एक दुख का मूल कारण समझते हैं वे धन को कदापि सिक्का है तो नहीं मान सकते।

बहुत धनवान होना व्यर्थ है उससे कोई लाभ नहीं, क्योंकि साधारण नृत्य पर खाने-पीने और पहनने आने के लिए जो धन काम आता है वही सफल है।उससे अधिक धन होने से कोई काम नहीं निकलता। स्वभाव अथवा प्रकृति के अनुसार ही खाने-पीने की आवश्यकताओं को दूर करने के लिए धन की चाह होती है। दूसरों को दिखलाने अथवा उसे स्वयं देखने के लिए धन इकट्ठा करने से कोई लाभ नहीं। कोई जगत सेठ ही क्यों न हो यदि वह सितार या वीणा बजाना सीखना चाहेगा तो उसे उस विद्या को उसी तरह सीखना पड़ेगा जिस तरह एक निर्धन महाकंगाल को सीखना पड़ता है। उस गुण को प्राप्त करने में उसकी धनाढ्यता जरा भी काम न देगी। वह उसे मोल नहीं ले सकता, जब उसे धन के बल से वीणा बजाने के समान एक साधारण गुण भी नहीं मिल सकता। तब शांति शुद्धता और अधीरता आदि पवित्र गुण क्या कभी उसे मिल सकते हैं? कभी नहीं।

10th Standard.indd 29 10-01-2019 12:09:44

जिसके पास आवश्यकता से थोड़ा भी अधिक धन हो जाता है वह अपने आप को अर्थात यों कहिए अपनी आत्मा को, अपने वश में नहीं रख सकता, क्योंकि संतोष न होने के कारण वह उस धन को प्रतिदिन बढ़ाने का यत्न करता है। अतएव वह धन किस काम का जो लोभ को बढ़ाता जाए? भूख लगने पर भोजन कर लेने से तृप्ति हो जाती है। प्यास लगने पर पानी पी लेने से तृप्ति हो जाती है परंतु धन से तृप्ति नहीं होती। उसे पाकर और भी लोभ बढ़ता है, इसलिए धनी होना एक प्रकार का रोग है। रात को जाड़े से बचने के लिए एक लिहाफ काफी होता है। यदि किसी के ऊपर आठ,दस लिहाफ डाल दिए जाएं, तो उसे बोझ मालूम होने लगेगा और उल्टा कष्ट होगा। इसीलिए धनाढ्यता भी एक प्रकार की बीमारी है जिससे भरसक रोग हो जाता है। वह खाता ही चला जाता है उसे कभी तृप्ति नहीं होती। जिसे धनाढ्यता का रोग हो जाता है वह भी कभी प्राप्त नहीं होता। तृप्ति का न होना अर्थात आवश्यकताओं का बढ़ जाना ही दुख का कारण है। और दुख है, वहाँ सुख रह ही नहीं सकता। उन दोनों में परस्पर बैर है। अतएव उसी को धनी समझना चाहिए जिसकी आवश्यकताएं कम है, क्योंकि वह थोड़े में तृप्त हो जाता है तृप्ति ही सुख है और लोभ ही दुख है।

संतोष निरोगता का लक्षण है, लोभ बीमारी का लक्षण है। जो मनुष्य खाते-खाते संतुष्ट नहीं होता उसे अधिक खिलाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, उसके लिए वैध की आवश्यकता होती है। ऐसे मनुष्य को अधिक खिलाने की अपेक्षा उनके खाए हुए पदार्थ को वमन कराके बाहर निकालना पड़ता है क्योंकि अनावश्यक अथवा आवश्यकता से अधिक पदार्थ पेट में रहने से रोग हुए बिना नहीं रहता। इसी तरह जिनको संतोष नहीं अर्थात जो लोग प्रतिदिन अधिक से अधिक धन इकट्ठा करने के यत्न में लगे रहते हैं उनको अधिक देने की अपेक्षा उनसे कुछ छीन लेना अच्छा है, क्योंकि जब कोई वस्तु कम हो जाती है तब मनुष्य बची हुई से संतोष करता है। अतएव संतोष होने से उसे सुख मिलता है। संतोष न होने से कभी सुख नहीं मिलता। किसी न किसी वस्तु की सदैव कमी बनी ही रहती है। लोभी मनुष्य को चाहे त्रिलोक की संपत्ति मिल जाए तो भी उसे और संपत्ति पाने की इच्छा बनी ही रहेगी। लोभ एक तरह की बीमारी है परंतु है बड़ी सख्त बीमारी। सख्त इसीलिए कि वह अपने को बढ़ाने का यत्न करती है घटाने का नहीं। जो मनुष्य भूखा होता है वह भोजन करता है, भोजन छोड़ नहीं देगा। परंतु लोभी का प्रकार उल्टा है उसे द्रव्य की भूख रहती है परंतु जब वह उसे मिल जाता है तब उसे वह काम में नहीं लाता, रख छोड़ता है और अधिक धन पाने के लिए दौड़-धूप करने लगता है।

लोभी मनुष्य बहुधा इसीलिए धन इकट्ठा करता है जिसमें उसे किसी समय उसकी कमी ना पड़े परंतु उसे कमी हमेशा ही बनी रहती है पहले उसकी कमी कल्पित होती है परंतु पीछे से वह यथार्थ असली हो जाती है क्योंकि घर में धन होने पर भी वह काम में नहीं ला सकता है लोभ से असंतोष की वृद्धि होती है और संतोष का सुख खाक में मिल जाता है लोभ से भूख बढ़ती है और तृप्ति घटती है लोभो से मूल धन व्यस्त भरता है और उसका उपयोग कम होता है लोभी का धन देखने के लिए व्यथा रक्षा करने के लिए और दूसरों को छोड़ जाने के लिए है ऐसे धन से क्या लाभ ऐसे धन को

10th Standard.indd 30 10-01-2019 12:09:44

इकट्ठा करने में अनेक कष्ट उठाने की अपेक्षा संसार भर में कितना धन है उसे अपना ही समझना अच्छा है लोभी का धन उसके काम तो आता नहीं इसलिए उसे दूसरे का धन मन ही मन अपना समझने में कोई हानि नहीं उससे उल्टा लाभ है क्योंकि उसे प्राप्त करने के लिए परिश्रम नहीं करना पड़ता लोगों को हंसाने के संतरी समझना चाहिए लोभी मनुष्य जब तक जीते हैं तब तक संतरी सामान अपने धन की रखवाली करते हैं और मरने पर उसे दूसरों के लिए छोड़ जाते हैं।

कोई लोभी अपने पीछे अपने लड़कों के काम आने के लिए धन इकट्ठा करते हैं उनको यह समझ नहीं कि जिस धन के बिना उनका काम चल गया उसके बिना उनके लड़कों का भी चल जाएगा इस प्रकार बाप-दादे का धन पाकर अनेक लोग बहुधा उसे बुरे कामों में लगा कर खुद भी बदनाम होते हैं और अपने बाप-दादे को भी बदनाम करते हैं।

धनवान यदि लोभी है तो उसे रात को वैसे ही नींद नहीं आ सकती, जैसी निर्धन अथवा नीलू भी को आती है धनवान को निर्धन की अपेक्षा में भी अधिक रहता है यदि मनुष्य लोभी है तो थोड़ी संपत्ति वाले से हम अधिक संपत्ति वाले को ही दरिद्री कहेंगे। क्योंकि जिसे 5 रुपयेकीआवश्यकताहैवहउतनादरिद्रीनहींजितना 500 रुपये की आवश्यकता वाला है।कहाँ पाँच और कहाँ 500 सघनताऔर निर्धनता मन की बात है जिनका मन उधार है बे अनुदान और लोभ भी मनुष्यों की अपेक्षा अधिक धनवान है क्योंकि उदारता के कारण उनका धन किसी के काम तो आता है चाहे वह बहुत ही तोड़ा क्यों न हो बहुत धन होकर भी यदि मनुष्य लोभी हुआ और उसका धन किसी के काम ना आया तो उसका होना ना होना दोनों बराबर है शेख सादी ने बहुत ठीक कहा है-

“तवङ्गरी बदिलस्त न बमाल” अर्थात अमीरी दिल से होती है, माल से नहीं।

शब्दार्थ-

मायामय-मायायुक्त, निर्धन-धनहीन, सन्तरी-पहरेदार, निर्लोभी-लोभ रहित, भरमक-एक रोग, निर्धनता-गरीबी।

I) ‘लोभ’ पर आधारित प्रश्न

1. लोभ किसे कहते हैं लोभ का परिणाम क्या होता है?
2. आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने लोभ मनोविकार के बारे में क्या कहा?
3. लोभ से लाभ नहीं, लेखक के शब्दों में समझाइए।
4. लोभ-प्रलोभ है समाधान कीजिए।

10th Standard.indd 31 10-01-2019 12:09:44

II) सही या गलत चुनकर लिखिए

1 संतोष निरोगता का लक्षण है।

2 लोभ बीमारी का लक्षण है

3 लोभी मनुष्य बहुधा धन इकट्ठा करता है।।

4 लोभी मनुष्य जब तक जीते हैं तब तक संतरी सामान अपने धन की रखवाली करते है

III) खाली जगह भरिए

1 --------- भी एक प्रकार की बीमारी है जिससे भरसक रोग हो जाता है।

2 किसी न किसी वस्तु की सदैव ------- बनी ही रहती है।

3 -------- दिल से होती है, माल से नहीं ।

10th Standard.indd 32 10-01-2019 12:09:44

12

आत्मनिर्भरता

संकलित

आत्मनिर्भरता (अपने भरोसे पर रहना) ऐसा श्रेष्ठ गुण है कि जिसके न होने से पुरुष में पौरुषत्व का अभाव कहना अनुचित नहीं मालूम होता, जिनको अपने भरोसे का बल है, वे जहाँ होंगे जल में तुम्बी के समान संत के ऊपर रहेंगे, ऐसे ही के चरित्र पर लक्ष्य कर महाकवि भारती ने कहा है कि तेज और प्रताप से संसार भर को अपने नीचे करते हुए ऊँची उमंग वाले दूसरों के द्वारा अपना वैभव नहीं बढ़ाना चाहते। शारीरिक बल, चतुरंगिनी सेना का बल, प्रभुता का बल, मंत्र-तंत्र का बल इत्यादि जितने बल हैं निज बहु-बल के आगे सब क्षीण बल हैं। आत्मनिर्भरता की बुनियादी यह बाहुबल सब तरह के बलों को सहारा देने वाला और उभारने वाला है।

यूरोप के देशों की जो इतनी उन्नति है तथा अमेरिका, जापान आदि जो इस समय मनुष्य जाति के सरताज हो रहे हैं, इसका यही कारण है कि उन देशों में लोग अपने भरोसे पर रहना या कोई काम करना अच्छी तरह जानते हैं। हिन्दुस्तान का जो सत्यानाश है इसका यही कारण है कि यहाँ के लोग अपने भरोसे पर रहना ही भूल गये हैं। इसी से सेवकाई करना यहाँ के लोगों से जैसे खूबसूरती के साथ बन पड़ता है। वैसा स्वामित्व नहीं, अपने भरोसे पर रहना जब हमारा गुण नहीं तब क्यों कर संभव है कि हारे में प्रभुत्व शक्ति को अवकाश मिले। निरी किस्मत और भाग्य पर वे ही लोग रहते हैं, जो आलसी हैं। किसी ने अच्छा कहा है- "दैव,दैव आलसी पुकारा।"

ईश्वर भी ज्ञानानुकूल और सहायक उन्हीं का होता है जो अपनी सहायता अपने आप कर सकते हैं। अपने आप अपनी सहायता करने की वासना आदमी में सच्ची तरक्की की बुनियादी है। अनेक सुप्रसिद्ध सत्पुरुषों की जीवनियाँ इसके उदाहरण तो हैं ही, वरन् प्रत्येक देश या जाति के लोगों में बल और ओज तथा गौरव और महत्व के आने का सच्चा इकरार मात्र निर्भरता है। बहुधा देखने में आता है कि किसी काम के करने में बाहरी सहायता इतना लाभ नहीं पहुँच सकती जितनी आत्मनिर्भरता।

समाज के बंधन में भी देखिए तो बहुत तरह से संशोधित सरकारी कानूनों के द्वारा वैसे नहीं हो सकता, जैसे समाज के एक-एक मनुष्य के अलग-अलग अपने संशोधन अपने आप करने से हो सकते हैं। कड़े-से-कड़े नियम आलसी समाज परिश्रमी अतिव्ययी को परिमित व्यसशील शराबी को संयमी, क्रोधी को शांत या सहनशील, कंजूसको उदार, लोभी को संतोषी मूर्ख को विद्वान, दर्पीध को नम्र, दुराचारी को सदाचारी, कर्दभ को उन्नत मना, दरिद्र भिखारी को आद्य, भीरू-डरपोक को वीर, धुरीण झूठे गपोड़िये को सच्चा, चोर को सहनशील, व्यभिचारी को एक पत्नी व्रतधारी इत्यादि नहीं बना सकता। किन्तु ये सब बातें हम अपने ही प्रयत्न और चेष्टा से अपने में ला सकते हैं।

10th Standard.indd 33 10-01-2019 12:09:45

सच पूछो तो जाति ही ऐसे ही सुधरे एक-एक व्यक्ति की समिष्टि है। समाज या जाति का एक-एक आदमी यदि अलग-लग अपने को सुधारे तो जाति की जाति या समाज का समाज सुधर जाए। सभ्यता और है क्या। यही कि सभ्य जाति के एक-एक मनुष्य वृद्ध, वनिता सबो में सभ्यता के सब लक्षण पाए जाएं, जिसमें आधे या तिहाई सभ्य हैं वही जाति अशिक्षित कहलाती है। जातीय उन्नति भी अलग-अलग एक-एक आदमी के परिश्रम, योग्यता, सुचाल और सौजन्य का मानो जोड़ है। उसी तरह जाति की अवनति एक-एक आदमी सुस्ती, कमीनापन, नीची प्रकृति, स्वार्थपरता और भांति-भांति की बुराइयों का बड़ा जोड़ है। इन्हीं गुणों एवं अवगुणों को जाति एवं धर्म के नाम से पुकारते हैं। जैसे सिक्खों में वीरता और जंगली जातियों में लुटेरापन।

जाति गुणों या अवगुणों को सरकार कानून के द्वारा रोक या जड़-मूल से नष्ट-भ्रष्ट नहीं कर सकते हैं, वे किसी दूसरी शक्ल में न सिर्फ फिर से उबर आएंगे वरन् पहले से ज्यादा तरोताजगी और हरियाली की हालत में हो जाएंगे। जब तक किसी जाति के हर एक व्यक्ति के चरित्र में आदि से मौलिक सुधार न किया जाए, तब तक पहले दर्जे का देशानुराग और सर्वसाधारण के हित की आकांक्षा सिर्फ कानून के अदलने-बदलने से या नए कानून के जारी करने से नहीं पैदा हो सकती।

जालिम-से-जालिम बादशाह की हुकूमत में रहकर कोई जाति गुलाम नहीं कही जा सकती वरन् गुलाम वही जाति है जिसमें एक-एक व्यक्ति सब भांति कदर्भ, स्वार्थ परायण और जातीयता के भाव से रहित हो। ऐसी जाति जिसकी नस-नस में दास्य भाव समाया हुआ है, कभी उन्नति नहीं करेगी चाहे कैसे ही उदार शासन से वह शासित क्यों न की जाए। तो निश्चय हुआ कि देश की स्वतंत्रता की गहरी और मजबूत नींव उस देश के एक-एक आदम के आत्मनिर्भरता आदि गुणों पर स्थित है।

ऊँचे-से-ऊँचे दर्जे की शिक्षा बिल्कुल बेफायदा है। यदि हम अपने ही सहारे अपनी भलाई न कर सकें। जान स्टुअर्ट मिल का सिद्धांत है कि - राजा का भयानक से भयानक अत्याचार देश पर कभी कोई असर नहीं पैदा कर सकता, जब तक उस देश के एक-एक व्यक्ति में अपने सुधार की अटल वासना, दृढ़ता के साथ बद्धमूल है।

पुराने लोगों से जो चूक और गलती बन पड़ी है उसी का परिणाम वर्तमान समय में हम लोग भुगत रहे हैं। उसी को चाहे जिस नाम से प्रकाशित यथा जातीयता का भाव जाता रहा, एक नहीं है आपस की सहानुभूति नहीं है इत्यादि, तब पुराने क्रम को अच्छा माना और उस पर श्रद्धा जमाए रखना। हम क्यों कर अपने लिए उपकारी और उत्तम मानें हम तो इसे निरी चंदाखाने की गप समझते हैं कि हमारा धर्म इसमें आगे बढ़ने नहीं देता अथवा विदेशी राज से शासित है इसी से हम उन्नति नहीं कर सकते।

वास्तव में सच पूछो तो आत्मनिर्भरता अर्थात अपनी सहायता अपने आप करने का भाव हमारे बीच है ही

10th Standard.indd 34 10-01-2019 12:09:45

नहीं। यह बात हमारी वर्तमान दुर्गति उसी का परिणाम है। बुद्धिमानों का अनुभव हमें यही कहता है कि मनुष्य में पूर्णता विद्या से नहीं वरन् उन प्रसिद्ध पुरुषार्थी पुरुषों के चरित्र का अनुसरण करने से आती है।

यूरोप की सभ्यता जो आजकल हमारे लिए प्रत्येक उन्नति की बातों में उदाहरण स्वरूप मानी जाती है। एक दिन या एक आदमी के काम का परिणाम नहीं है। जब कई पीढ़ी तक देश का देश ऊँचे काम, ऊँचे विचार और ऊँची वासनाओं की ओर प्रबल चित रहा, तब वे इस अवस्था को पहुँचे हैं। यहाँ के हर एक संप्रदाय जाति या वर्ण के लोग धैर्य के साथ धुन बाँध के बराबर अपनी-अपनी उन्नति में लगे हैं। नीचे से नीचे दर्जे के मनुष्य, किसान, कूली, कारीगर आदि और ऊँचे से ऊँचे दर्जे वाले कवि, दार्शनिक, राजनीतिज्ञ सबों से मिलकर जातीय उन्नति को इस सीमा तक पहुँचाया है। एक ने एक बात को आरंभ कर उसका ढाँचा खड़ा कर दिया। दूसरे ने उसी ढांचे पर आसन्न रहकर दर्जा बढ़ाया इसी तरह क्रम क्रम से कई पीढ़ी के उपरांत वह बात जिसका केवल ढांचा मात्र पड़ा था, पूर्णता और सिद्धि की अवस्था तक पहुँच गयी।

ये अनेक शिल्प तथा विज्ञान जिनकी दुनिया भर में धूम मची है, इसी तरह शुरू किये गये थे और ढांचा छोड़ने वाले पूर्ण पुरुष अपनी भाग्यवान भावी संतान को उस शिल्प कौशल और विज्ञान की बड़ी भारी बपौती का उत्तराधिकारी बना गये थे।

आत्मनिर्भरता के संबंध में जो शिक्षा हमें खेतिहर, दुकानदार, बढ़ई, लोहार आदि कारीगरों से मिलती है उसके मुकाबलों में स्कूल और कालेजों की शिक्षा कुछ नहीं है और यह शिक्षा हमें पुस्तकों या किताबों से नहीं मिलती, वरन् एक-एक मनुष्य के चरित्र, आत्म-दमन, दृढ़ता, धैर्य, परिश्रम, स्थिर अध्यवसाय पर दृष्टि रखने से मिलती है। इन सब गुणों से हमारे जीवन की सफलता है। ये गुण मनुष्य जाति के उत्तम उन्नति के छोर है और हमें जन्म में क्या करना चाहिए, इसके सारांश हैं।

बहुतेरे सत्पुरुषों के जीवन-चरित्र धर्म ग्रंथों के समा हैं जिनके पढ़ने से हमें कुछ न कुछ आदर्श जरूर मिलता है। बड़प्पन किसी जाति-विशेष या खास दर्जे के आदमियों के हिस्से में नहीं पड़ा, जो कोई बड़ा काम करे या जिससे सर्वसाधारण का उपकार हो वही बड़े लोगों की कोटि में आ सकता है। वह चाहे गरीब से गरीब या छोटे दर्जे का क्यों न हो, बड़े-से-बड़े है। उस मनुष्य के तन में साक्षात् देवता है।

हमारे यहाँ अवतार ऐसे ही लोग हो गये हैं। सबेरे उठकर जिनका नाम ले लेने से दिन भर के लिए मंगल होना पक्का समझा जाता है, ऐसे महा महिमाशाली जिस कुल में जन्मते हैं, वह कुल उजागर और पुनीत हो जाता है। ऐसे हों कि जननी वीर-प्रभु कही जाती है। पुरुष सिंह ऐसा एक पुत्र अच्छा, गीदड़ों की विशेषता वाले सौ पुत्र भी किस काम के।

10th Standard.indd 35 10-01-2019 12:09:45

I) लेख 'आत्मनिर्भरता' पर आधारित प्रश्न

1. 'आत्मनिर्भरता' क्या है? इसका विकास कैसे करना चाहिए।
2. मानव-कल्याण कैसे हो सकता है? बताइये।
3. यूरोप के उन्नति का कारण बताइये।
4. भारतीय सभ्यता और संस्कृति पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
5. हमारे देश में पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का प्रभाव कैसे पड़ा है?
6. 'आत्मनिर्भरता' का पाठ बच्चों को क्यों पढ़ाना चाहिए?
7. 'आत्मनिर्भरता' से होने वाले लाभ बताइए।

II) सही या गलत चुनकर लिखिए

1 ऊँचे-से-ऊँचे दर्जे की शिक्षा बिल्कुल बेफायदा है

2. अपनी सहायता अपने आप करने का भाव हमारे बीच है ही नहीं।
3. सत्पुरुषों के जीवन-चरित्र धर्म ग्रंथों के समा हैं

4 किसी ने अच्छा कहा है दैव दैव आलसी पुकारा।।

5 सच पूछो तो जाति ही ऐसे ही सुधारे एक एक व्यक्ति की समिश्टि है।

III) खाली जगह भरिए

1 --------- के लोग अपने भरोसे पर रहना हीं भूल गये हैं।

2 जाति गुणों को सरकार ------- रोक नहीं सकता ।

3 उँचे से उँचे दर्जे की शिक्षा बिलकुल ---------

4 आत्म निर्भरता के संबंध में जो शिक्षा हमें ------ से मिलती है।

10th Standard.indd 36 10-01-2019 12:09:45

13

ऐसे-ऐसे (एकांकी)

विष्णु प्रभाकर

विष्णु प्रभाकर का जन्म उत्तरप्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के गांव मीरापुर में हुआ था। उनके पिता दुर्गा प्रसाद धार्मिक विचारों वाले व्यक्ति थे और उनकी माता महादेवी पढ़ी-लिखी महिला थीं जिन्होंने अपने समय में पर्दा प्रथा का विरोध किया था। उनकी पत्नी का नाम सुशीला था। विष्णु प्रभाकर की आरंभिक शिक्षा मीरापुर में हुई। बाद में वे अपने मामा के घर हिसार चले गये जो तब पंजाब प्रांत का हिस्सा था। घर की हालत ठीक नहीं होने के कारण चलते वे आगे की पढ़ाई ठीक से नहीं कर पाए और गृहस्थी चलाने के लिए उन्हें सरकारी नौकरी करनी पड़ी। चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी के तौर पर काम करते समय उन्हें प्रतिमाह १८ रुपये मिलते थे, लेकिन मेधावी और लगनशील विष्णु ने पढाई जारी रखी और हिन्दी में प्रभाकर व हिन्दी भूषण की उपाधि के साथ ही संस्कृत में प्रज्ञा और अंग्रेजी में बी.ए की डिग्री प्राप्त की। विष्णु प्रभाकर पर महात्मा गाँधी के दर्शन और सिद्धांतों का गहरा असर पड़ा। इसके चलते ही उनका रुझान कांग्रेस की तरफ हुआ और स्वतंत्रता संग्राम के महासमर में उन्होंने अपनी लेखनी का भी एक उद्देश्य बना लिया, जो आजादी के लिए सतत संघर्षरत रही। अपने दौर के लेखकों में वे प्रेमचंद, यशपाल, जैनेंद्र और अज्ञेय जैसे महारथियों के सहयात्री रहे, लेकिन रचना के क्षेत्र में उनकी एक अलग पहचान रही।



विष्णु प्रभाकर

पात्र परिचय

मोहन	-	एक विद्यार्थी
दीनानाथ	-	एक पड़ोसी
माँ	-	मोहन की माँ
पिता	-	मोहन के पिता
मास्टर	-	मोहन के मास्टर जी
वैद्य जी	-	डॉक्टर
तथा	-	एक पड़ोसिन।

10th Standard.indd 37 10-01-2019 12:09:45

सड़क के किनारे एक सुंदर फ्लैट में बैठक का दृश्य। उसका एक दरवाजा सड़क वाले बरामदे में खुलता है। दूसरा अंदर के कमरे में। तीसरा रसोईघर में। अलमारियों में पुस्तकें लगी हैं। एक ओर रेडियो का सेट है। दोनो ओर दो छोटे तख्त हैं, जिन पर गलीचे बिछे हैं। बीच में एक छोटी मेज़ भी है। उस पर फोन रखा है। पर्दा उठने पर मोहन एक तख्त पर लेटा है। आठ-नौ वर्ष के लगभग उम्र होगी उसकी। तीसरी क्लास में पढ़ता है। इस समय बड़ा बेचैन जान पड़ता है। बार-बार पेट को पकड़ता है। उसके माता-पिता पास बैठे हैं।

माँ : (पुचकारकर) न-न, ऐसे मत कर! अभी ठीक हुआ जाता है। अभी डॉक्टर को बुलाया है। ले. तब तक सेंक ले। (चादर हटाकर पेट पर बोतल रखती है फिर मोहन के पिता की ओर मुड़ती है) इसने कहीं कुछ अंट-संट तो नहीं खा लिया?

पिता : कहाँ? कुछ भी नहीं। सिर्फ एक केला और एक संतरा खाया था।? अरे, यह तो दफ्तर से चलने तक कूटता फिर रहा था। बस अड्डे पर आकर यकायक बोला- पिताजी, मेरेपेट में तो कुछ 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है।

माँ : कैसे?

पिता : बस 'ऐसे-ऐसे' करता रहा। मैंने कहा- अरे, गड़बड़ होती है? तो बोला – नहीं। फिर पूछा –चक-सा चुभता है? तो जवाब दिया – नहीं। गोला-सा फूटता है, तो बोला – नहीं। जो पूछा उसका जवाब नहीं। बस एक ही रट लगाता रहा, कुछ 'ऐसे-ऐसे' होता है।

पिता : अजी, एक दम सफेद पड़ गया था। खड़ी नहीं रहा गया। बस में भी नाचता रहा-मेरे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होता है। 'ऐसे-ऐसे' होता है।

मोहन : (जोर से कराहकर) माँ! अरे माँ!

माँ : न-न मेरे बेटे, मेरे लाल, ऐसे नहीं। अजी, ज़रा देखना डॉक्टर क्यों नहीं आया है। इसे को कुछ ज्यादा ही तकलीफ जान पड़ती है। यह 'ऐसे-ऐसे' तो कोई बड़ी खराब बीमारी है। देना ना, कैसे लोट रहा है। ज़रा भी कल नहीं पड़ती। हींग, चूरन, पिपरमेंट सब दे चुकी हूँ। वैद्य जी आ जाते।

(तभी फोन की घंटी बजती है। मोहन के पिता उठाते हैं)

पिता : यह 43332224 है। जी, जी हाँ। बोल रहा हूँ....कौन? डॉक्टर साहब। जी हाँ, मोहन के पेट में दर्द है.....जी नहीं. खाया तो कुछ नहीं.....बस यही कह रहा है.....बस जी, 'ऐसे-ऐसे' होता है। बस जी 'ऐसे-ऐसे'। यह जी...जी हाँ। चेहरा एक दम सफेद हो रहा है। नाचा.....

10th Standard.indd 38 10-01-2019 12:09:45

नाचता-फिरता है.....जी नहीं, दस्त तो नहीं आया पर जी हाँ, पेशाब तो आया था लेकिन जी नहीं, रंग तो नहीं देखा। आप कहें तो अब देख लेंगेअच्छा जी। ज़रा जल्दी आइए। अच्छा जी, बड़ी कृपा है। (फोन का चोंगा रख देते हैं।) डॉक्टर साहब चल दिए हैं। पाँच मिनिट में आ जाते हैं। (पड़ोस के लाला

(दीनानाथ का प्रवेश। मोहन ज़ोर से कराहता है।)

मोहन : माँ.....माँ.....ओ.....ओ (उलटी आ जाती है उठकर नीचे झुकता है। माँ सिर पकड़ती है। मोहन तीन-चार बार ओ.....ओ.....करता है। थूकता है, फिर लेट जाता है। हाय, हाय!

माँ : (कमर सहलाती हुई) क्या हो गया? दोपहर को भला-चंगा गया था। कुछ समझ में नहीं आता। कैसा पड़ा है। नहीं तो मोहन भला कब पड़ने वाला है। हर वक्त घर को सिर पर उठाए रहता है।

दीनानाथ : अजी, घर क्या, पड़ोस को भी गुलज़ार किए रहता है। इसे छेड़, उसे पछाड़, इसके मुक्का, उसके थप्पड़। यहाँ-वहाँ, हर कहीं मोहन ही मोहन।

पिता : बडा नटखट है।

माँ : पर अब तो बेचारा कैसा थक गया है। मुझे तो डर है कि कल स्कूल कैसे जाएगा।

दीनानाथ : जी हाँ, कुछ बड़ी तकलीफ है, तभी तो पड़ा। मामूली तकलीफ को तो यह कुछ समझता नहीं। पर कोई डर नहीं। मैं वैद्य जी से कह आया हूँ। वे आ ही रहे हैं। ठीक कर देंगे।

मोहन : (तेजी से कराहकर) अरे...रे...रे....रे....ओह!

माँ : (घबराकर) क्या है, बेटा? क्या हुआ?

मोहन : (रोआँसा-सा) बड़े जोर से ऐसे-ऐसे होता है। ऐसे-ऐसे।

माँ : ऐसे-कैसे, बेटे? ऐसे क्या होता है?

मोहन : ऐसे-ऐसे (पेट दबाता है)

(वैद्य जी का प्रवेश)

वैद्य जी : कहाँ है मोहन? मैंने कहा, खुदा भला करें। कहो बेटा खेलने से जी भर-गया क्या? कोई धमा-चौकड़ी करने को नहीं बची है क्या?

10th Standard.indd 39 10-01-2019 12:09:45

(सब उठकर हाथ जोड़ते हैं वैद्य जी मोहन के पास कुरसी पर बैठ जाते हैं।)

पिता : वैद्य जी, शाम तक ठीक था। दफ्तर चलते वक्त रास्ते में एकदम बोला – मेरे पेट में दर्द होता है। ऐसे-ऐसे होता है। समझ नहीं आता, यह कैसा दर्द है।

वैद्य जी : अभी बता देता हूँ। असल में बच्चा है। समझ नहीं पाता है(नाड़ी दबाकर) वात का प्रकोप है....मैंने कहा, बेटा जीभ तो दिखाओ। (मोहन जीभ निकालता है) कब्ज है। पेट साफ नहीं है। मल रुक जाने से वायु बढ़ गई है। क्यों बेटा हाथ ऐसे-ऐसे होता है।

मोहन : (कराहकर) जी हाँ....ओह।

वैद्य जी : (हर्ष से उछलकर) मैंने कहा न, मैं समझ गया। अ पुड़िया भेजता हूँ। मामूली बात है, पर यही मामूली बात कभी-कभी बड़ों-बड़ों को छका देती है। समझने की बात है। मैंने कहा, आओ जी, दीनानाथ जी आप ही पुड़िया ले लो। (मोहन की माँ से) आधे-आधे घंटे बाद गरम पानी से देती है। दो-तीन दस्त होंगे। बस फिर 'ऐसे-ऐसे' ऐसे भागेगा जैसे गधे के सिर से सींग।

(वैद्य जी द्वार की ओर बढ़ते हैं। मोहन के पिता पाँच का नोट निकालते हैं।)

पिता : वैद्य जी, यह आपकी भेंट (नोट देते हैं)

वैद्य जी : (नोट लेते हैं) अरे मैंने कहा, आप यह क्या करते हैं? आप और हम क्या दे हैं?

(अंदर के दरवाज़े से जाते हैं। तभी डॉक्टर प्रवेश करते हैं।)

डॉक्टर : हैलो, मोहन! क्या बात है?'ऐसे-ऐसे' क्या कर लिया?

(माँ और पिताजी फिर उठते हैं। मोहन कराहता है डॉक्टर पास बैठते हैं।)

पिता : डॉक्टर साहब, कुछ समझ में नहीं आता।

डॉक्टर : (पेट दबाने लगते हैं।) अभी देखता हूँ। जीभ तो दिखाओ बेटा। (मोहन जीभ निकालता है) हूँ, तो मिस्टर, आपके पेट में कैसे होता है। ऐसे-ऐसे (मोहन बोलता नहीं, कराहता है।)

बताओ, बेटा डॉक्टर साहब को समझा दो।

मोहन : जी....जी....ऐसे-ऐसे कुछ ऐसे-ऐसे होता है। (हाथ से बताता है। उँगलियाँ भींचता है) डॉक्टर, तबीयत तो बड़ी खराब है।

10th Standard.indd 40 10-01-2019 12:09:45

डॉक्टर : (सहसा गंभीर होकर) वह तो मैं देख रहा हूँ। चेहरा बताता है, इसे काफी दर्द है। असल में कई तरह के दर्द चल रहे हैं। कौलिक पेन तो है नहीं। और फोड़ा भी नहीं जान पड़ता।

(बराबर पेट टटोलता रहता है)

माँ : (काँपकर) फोड़ा।

डॉक्टर : जी नहीं, वह नहीं है। बिल्कुल नहीं है। (मोहन से) ज़रा मुंह फिर खोलना जीभ निकालो। (मोहन जीभ निकालता है) हाँ, कब्ज़ ही लगता है। कुछ बदहजमी भी है। (उठते हुए) कोई बात नहीं। दवा भेजता हूँ। (पिता से) क्यों न आप ही चलें। मेरा विचार है कि एक ही खुराक पीने के बाद तबीयत ठीक हो जाएगी। कभी-कभी हवा रुक जाती है। और फंदा डाल लेती है। बस उसी की ऐंठन।

(डॉक्टर जाते हैं। मोहन के पिता दस का नोट लिए पीछे-पीछे जाते हैं और डॉक्टर साहब को देते हैं।)

माँ : से तो दूँ, डॉक्टर साहब?

(दूर से) हाँ, गरम पानी की बोतल से सेंक दीजिए।

(डाक्टर जाते हैं, माँ बोतल उठाती है पड़ोसिन आती है)

पड़ोसिन : क्यों मोहन की माँ, कैसा है मोहन?

माँ : आओ जी, रामू की काकी। कैसा क्या होता। लोचा-लोचा फिरे है। जाने वह ऐसे-ऐसे दर्द क्या है, लड़के का बुरा हाल कर दिया।

पड़ोसिन : पड़ोसिन ना जी, इत्ती नयी-नयी बीमारियाँ निकली हैं। देख लेना, यह भी कोई नया दर्द होगा। नए-नए बुखार निकल गए हैं। वह बात है कि खाना-पीना तो रहा नहीं।

माँ : डॉक्टर कहता है कि बदहज़मी है। आज तो रोटी भी उनके साथ खाकर गया था। वहाँ भी कुछ नहीं खाया। आजकल तो बिना खाए बीमारी होती है। (बाहर से आवाज़ आती है-'मोहन! मोहन!' फिर मास्टर जी का प्रवेश होता है।)

माँ : ओह, मोहन के मास्टर जी हैं। (पुकारकर) आ जाइए!

मास्टर : सुना है कि मोहन के पेट में कुछ 'ऐसे-ऐसे' हो रहा है क्यों भाई? (पास आकर) हाँ, चेहरा तो कुछ उतरा हुआ है। दादा, कल तो स्कूल जाना है। तुम्हारे बिना तो क्लास में रौनक ही नहीं रहेगी। क्यों माता जी, आपने क्या खिला दिया था इसे?

10th Standard.indd 41 10-01-2019 12:09:45

माँ : खाया तो बेचारे ने कुछ नहीं।

मास्टर : तब शायद न खाने का दर्द है। समझ गया, उसी में 'ऐसे-ऐसे' होता है।

माँ : पर मास्टर जी, वैद्य और डॉक्टर तो दस्त की दवा भेजेंगे।

मास्टर : माता जी, मोहन की दवा वैद्य और डॉक्टर को पास नहीं है। इसकी 'ऐसे-ऐसे' की बीमारी को मैं जानता हूँ। अकसर मोहन जैसे लड़कों को वह हो जाती है।

माँ : सच क्या बीमारी है यह?

मास्टर : अभी बताता हूँ। (मोहन से) अच्छा साहब। दर्द तो दूर हो ही जाएगा। डरो मत। बेशक कल स्कूल मत आना। पर हाँ, एक बात तो बताओ, स्कूल का काम तो पूरा कर लिया है?

(मोहन चुप रहता है)

माँ : जवाब दो, बेटा, मास्टर जी क्या पूछते हैं।

मास्टर : हाँ बोलो, बेटा।

(मोहन कुछ देर फिर मौन रहता है। फिर इनकार में सिर हिलाता है।)

मोहन : जी, सब नहीं हुआ।

मास्टर : हूँ. शायद सवाल रह गये हैं।

मोहन : जी!

मास्टर : तो यह बात है। ऐसे-ऐसे काम न करने का डर है।

माँ : (चौंककर) क्या? (मोहन सहसा मुंह छिपा लेता है)

मास्टर : (हंसकर) कुछ नहीं, माता जी मोहन ने महीना भर मौज की। स्कूल का काम रह गया। आज खयाल आया। बस डर के मारे पेट में 'ऐसे-ऐसे' होने लगा। 'ऐसे-ऐसे'! अच्छा, उठिए साहब।

आपके 'ऐसे-ऐसे' की दवा मेरे पास है। स्कूल से आपको दो दिन की छुट्टी मिलेगी। आप उसमें काम पूरा करेंगे और आपका 'ऐसे-ऐसे' दूर भाग जाएगा। (मोहन उसी तरह मुंह छिपाए रहता है) अब उठकर सवाल शुरू कीजिए। उठिए, खाना मिलेगा (मोहन उठता है माँ ठगी-सी देखती है। दूसरी ओर से पिता और दीनानाथ दवा लेकर प्रवेश करते हैं।)

10th Standard.indd 42 10-01-2019 12:09:45

माँ : क्यों रे मोहन, तेरे पेट में तो बहुत बड़ी दाढ़ी है। हमारी तो जान निकल गई। पन्द्रह-बीस रुपये खर्च हुए, सो अलग। (पिता से) देखा जी आपने।

पिता : (चकित होकर) क्या-क्या हुआ?

माँ : क्या-क्या होता। यह 'ऐसे-ऐसे' पेट का दर्द नहीं है, स्कूल का काम न करने का डर है।

पिता : हें!

दवा की शीशी हाथ से छूटकर फर्श पर गिर पड़ती है। एक क्षण सब ठगे-से मोहन को देखते हैं। फिर हँस पड़ते हैं।

दीनानाथ : वाह, मोहन, वाह !पिता : वाह, बेटा वाह! तुमने तो खूब छकाया।

पिता : वाह, बेटा वाह! तुमने तो खूब छकाया।

(एक अट्टहास के बाद पर्दा गिर जाता है।

प्रश्नोत्तर

1. ऐसे-ऐसे' एकांकी के प्रमुख पात्रों के नाम बताइए?
2. 'ऐसे-ऐसे' एकांकी की विशेषता बताइए?
3. मोहन के पेट के दर्द का कारण क्या था और यह दर्द क्यों हुआ?
4. माँ मोहन के पेट के दर्द से क्यों परेशान हुई और वैद्य से क्या बोली?
5. मोहन के ऐसे-ऐसे करने का नतीजा क्या होता है?
6. वैद्य ने ऐसे-ऐसे कहकर मोहन के पेट दर्द को कैसे दूर किया?
7. 'ऐसे-ऐसे' एकांकी का सारांश लिखिए।

10th Standard.indd 43 10-01-2019 12:09:45

14

जीवन और शिक्षण

संत विनोबा

महात्मा गाँधी के सिद्धांतों में पूर्ण निष्ठा, विश्वास एवं उनको तत्परता से क्रियान्वित करने वाले संत विनोबा एक नैष्ठिक ब्रह्मचारी, प्रखर विद्वान और कर्मठ समाजसेवी रहे गाँधीजी की विभिन्न रचनात्मक प्रवृत्तियों को साकार रूप देने, प्रयोग की कसौटी पर उन्हें कसकर उनकी उपयोगिता को साकार रूप देने तथा प्रभविष्णुता को सिद्ध करने में विनोबा जी का योगदान महत्वपूर्ण रहा। आप स्वभाव से ही अध्ययनशील तथा अध्यासाई थे। निरंतर विकासशीलता विनोबा जी का श्रेष्ठ गुण मना जाता है। विनोबा जी के विचार, वाणी और आचार की एकरूपता उनको सही माने में संत प्रमाणित करती है। उनकी स्मरण शक्ति अभूतपूर्व रही।



संत विनोबा

विनोबा जी संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित रहे और मराठी आपकी मातृभाषा होने के कारण उस पर भी आपका पूर्ण अधिकार रहा। विनोबा जी बहुभाषा कोविद थे और उन्हें भारतवर्ष की प्रायः सभी प्रमुख भाषाओं का ज्ञान था। नपे-तुले आडम्बरहीन शब्दों में अपनी बात व्यक्त कर देना विनोबा जी का खास गुण है। आपके विचार सुलझे हुए, तर्क युक्तिसंगत और कथन स्पष्ट एवं संक्षिप्त होते हैं। आपके कई वाक्य सूत्रबद्ध होते हैं जिनमें गहन आशय छिपा होता है। गागर में सागर भर देने की अद्भुत क्षमता उनमें परिलक्षित होती है। समाजगत बुराइयों, रुढ़िगत अंधविश्वासों के प्रति एक हल्की-सी चुटकी लेकर ही आपकी वाणी मौन नहीं हो जाती वरन् उन समस्याओं का समुचित समाधान भी हम उसमें पाते हैं। आपकी भाषा, सरल, सुबोध होते हुए भी विषय को पूर्णतया स्पष्ट करने वाली होती है।

इनका प्रस्तुत जीवन और शिक्षण निबंध छात्रों, अध्यापकों एवं समाज को आत्म-परीक्षण करने के लिए बाध्य करता है। उनके मतानुसार आज की शिक्षा का सबसे बड़ी दोष यह है कि आधी आयु तक मनुष्य यह समझ ही नहीं पाता कि ज़िन्दगी बसर करने के लिए उसे किस प्रकार की तैयारी की आवश्यकता है यही कारण है कि आज का युवक अपने विद्यार्थी-जीवन में भविष्य के लक्ष्य और उसकी पूर्ति की आवश्यक तैयारी नहीं कर पाता। इसे ही यदि हम सीधे-सादे शब्दों में कहना चाहें तो कहोगे की आज की शिक्षा जीवन-यापन के उपायों क कोई ज्ञान हमें

10th Standard.indd 44 10-01-2019 12:09:45

नहीं कराती अर्थात जीवन और शिक्षा का कोई संबंध नहीं रह गया है। ऐसी स्थिति मंज मनुष्य की अवस्था दयनीय हो जाती है और वह जीवन को भयानक वस्तु समझने लगता है। इस दोष से बचने के लिए क्या करना चाहिए और वह कैसे किया जा सकता है इन सब बातों का विवेचन प्रस्तुत निबंध में किया गया है। शिक्षा में जीवन के प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करा देने की आवश्यकता पर विनोबा जी ने बल दिया है।

जीवन और शिक्षण

आज की विचित्र शिक्षण पद्धति के कारण जीवन के दो टुकड़े हो जाते हैं। आयु के पहले पन्द्रह-बीस वर्षों में आदमी जीने की झंझट में न पड़कर सिर्फ शिक्षा को प्राप्त करे और बाद को शिक्षण को बस्ते में लपेट रखकर मरने तक जिये।

यह रीति प्रकृति की योजना से विरूद्ध है। हाथ भर लंबाई का बालक साढ़े तीन हाथ का कैसे हो जाता है। यह उसके अथवा औरों के ध्यान में भी नहीं आता। शरीर की वृद्धि रोज़ होती रहती है। यह वृद्धि सावकाश, क्रम-क्रम से, थोड़ी-थोड़ी होती है। इसलिए उसके होने का भान तक नहीं था। यह नहीं होता कि आज रात को सोवे तब दो फुट ऊँचाई थी और सबेरे उठकर देखा तो ढाई फुट हो गयी। आज की शिक्षण-पद्धति का तो यह ढंग है कि अमुक वर्ष से बिल्कुल आखिरी दिन तक मनुष्य जीवन के विषय में पूर्ण रूप से गैर जिम्मेदार रहे तो भी कोई हर्ज नहीं, यही नहीं उसे गैर जिम्मेदार रहना चाहिए और आगामी वर्ष का पहला दिन निकला कि सारी जिम्मेदारी उठा लेने की तैयारी हो जाना चाहिए।

सम्पूर्ण गैर जिम्मेदारी से सम्पूर्ण जिम्मेदारी में कूदना तो एक हनुमान-कूद ही हुई। ऐसी हनुमान-कूद की कोशिश में हाथ पैर टूट जाए तो क्या?

भगवान ने अर्जुन से कुरुक्षेत्र में भगवत गीता कहीं। पहले भगवत गीता की'क्लास' लेकर अर्जुन को कुरुक्षेत्र में नहीं ढकेला, तभी उसे वह गीता पची। हम जिसे जीवन की तैयारी का ज्ञान कहते हैं उसे जीवन से बिल्कुल अलग तरह रखना चाहिए, इसलिए उस ज्ञान से मौत की ही तैयारी होती है।

बीस वर्ष का उत्साही पुरुष अध्ययन में मगन है तरह-तरह के मुझे विचारों के महल बना रहा है।"मैं शिवाजी महाराज की मातृभूमि की सेवा करूंगा। मैं वाल्मीकि-सा कवि बनूंगा। मैं न्यूटन की तरह खोज करूंगा।"एक, दो, चार जाने क्या-क्या कल्पना करता है। ऐसी कल्पना करने का भाग्य भी थोड़े को ही मिलता है। पर जिनको मिलता है उनकी ही बात लेते हैं। जिन कल्पनाओं का आगे क्या नतीजा निकलता है? जब नोन-तेल-लकड़ी के फेर में पड़ा, जब पेट का प्रश्न सामने आया, तो बेचारा दीन बन जाता है। जीवन की जिम्मेदारी क्या चीज है, आज तक उसकी बिल्कुल ही कल्पना नहीं की थी और अब तो पहाड़ सामने खड़ा हो गया फिर क्या करता है? फिर पेट के लिए वन-वन फिरने वाले शिवाजी, करुणा गीत गाने वाले वाल्मीकि और कभी नौकरी की तो कभी औरत की, कभी लड़की के लिए वर की

10th Standard.indd 45 10-01-2019 12:09:46

और अंत में शमशान की शोध करने वाले न्यूटन - जिस प्रकार की भूमिकाएँ लेकर अपनी कल्पनाओं का समाधान करता है, यह हनुमान कूद का फल है।

मैंने मैट्रिक के एक विद्यार्थी से पूछा-"क्यों जी, तुम आगे क्या करोगे?"

"आगे क्या? आगे कॉलेज में जाऊंगा।"

"ठीक है। कॉलेज में तो जाओगे। लेकिन उसके बाद? यह सवाल तो बना ही रहता है।"

"सवाल तो बना ही रहता है। पर उसका अभी से विचार क्यों किया जाए? आगे देखा जाएगा।" फिर तीन साल बाद उसी विद्यार्थी से वही सवाल पूछा।

"अभी तक कोई विचार नहीं हुआ।"

"विचार हुआ नहीं यानी? लेकिन विचार किया थाक्या?"

"नहीं साहब, विचार किया ही नहीं। क्या विचार करें? कुछ सूझता नहीं। पर अभी डेढ़ बरस बाकी है। आगे देखा जाएगा।

"आगे देखा जाएगा।" ये वे ही शब्द हैं जो तीन वर्ष पहले कहे गए थे। पर पहले की आवाज में बेफिक्री थी। आज की आवाज में थोड़ी चिंता की झलक थी।

फिर डेढ़ वर्ष बाद उसी प्रश्नकर्ता ने उसी विद्यार्थी से - अथवा कहो अब 'गृहस्थ' से वही प्रश्न पूछा। इस बार बेचारा चिंताक्रान्त था। अब आवाज की बेफिक्री बिल्कुल गायब थी।"तत:किम्? तत:किम्? तत:किम्?" यह शंकराचार्य का पूछा हुआ सनातन सवाल दिमाग में कसकर चक्कर लगाने लगा था। पर पास जवाब था नहीं।

आज की मौत कल पर ढकेलते-ढकेलते एक दिन ऐसा आ जाता है कि उस दिन मरना ही पड़ता है। यह प्रसंग उन पर नहीं आता जो मरण के पहले ही मर लेते हैं, जो अपना मरण आंखों से देखते हैं। जो मरण का अगाउ अनुभव लेते हैं, उनका मरण टलता है और जो मरण के अगाउ अनुभव से जी चुराते हैं, खींचते हैं, उनकी छाती पर मरण आ पड़ता है। सामने खंभा है, यह बात अंधे की उस खंभे का छाती में प्रत्यक्ष धक्का लगने के बाद मालूम होता है। आंख वाले को यह खम्मा पहले ही दिखाई देता है। अतः उसका धक्का उसकी छाती को नहीं लगता।

जिंदगी की जिम्मेदारी कोई निरी मौत नहीं है और मौत ही कौन ऐसी बड़ी 'मौत' हैं? अनुभव के अभाव में यह सारा 'हौआ' है। जीवन और मरण दोनों आनंद की वस्तु होनी चाहिए। कौन पिता है जो अपने बच्चों के लिए परेशानी की जिंदगी चाहेगा ?तिस पर ईश्वर के प्रेम और करुणा का कोई पार हैं?

10th Standard.indd 46 10-01-2019 12:09:46

वह अपने लाड़ले बच्चों के लिए सुखमय जीवन का निर्माण करेगा की परेशानी और झगड़ों से भरा जीवन रचेगा! कल्पना की क्या आवश्यकता प्रत्यक्ष देखिए न? हमारे लिए जो चीज जितनी जरूरी है उसके उतनी ही सुलभता से मिलने का इंतजार ईश्वर की ओर से है। पानी से हवा ज्यादा जरूरी है तो ईश्वर ने पानी से हवा को अधिक सुलभ किया है। जहाँ नाक है वहाँ हवा मौजूद है। पानी से अन्न की जरूरत कम होने की वजह से पानी प्राप्त करने की बनिस्बत अन्न प्राप्त करने में अधिक परिश्रम करना पड़ता है।'आत्मा' सबसे अधिक महत्व की वस्तु होने के कारण वह हर एक को हमेशा के लिए दे डाली है। ईश्वर की ऐसी प्रेम-पूर्ण योजना है जिसका ख्याल न करके हम निकम्मे जड़ जवाहरात जमा करने-जितने जड़ बन जाएं तो तकलीफ हमें होगी ही। पर यह हमारी जड़ता का दोष है, ईश्वर का नहीं।

जिंदगी की जिम्मेदारी कोई डरावनी चीज नहीं है, वह आनंद से ओत-प्रोतहै, बशर्ते कि ईश्वर की रची हुई जीवन की सरल योजना को ध्यान में रखते हुए अनुप्रयुक्त वासना को दबाकर रखा जाए।पर जैसे वह आनंद से भरी हुई वस्तु है वैसे ही शिक्षा से भी भरपूर है। यह पक्की बात समझनी चाहिए जो जिंदगी की जिम्मेदारी से वंचित हुआ है वह सारे शिक्षण का फल गँवा बैठा। बहुतों की धारणा है कि बचपन से ही जिंदगी की जिम्मेदारी का ख्याल अगर बच्चों में पैदा हो जाए तो जीवन कुम्हला जाएगा। पर जीवन की जिंदगी की जिम्मेदारी का भान होने से अगर जीवन कुम्हलाता हो तो फिर वह जीवन-वस्तु ही रहने लायक नहीं है। पर आज यह धारणा बहुतेरे शिक्षा शास्त्रियों की भी है और इसका मुख्य कारण है जीवन के विषय में दुष्ट कल्पना। जीवन मानी कलह, यह मान लेना इस नीति के अरसिक माने हुए परंतु वास्तविक मर्म को समझने वाले मुर्गे से सीख लेकर ज्वार के दानों की अपेक्षा मोतियों को मान देना छोड़ दिया जाए तो जीवन के अंदर का कलह जाता रहेगा और जीवन में सहकार दाखिल हो जाएगा। बंदर के हाथ में मोतियों की माला (मरकट-भूषण अंग) यह कहावत जिन्होंने गढ़ी है उन्होंने मनुष्य का मनुष्यत्व सिद्धनकरके मनुष्य के पूर्वजों के संबंध में डार्विन का सिद्धांत सिद्ध किया है।'हनुमान के हाथ में मोतियों की माला' वाली कहावत जिसमें रची अपने मनुष्यत्व के प्रति वफादार रहे।

जीवन अगर भयानक वस्तु हो, कलह हो तो बच्चों को उसमें दाखिल मत करो और खुद भी मत जियो। पर वह अगर जीने लायक वस्तु हो तो लड़कों को उसमें ज़रूर दाखिल करो। बिना उसके उन्हें शिक्षण नहीं मिलने का। भगवद्गीता जैसे कुरुक्षेत्र में कही गयी वैसे शिक्षा जीवन-क्षेत्र में देनी चाहिए–दी जा सकता है। 'दी जा सकती है' यह भाषा भी ठीक नहीं है। वहीं वह मिल सकती है।

अर्जुन के सामने प्रत्यक्ष कर्तव्य करते हुए सवाल पैदा हुआ। उसका उत्तर देने के लिए भगवद्गीता निर्मित हुई। इसी का नाम शिक्षा है। बच्चों को खेत में काम करने दो। वहाँ कोई सवाल पैदा हो तो उसका उत्तर देने के लिए सृष्टि–शास्त्र अथवा पदार्थ-विज्ञान की या दूसरी जिस चीज की ज़रूरत हो उसका ज्ञान दो। यह सच्चा शिक्षण होगा। बच्चों को रसोई बनाने दो। उसमें जहाँ जरूरत हो पाक-शास्त्र सिखाओ। पर असली बात यह है कि उनको जीवन

10th Standard.indd 47 10-01-2019 12:09:46

जीने दो। व्यवहार में काम करने वाले आदमी को भी शिक्षण मिलता ही रहता है। वैसे ही छोटे बच्चों को भी मिले। भेद इतना ही होगा कि बच्चों के आस-पास ज़रूरत के अनुसार मार्ग-दर्शन करने वाले मनुष्य मौजूद हों। यह आदमी भी 'सिखाने वाले'बनकर 'नियुक्त' होंगे।वे भी'जीवन जीने वाले' हों।, जैसे व्यवहार में आदमी जीवन जीते हैं। अंतर इतना ही है कि इस 'शिक्षक' कहलाने वालों का जीवन विचारमय होगा, उसके विचार मौकों पर बच्चों को समझा कर बताने की योग्यता उनमें होगी। पर'शिक्षक' नाम के किसी स्वतंत्र धंधे की जरूरत नहीं है, न 'विद्यार्थी' नाम के मनुष्य-कोटी के से बाहर के किसी प्राणी की है। और'क्या करते हो' पूछने पर 'पढ़ता हूँ' या 'पढ़ाता हूँ' जैसे जवाब की जरूरत नहीं है।'खेती करता हूँ' अथवा 'बुनता हूँ' ऐसा शब्द पेशेवर कहिए, व्यवहारिक कहिए। पर जीवन के भीतर से उत्तर आना चाहिए। इसके लिए विद्यार्थी का उदाहरण राम लक्ष्मण का और गुरु का उदाहरण विश्वामित्र का लेना चाहिए। विश्वामित्र यज्ञ करते थे उनकी रक्षा के लिए उन्होंने दशरथ के लड़कों की याचना की। इसी काम के लिए दशरथ ने लड़कों को भेजा। लड़कों में भी यह जिम्मेदारी की भावना थी कि हम यज्ञ रक्षा के 'काम' के लिए जाते हैं। उसमें उन्हें अपूर्व शिक्षा मिली। पर यह बताना हो कि राम लक्ष्मण ने क्या किया तो कहना होगा की यज्ञ रक्षा की 'शिक्षा प्राप्त की' नहीं कहा जाएगा। पर शिक्षा उन्हें मिली जो मिलनी ही थी!

शिक्षा कर्तव्य-कर्म का आनुषंगिक फल है। जो कोई कर्तव्य करता है, उसे जाने- अनजाने वह मिलता ही है। लड़कों को भी वह उसी तरह मिलना चाहिए। औरों को वह ठोकरें खा-खा कर मिलता है। छोटे लड़कों में आज इतनी शक्ति नहीं आई है ,इसीलिए उनके आसपास ऐसा वातावरण बनाना चाहिए कि वेबहुत ठोकरें न खाने पाएँ और धीरे-धीरे स्वावलंबी बनें ऐसी अपेक्षा और योजना होनी चाहिए।शिक्षा फल है और 'मां फलेषु कदाचन' यह मर्यादा इस फल के लिए भी लागू है। खास शिक्षा के लिए कोई कर्म करना यह भी सकाम हुआ-और उसमें भी 'इदमद्य मया लब्धम्' -आज मैंने यह पाया, 'इदं प्राप्स्ये' -कल वह पाऊँगा,इत्यादि वासनाएं आती ही हैं। इसलिए इस 'शिक्षा मोह' से छूटना चाहिए।इस मोह से जो छूटा उसे सर्वोत्तम शिक्षा मिली समझनी चाहिए। मां बीमार है, उसकी सेवा करने में मुझे खूब शिक्षा मिलेगी। पर इस शिक्षा के लोभ से मुझे माता की सेवा नहीं करनी है। वह तो मेरा पवित्र कर्तव्य है। इस भावना से मुझे माता की सेवा करनी चाहिए। अथवा माता बीमार है और उसकी सेवा करने से मेरी दूसरी चीज जिसे मैं शिक्षा समझता हूँ वह जाती है तो इस शिक्षा की नष्ट होने के डर से मुझे माता की सेवा नहीं टालनी चाहिए।

प्राथमिक महत्व के जीवनापयोगी परिश्रम को शिक्षा में स्थान मिलना चाहिए। कुछ शिक्षा शास्त्रियों का इस पर कहना है कि ये परिश्रम शिक्षा की दृष्टि से ही दाखिल किये जाएं, पेट भरने की दृष्टि से नहीं। आज 'पेट भरने का' जो विकृत अर्थ प्रचलित है, उससे घबड़ाकर यह कहा जाता है और उस हद तक वह ठीक है। पर मनुष्य को 'पेट' देने में ईश्वर का हेतु है। ईमानदारी से 'पेट भरना' अगर मनुष्य साध ले तो समाज के बहुतेरे दुःख और पातक नष्ट ही हे जायें। इससे मनु ने 'योषर्थशुचि:'-जो आर्थिकदृष्टि से पवित्र है, वही पवित्र है, यह उद्गार प्रकट किया है। 'सर्वेषामविरोधेन' कैसे जियें, इस शिक्षा में सारा सीखना समा जाता है। अविरोधवृत्ति से शरीर – यात्रा करना मनुष्य

10th Standard.indd 48 10-01-2019 12:09:46

का प्रथम कर्तव्य है। यह कर्तव्य करना ही उसकी आध्यात्मिक उन्नति होगी। इसी से शरीर-यात्रा के लिए उपयोगी परिश्रम करने को ही शास्त्रकारों ने 'यज्ञ' नाम दिया है। उदर-भरण नोहे जाणिजे यज्ञकर्म'–यह उदर-भरण नहीं है, इसे 'यज्ञ-कर्मजान', वामन पंडित का यह वचनप्रसिद्ध है। अतः मैं शरीर –यात्रा के लिए परिश्रम करता हूँ, यह भावना उचित है। शरीर-यात्रा से मतलब अपने साढ़े तीन हाथ के शरीर की यात्रा न समझकर समाज-शरीर की यात्रा, यह उदार अर्थ मन में बैठना चाहिए। मेरी शरीर-यात्रा अर्थात समाज की सेवा और इसीलिए ईश्वर की पूजा इतना समीकरण दृढ़ होना चाहिए। यह भावना हर एक में होनी चाहिए। इसलिए वह छोटे बच्चों में भी होनी चाहिए। इसके लिए उनकी शक्ति भर उन्हें जीवन में भाग लेने का मौका देना चाहिए और जीवन को मुख्य केन्द्र बनाकर उसके आस-पास आवश्यकतानुसार सारे शिक्षण की रचना करनी चाहिए।

इससे जीवन के दो खण्ड न होंगे। जीवन की जिम्मेदारी अचानक आ पड़ने से उत्पन्न होने वली कठिनाई पैदा न होगी। अनजाने शिक्षा मिलती रहेगी पर सीखने का मोह नहीं चिपकेगा और निष्काम कर्म की ओर प्रवृत्ति रहे।

जीवन और शिक्षण के प्रश्न

1. जीवन और शिक्षण का महत्व समझाइये।

2. जीवन में शिक्षण का स्थान क्या है?

3. विनोबा भावे का जीवन और शिक्षण के बार में क्या विचार है?

4. महात्मा गांधी के सिद्धांतों पर टिप्पणी लिखिए।

5. विनोबा के अनुसार वर्तमान शिक्षा कैसी होनी चाहिए।

6. विनोबा के जीवन दर्शन पर पाँच वाक्य लिखिए।

7. जीवन और शिक्षण पाठ का सारांश लिखिए।

II) सही या गलत चुनकर लिखिए

1 विनोबा जी के विचार, वाणी और आचार की एकरूपता संत प्रमाणित करती है

2 जिंदगी की जिम्मेदारी कोई निरी मौत नहीं है

3. अनुभव के अभाव में यह सारा 'हौआ' है

10th Standard.indd 49 10-01-2019 12:09:46

4. जीवन और मरण दोनों आनंद की वस्तु होनी चाहिए

5. प्राथमिक महत्व के जीवनापयोगी परिश्रम को शिक्षा में स्थान मिलना चाहिए

6 भगवान ने अर्जुन से कुरूक्षेत्र में भगवद्गीता कहीं।

7 जिन्द्रगी की जिम्मेदारी कोई निरी मौत है।

8 जिन्दगी की जिम्मेदारी कोई डरावनी चीज नहीं है।

9 शिक्षा कर्तव्य कर्म का आकर्षक फल नहीं है।

III) खाली जगह भरिए

1 जीवन और शिक्षण समाज को ------- करने के लिए बाध्य करता है।

2 आज की आवाज में थोडी -------थी

3 शिक्षा का कर्तव्य कर्म का -------फल है।

10th Standard.indd 50 10-01-2019 12:09:46

15

संस्कृति क्या है?

रामधारी सिंह 'दिनकर'

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार प्रांत मुंगेर जिले में स्थित सिमरियाघाट नामक स्थान में हुआ था। इन्होंने राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी के जयद्रथ वध, भारती भारत आदि सेप्रेरित होकर अनेक रचनाएँ की। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी के बाद राष्ट्रकवि के रूप में दिनकर का नाम लिया जाता है। दिनकर क्रांति और विद्रोही भावों के ओजस्वी कवि थे। रश्मिरथी, परशुराम की प्रतीक्षा और कुरुक्षेत्र आपकी श्रेष्ठ रचनाएँ हैं। उनकी भाषा शैली ओज की प्रधानता है। प्रमुख कविताएँ – रेणुका, हुंकार, रसवंती, द्वन्दगीत, सामधेनी, परशुराम की प्रतीक्षा, नीम के पत्ते, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी। ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित।



रामधारी सिंह 'दिनकर'

संस्कृति क्या है?

संस्कृति ऐसी चीज है, जिसे लक्षणों से तो हम जान सकते हैं, लेकिन उसकी परिभाषा नहीं दे सकते सभ्यता से भिन्न गुण है। अंग्रेजी में कहावत है कि सभ्यता वह चीज है,जो हमारे पास है, संस्कृति वह गुण है, जो हममें व्याप्त है। मोटर,महल, सड़क, हवाई जहाज,पोशाक और अच्छा भोजन,ये तथा इनके समान सारी अन्य स्थूल वस्तुएँ,संस्कृति नहीं सभ्यता के समान है। मगर पोशाक पहनने और भोजन करने में जो कला है, वह संस्कृति की चीज है। इसी प्रकार मोटर बनाने और उसका उपयोग करने,महलों के निर्माण में रुचि का परिचय देने और सड़कों तथा हवाई जहाजों की रचना में जो ज्ञान लगता है, उसे अर्जित करने में संस्कृति अपने को व्यक्त करती है। हरसुसभ्य आदमी सुसंस्कृत ही होता है, ऐसा नहीं कहा जा सकता; क्योंकि अच्छी पोशाक पहनने वाला आदमी भी तबीयत से नंगा हो सकता है और तबीयत से नंगा होना संस्कृति के खिलाफ बात है क्योंकि सभ्यता की पहचान सुख-सुविधा और ठाट- बाट है। मगर, बहुत-से ऐसे लोग हैं, सड़े-गले झोपड़ों में रहते हैं, उनके पास काफी कपड़े भी नहीं होते और पहनने के अच्छे ढंग ही उन्हें मालूम होते हैं, लेकिन फिर भी उनमें विनय और सदाचार होता है,वे दूसरों के दुख से दुखी होते हैं तथा दूसरों का दुख दूर करने के लिए वह खुद मुसीबत उठाने को भी तैयार रहते हैं।

छोटा नागपुर की आदिवासी जनता पूर्ण रूप से सभ्य तो नहीं कही जा सकती, क्योंकि सभ्यता के बड़े-बड़े उदाहरण उपकरण उसके पास नहीं है लेकिन दया-माया सच्चाई और सदाचार उसमें कम नहीं है।अतएव, उन्हें सुसंस्कृत समझने में कोई उ्ज नहीं होना चाहिए।प्राचीन भारत में ऋषिगण जंगलों में रहते थे और जंगलों में वे कोठे

10th Standard.indd 51 10-01-2019 12:09:46

और महल बना कर नहीं रहते थे।फूस की झोपड़ियों में वास करना, जंगल के जीवन से दोस्ती और प्यार करना, किसी भी मोटे काम को अपने हाथ से करने में हिचकिचाहट नहीं दिखती,पत्तों में खाना और मिट्टी के बर्तनों में रसोई पकाना, यही उनकी जिंदगी थी यह लक्षण आज की यूरोपीय परिभाषा के अनुसार के लक्षण नहीं माने जाते है।,फिर भी वे ऋषिगण सुसंस्कृत ही नहीं थे बल्कि वह हमारी जाति की संस्कृति का निर्माण करते थे। सभ्यता और संस्कृति में यह एक मौलिक भेद है, जिसे समझे बिना हमें कहीं-कहीं कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है।

मगर, यह कठिनाई कहीं-कहीं ही आती है।साधारण नियम यही है कि संस्कृति की सभ्यता की प्रगति, अधिकतर एक साथ होती है और दोनों का एक दूसरे पर प्रभाव भी पड़ता रहता है।उदाहरण के लिए जब हम कोई घर बनाने लगते हैं, तब स्थूल रूप से यह सभ्यता का कार्य होता है। मगर, हम घर का कौन-सा नक्शा पसंद करते हैं, इसका निर्णय हमारी संस्कृति की रुचि करती है और संस्कृति की प्रेरणा से हम जैसा घर बनाते हैं, वह सिर्फ सभ्यता का अंग बन जाता है। इस प्रकार सभ्यता का संस्कृति पर और संस्कृति का सभ्यता पर पड़ने वाले प्रभाव का क्रम निरंतर चलता ही रहता है।

यही एक बात यह भी समझ लेनी चाहिए की संस्कृति और प्रकृति में भी भेद है। गुस्सा करना मनुष्य की प्रकृति है, लोभ में पड़ना उसका स्वभाव है, ईर्ष्या, मोह, राग, द्वेष और कामवासना ये सब-के-सब प्रकृति प्रदत्त गुण हैं मगर, प्रकृति के ये गुण बेरोक छोड़ दिए जाएँ तो आदमी और जानवर में कोई भेद नहीं रह जाएगा। इसलिए, मनुष्य प्रकृति के इन आवेगों पर रोक लगाता है और कोशिश करता है कि वह गुस्से के बस में नहीं बल्कि गुस्सा ही उसके बस में रहे; वह ईर्ष्या, मोह, राग, द्वेष और कामवासना का गुलाम नहीं रहे,बल्कि, ये दुर्गुण उसके गुलाम रहें और इन दुर्गुणों पर आदमी जितना विजयी होता है, उसकी संस्कृति भी उतनी ही ऊंची समझी जाती है।

निष्कर्ष यह है कि संस्कृति सभ्यता की अपेक्षा महीन चीज होती है। यह सभ्यता के भीतर उसी तरह व्याप्त रहती है जैसे दूध में मक्खन या फूलों में सुगंध और सभ्यता की अपेक्षा यह टिकाऊ भी अधिक है,क्योंकि सभ्यता की सामग्रियां फूट-फूटकर विनष्ट हो जा सकती हैं, लेकिन, संस्कृति का विनाश इतनी आसानी से नहीं किया जा सकता।

एक बात और है किस सभ्यता के उपकरण जल्दी से बटोरे भी जा सकते हैं, मगर, उनके उपयोग के लिए संस्कृति चाहिए, वह तुरंत नहीं आ सकती जो आदमी अचानक धनी हो जाता है या एक-ब-एक किसी ऊंचे पद पर पहुंच जाता है, उसे चिढ़ाने के लिए अंग्रेजी में एक शब्द 'अपस्टार्ट' है। 'अपस्टार्ट'को लोग बुरा समझते हैं और इसलिए बुरा नहीं समझते कि अचानक धनी हो जाना या एक-ब-एक किसी ऊंचे पद पर पहुंच जाना कोई बुरी बात है, वरन, इसलिए की धनियों तथा ऊंचे ओहदेवालों की जो संस्कृति है, वह तुरंत सीखी नहीं जा सकती। इसलिए ऊंचे ओहदे पर पहुँचा हुआ व्यक्ति यदि पहले से अधिक विनयशील नहीं हो जाए,तो वह चिढ़ाने लायक हो जाता है।

संस्कृति ऐसी चीज नहीं है जिसकी रचना दस, बीस या सौ, पचास-वर्षों में की जा सकती हो।अनेक शताब्दियों तक एक समाज के लोग जिस तरह खाते- पीते, रहते-सहते, पढ़ते-लिखते, सोचते-समझते, और राजकाज चलाते

10th Standard.indd 52 10-01-2019 12:09:46

अथवा धर्म-कर्म करते हैं उन सभी कार्यों से उनकी संस्कृति उत्पन्न होती है। हम जो भी करते हैं उसमें हमारी संस्कृति की झलक होती है।यहाँ तक कि हमारे उठने-बैठने, पहनने-ओढ़ने, घूमने-फिरने, और रोने-हंसने से भी हमारी संस्कृति की पहचान होती है,यद्यपि हमारा कोई भी एक काम हमारी संस्कृति का पर्याय नहीं बन सकता। असल में, संस्कृति जिंदगी का एक तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा होकर उस समाज में छाया रहता है, जिसमें हम जन्म लेते हैं। इसलिए जिस समाज में हम पैदा हुए हैं अथवा जिस समाज से मिलकर हम जी रहे हैं उसकी संस्कृति हमारी संस्कृति है, यद्यपि अपने जीवन में हम जो भी संस्कार जमा करते हैं वह भी हमारी संस्कृति का अंग बन जाता है और मरने के बाद हम अन्य वस्तुओं के साथ अपनी संस्कृति की विरासत भी अपनी संतानों के लिए छोड़ देते हैं। इसलिए, संस्कृति वह चीज मानी जाती है जो हमारे सारे जीवन को व्यापे हुए हैं तथा जिसकी रचना और विकास में अनेक सदियों के अनुभवों का हाथ है बल्कि संस्कृति हमारा पीछा जन्म जन्मांतर तक करती है। अपने यहां एक साधारण कहावत है जिसका जैसा संस्कार है उसका वैसा ही पुनर्जन्म भी होता है। जबहम किसी बालक या बालिका को बहुत तेज पाते हैं तब हम अचानक ही कह उठते हैं कि यह पूर्व जन्म का संस्कार है। संस्कार या संस्कृति असल में शरीर का नहीं आत्मा का गुण है और जब की सभ्यता की सामग्रियों से हमारा संबंध शरीर के साथ ही छूट जाता है तब भी हमारी संस्कृति का प्रभाव हमारी आत्मा के साथ जन्म-जन्मांतर तक चलता रहता है।

आदिकाल से हमारे लिए जो लोग काव्य और दर्शन रचने आए हैं, चित्र और मूर्ति बनाते आए हैं, वह हमारी संस्कृति के रचयिता है। आदिकाल से हम जिस-जिस रूप में शासन चलाते आए हैं, पूजा करते आए हैं, मंदिर और मकान बनाते आए हैं, नाटक और अभिनय करते आए हैं,बर्तन और घर के दूसरे सामान बनाते आए हैं, कपड़े और जेवर पहनते आए हैं, पर्व और त्योहार मनाते आए हैं, परिवार पड़ोसी और संसार से दोस्ती या दुश्मनी का जो भी सलूक करते आए हैं, सब-का-सब हमारी संस्कृति का ही अंश है। संस्कृति के उपकरण हमारे पुस्तकालय और संग्रहालय म्यूजियम नाटक शाला और सिनेमा गृह ही नहीं बल्कि हमारे राजनीतिक और आर्थिक संगठन भी होते हैं, क्योंकि उन पर भी हमारी रुचि और चरित्र की छाप लगी होती है।

संस्कृति का स्वभाव है कि वह आदान-प्रदान से बढ़ती है। जब भी दो देश वाणिज्य-व्यापार अथवा शत्रुता या मित्रता के कारण आपस में मिलते हैं तब उनकी संस्कृतियां एक-दूसरे को प्रभावित करने लगती हैं, ठीक उसी प्रकार, जैसे दो व्यक्तियों की संगति का प्रभाव दोनों पर पड़ता है। संसार में शायद ही कोई ऐसा देश हो जो यह दावा कर सके कि उस पर किसी अन्य देश की संस्कृति का प्रभाव नहीं पड़ा है। इसी प्रकार, कोई जाति भी यह नहीं जान सकती कि उस पर किसी दूसरी जाति का प्रभाव नहीं है।

जो जाति केवल देना ही है, जानती है लेना कुछ नहीं, उसकी संस्कृति का एक-न-एक दिन दिवाला निकल जाता है। इसके विपरीत, जिस जलाशय के पानी लाने वाले दरवाजे बराबर खुले रहते हैं उसकी संस्कृति कभी नहीं सूखती। उसमें सदा ही स्वच्छ जल लहराता और कमल के फूल खिलते रहते हैं।

10th Standard.indd 53 10-01-2019 12:09:46

कूपमण्डूकता और दुनिया से रूठ कर अलग बैठने का भाव संस्कृति को ले उठता है। अकसर देखा जाता है कि जब हम एक भाषा में किसी अद्भुत कला को विकसित होते देखते हैं तब तुरंत आसपास पड़ोस या संपर्क वाली दूसरी भाषा में हम उसके उत्स की खोज करने लगते हैं।पहले भाषा में 'शैली' और 'कीड्स' पैदा होते हैं, तब दूसरी भाषा में 'रवींद्र' उत्पन्न होते हैं। पहले एक देश में 'बुद्ध' पैदा होते हैं। देश में यीशु मसीह का जन्म होता है। मगर मुसलमान इस देश में नहीं आए होते तो ऊर्दु भाषा का जन्म नहीं होता और ना मोगल-कलम की चित्रकारी ही यहाँ पैदा हुई होती। अगर यूरोप से भारत का संपर्क नहीं हुआ होता तो भारत की विचारधारा पर विज्ञान का प्रभाव देर से पढ़ता और राम मोहनराय, दयानंद, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, गांधी में से कोई भी सुधारक उस समय जन्म नहीं लेते, जिस समय उनका जन्म हुआ। जब भी दो जातियाँ मिलते हैं उनके संपर्क एवं संघर्ष से जिंदगी की एक नई धारा फूट निकलती है, इसका प्रभाव दोनों पर पड़ता है।आदान-प्रदान की प्रक्रिया संस्कृति की जान है और इसी के सहारे वह अपनेकोजिंदा रखती है।

केवल चित्र, कविता, मूर्ति, मकान और पोशाक पर ही नहीं, सांस्कृतिक संपर्क का प्रभाव दर्शन और विचार पर भी पड़ता है।एक देश में जो दार्शनिक और महात्मा उत्पन्न होते हैं, उनकी आवाज दूसरे देशों में भी मिलते-जुलते दार्शनिकों और महात्माओं को जन्म देती है। एक देश में जो धर्म खड़ा होता है, वह दूसरे देशों के धर्मों को भी बहुत कुछ बदल देता है। यही नहीं बल्कि प्राचीन जगत में तो बहुत से ऐसे देवी देवता भी मिलते हैं जो कई जातियों के संस्कारों से निकल कर एक जगह जमा हुए हैं।एक जाति का धार्मिक रिवाज दूसरी जाति का रिवाज बन जाता है और एक देश की आदत दूसरे देश के लोगों की आदत में समा जाती है।अतएव, सांस्कृतिक दृष्टि से वह देश और वह जाति अधिक शक्तिशाली और महान समझी जानी चाहिए, जिसने विश्व के अधिक से अधिक देशों अधिक से अधिक जातियों की संस्कृतियों को अपने भीतर जज्ब करके उन्हें पचा करके, बड़े-से-बड़े समन्वय को उत्पन्न किया है।भारत देश और भारतीय जाति इस दृष्टि से संसार में सबसे महान है क्योंकि यहाँ की सामासिक संस्कृति में अधिक से अधिक जातियों की शक्तियां पची हुई है।

संस्कृति क्या है? के प्रश्न

1. रामधारी सिंह दिनकर ने संस्कृति के बे में क्या कहा हैं?

2. जीवन में संस्कृति के बारे में लिखिए।

3. संस्कृति और सभ्यता पर टिप्पणी लिखिए।

4. संस्कृति किसे कहते हैं उसका लक्षण क्या है?

5. संस्कृति का प्रभाव किन-किन बातों पर पड़ता है?

10th Standard.indd 54 10-01-2019 12:09:47

6. संस्कृति और सभ्यता सिक्के के दो पहलू हैं? समझाइये।

7. संस्कृति पाठ का सारांश लिखिए।

II) सही या गलत चुनकर लिखिए

1. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी के बाद राष्ट्रकवि के रूप में दिनकर का नाम लिया जाता है।

2. सभ्यता वह चीज है,जो हमारे पास है।

3. फूस की झोपड़ियों में वास करना, पत्तों में खाना और मिट्टी के बर्तनों में रसोई पकाना, ही जिंदगी थी।

4. संस्कृति की सभ्यता की प्रगति, अधिकतर एक साथ होती है।

5. संस्कृति सभ्यता की अपेक्षा महीन चीज होती है।

III) खाली जगह भरिए

1 संस्कृति _____ से बढ़ती है।

2. हमारे राजनीतिक और _____ भी होते हैं।

3. एक जाति का_____ दूसरी जाति का रिवाज बन जाता है।

4. _____ में अधिक से अधिक जातियों की शक्तियां पची हुई है।

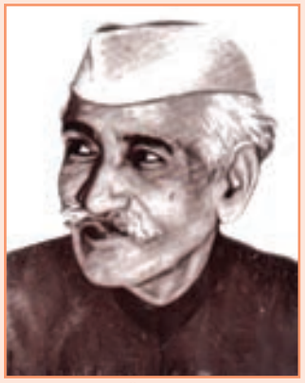
10th Standard.indd 55 10-01-2019 12:09:47

16

युवकों का समाज में स्थान

आचार्य नरेन्द्र देव

आधुनिक मनीषियों में आचार्य नरेन्द्र देव का स्थान महत्वपूर्ण है। यद्यपि वे कांग्रेस से जुड़े हुए तथापि कांग्रेस के अंतर्गत जो समाजवादी विचारों का मंच था उसमें आचार्य नरेन्द्र देव का वैचारिक योगदान एवं मार्गदर्शन महनीय माना जाता है। व अपने विचारों की मौलिकता, चिंतन की गंभीरता एवं कथन की स्पष्टता के कारण बुद्धिजीवियों के बीच अधिक चर्चित रहे।



आचार्य नरेन्द्र देव

विभिन्न विश्वविद्यालयों में उन्होंने आचार्य पद पर काम किया और लखनऊ तथा अन्य दो विश्वविद्यालयों में इन्होंने उपकुलपति का कार्यभार भी सफलता से सँभाला। इसके साथ ही साथ राजनीति के क्षेत्र में उन्होंने समाजवाद को जो सैद्धांतिक रूप दिया उसके कारण भी उनको लोग याद करते रहेंगे।

उपर्युक्त विविध क्षेत्रों में काम करते समय भारतीय समाज की जो त्रुटियाँ उन्हें दिखाई पड़ी थीं, वर्तमान पीढ़ी की अनुत्तरदायित्वपूर्ण नीति के संबंध में विचार करने पर उन्होंने जो कुछ अनुभव किया था उसे युवकों का समाज में स्थान शीर्षक निबंध में व्यक्त किया है तथा स्पष्ट शब्दों में यह घोषित किया है कि जब तक पुरानी पीढ़ी युवकों को असमर्थ, अविश्वसनीय, अनुत्तरदायी और नालायक समझती रहेगी तब तक समाज में आदर्श अथवा अभीष्ट की स्थापना नहीं हो सकती। लेखक ने युवकों को भी एक मर्यादा अथवा संहिता के अंदर रखने का प्रयास किया है। तथा उनकी शक्ति, साहस, तेज आदि से उन्हें परिचित कराया है। संक्षेप में प्रस्तुत निबंध के माध्यम से आचार्य जी ने जो कुछ कहा है वह आज के युवाओं और बूढ़ों, दोनों की दृष्टि से पठनीय है तथा विचारणीय भी है।

सामान्यतः उन समाजों में, जहाँ स्थिरता आ गई है और जहाँ विकास की गति अत्यंत मंद है, वृद्धों की सबसे अधिक प्रतिष्ठा होती है। ऐसे समाज में वृद्धों का ही नेतृत्व होता है और उनका अनुभव ही समाज का मुख्य आधार होता है। चीन और भारत के समाज इसके उदाहरण हैं। हमारे पूर्वजों का कहना है कि वह सभा ही नहीं जहाँ वृद्ध नहीं है। ऐसे समाज की शिक्षा प्रणाली में लोक परंपरा का बड़ा महत्व होता है। वहां शिक्षा के नए प्रकारों की परख का प्रश्न ही नहीं उठता जिनकी संस्कृति और जिनका इतिहास प्राचीन है, उनकी यही कथा है। जब तक समाज के आधारभूत मौलिक सिद्धांतों के परिवर्तन का प्रश्न नहीं उठता और जब तक समाज के आर्थिक ढांचे में क्रांतिकारी परिवर्तन नहीं होता तब तक यही अवस्था बनी रहती है।

10th Standard.indd 56 10-01-2019 12:09:47

किंतु जब समाज की ऐसी अवस्था हो जाती है कि उसको जीवित रहने के लिए अपनी पुरानी पद्धति को बदलने के लिए विवश होना पड़ता है तब उसके सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्य भी बदलने लगते हैं। नूतन समाज के आरंभक प्रायः युवक ही होते हैं। कम से कम उनके सहयोग के बिना नूतन समाज की प्रतिष्ठा नहीं होती है। इसका कारण यह है कि युवक में साहस, शौर्य, तेज और त्याग की भावना प्रबल होती है। वह अभी संसार के कीचड़ में नहीं फंसा है, इसलिए वह वस्तुस्थिति की अपेक्षा कर आदर्श के लिए आत्म-बलिदान करने के लिए उद्धत तो हो जाता है। इसका एक कारण यह भी है कि उसकी अभी कोई ऐसी दृष्टि नहीं बनी है जो उसको समाज की नवीन आवश्यकताओं को समझने से रोके। इसके विपरीत इन आवश्यकताओं का उसे विशेष अनुभव होता है। अतीत से नाता तोड़ने में उसे वह कठिनाई नहीं होती जो वृद्धों को होती है।

जिस समाज में ऐसी अवस्था उत्पन्न होती होने लगती है, वहाँ नए समाज का उपक्रम करने के लिए युवकों का आंदोलन प्रारंभ हो जाता है और युवक अपनी संस्थाएं बनाने लगते हैं। जब तक ऐसी अवस्था उत्पन्न नहीं हो जाती तब तक किसी समाज में युवक आंदोलन की सृष्टि नहीं होती। युवक आंदोलन का होना, न होना इस पर भी आश्रित है कि उस जाति विशेष का क्या स्वभाव है और समाज की परंपरा क्या रही है? यदि लोग समय से सुधार करने के अभ्यस्त हैं और संकट की अवस्था को टालना जानते हैं तो युवक आंदोलन कदाचित न भी हो; किंतु जो जाति क्रांति प्रिय है और जहाँ के समाज-नेता काफी दूरदर्शी नहीं है तथा अपने कट्टरपन के कारण समझौते के लिए तैयार नहीं हो जाते वहाँ युवक आंदोलन और संगठन का होना अनिवार्य हो जाता है।

साधारणतःसमाज को नव युवकों की प्रसुप्त शक्तियों का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। वृद्ध होने पर वह पुरानी पीढ़ी का स्थान लेते हैं। किंतु जब किसी समाज के जीवन-मरण का प्रश्न उपस्थित हो जाता है जैसा कि युद्ध के समय होता है तब युवकों की प्रसुप्त शक्तियों का उपयोग किए बिना संकट टल नहीं सकता। जब कभी कोई आकस्मिक संकट आ जाता है अथवा समाज को नवीन दृष्टि की आवश्यकता होती है, तब युवकों की शक्ति भंडार का उपयोग करना ही पड़ता है।

आज पुराने युग का अंत हो रहा है और हम एक नवीन युग में प्रवेश कर रहे हैं, सारे संसार का यही हाल है। यह संक्रमण काल है। युद्ध के पश्चात जीवन के मूल्य सर्वत्र बदल रहे हैं। पुरानी संस्थाएं जीर्ण-शीर्ण हो रही है और उनके आधारभूत विचारों पर से लोगों की आस्था उठती जा रही है। समाज को नए आदर्श की आवश्यकता है जो उसका पथ प्रदर्शक हो।

यों तो प्रत्येक समाज नवीन परिस्थिति के अनुकूल अपना आचरण और व्यवहार बदलने का प्रयत्न करता है, किंतु जब तक किसी महान उद्देश्य की गंभीर अनुभूति नहीं होती तब तक समाज में सामंजस्य और स्थिरता नहीं आती और उसकी समग्रता नष्ट होने लगती है। इस नवीन दर्शन में नव युवकों की ही आस्था होती है। उन्होंने ही इस नवीन मूल्यों की सृष्टि की है और उन्हीं को उनके अनुसार जीवन व्यतीत करना है।

10th Standard.indd 57 10-01-2019 12:09:47

यही कारण है कि हम सर्वत्र देखते हैं कि नवयुवक समाज का नेतृत्व करने आगे आ रहे हैं। नव-समाज में, जिनका इतिहास पुराना नहीं है, नव युवकों का स्वागत होता है और वह शीघ्र ही अधिकार रूढ़ हो जाते हैं, किंतु पुरातन समाज में वृद्धों का वही पुराना स्थान अब भी चला आता है। उनमें युवक के अधिकार स्वीकार नहीं किए जाते। इसलिए नव-युग के लाने में देर होती है। युवकों को अपनी कल्पना के बल से नई नीति बनाने का अवसर नहीं मिलता। अतः उनका असंतोष बढ़ता है और वह अपनी शक्तियों का उपयोग रचनात्मक कार्य में न कर, टीका टिप्पणी और आलोचना में ही उन्हें नष्ट कर देते हैं। इससे समाज का अहित ही होता है।

यह ठीक है कि पुरानी परम्परा की रक्षा के लिए वृद्धों का रहना भी आवश्यक है, किन्तु उनको यह स्वीकार करना चाहिए कि अब समय आ गया है जब उन्हें युवकों को जिम्मेदारी के पदों पर बैठाना चाहिए। युवकों का अधिकार स्वीकार कर लिया जाए तो इसके कई लाभ है पहली बात तो यह समझने की है कि जो आज अधिकार रूँढ हैं उनका कर्तव्य है कि वह अपने उत्तराधिकारियों को आज से तैयार करें अन्यथा इन वृद्धों के हट जाने पर उनकी जगह लेने वाले योग अनुभव व्यक्ति ना मिलेंगे दूसरी बात यह है कि भारत के स्वतंत्र होने पर जो बड़ी जिम्मेदारी देश पर आ गई है उसका भार सहन करने की शक्ति कुछ वृद्धों को छोड़कर अन्य वृद्धों में नहीं है पुनः नूतन समाज की रचना करने और प्रचलित सामाजिक पद्धति को तोड़ने की युवक में सामथ्र्थ है जो समाज नया उपक्रम करना चाहता है और किस को क्रांतिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है उसको युवक का सहयोग अवश्य चाहिए और यह संयोग युवक के अधिकार को स्वीकार करना करके ही प्राप्त हो सकता है।

स्वतंत्र राष्ट्र के विद्यार्थियों को हड़ताल करते हम नहीं सुनते।उनको इसकी आवश्यकता नहीं होती। परतंत्र राष्ट्र के विद्यार्थी राजनीतिक आंदोलन में खूब भाग लेते हैं उनको समय-समय पर प्रदर्शन और हड़ताल करनी पड़ती है, राजा के अधिकारियों के साथ संघर्ष होने से उनको गोली भी खानी पड़ती है। ऐसे वातावरण में रहने से उनकी एक विशेष प्रकार की मनोवृत्ति बन जाती है।

किंतु जब राष्ट्र स्वतंत्र हो जाता है, तब यही मनोवृत्ति हानिकारक सिद्ध होती है। राष्ट्र के संचालकों का कर्तव्य है कि बदलती हुई परिस्थिति में वह ऐसे विधान और उपायों का अविलंब लें जिनसे युवकों की मनोवृत्ति बदले और वह अपनी शक्तियों का विनियोग रचनात्मक कार्यों में करें। पहले तो पुराने अभ्यास को छोड़ना कठिन होता है और दूसरे जब समाज के नेता पुरानी वृत्ति को बदलने का प्रयास नहीं करते, तब कठिनाई और बढ़ जाती है। पुरानी मनोवृत्ति को बदलने का उपाय युवक के अधिकार को स्वीकार करना है। यदि आज की पीढ़ी आने वाली पीढ़ी की शिक्षा-दीक्षा का भार अपने ऊपर न लोगी और उसे विकास का अवसर न देगी, तो वह इतिहास के सम्मुख दोषी ठहरायी जायेगी।

राष्ट्र-निर्माण कार्य अभी आरंभ भी नहीं हुआ है। प्रत्येक दिशा में हमको प्रगति करनी है। शताब्दियों का रास्ता थोड़े वर्षों में तय करना है। लोकतंत्र की स्थापना के लिए सार्वजनिक शिक्षा की आवश्यकता है। इसके लिए

10th Standard.indd 58 10-01-2019 12:09:47

स्पष्टता का निवारण और जाति-पाँति के कठोर बंधनों को तोड़ना भी जरूरी है। लोकतंत्र अभ्यास का विषय है, कि वह लोकतंत्र का पाठ पढ़ने से और उसका नारा लगाने से उसकी स्थापना नहीं होती है।

इसलिए सहयोग का प्रचार कर सामाजिक संबंधों को बदलना तथा नई आर्थिक पद्धति को प्रतिष्ठित करना नितांत आवश्यक है। सुंदर भविष्य के निर्माण के लिए आज सर्वसाधारण से त्याग की अपील करनी है, किंतु जब तक कोई ऐसा उद्देश्य समाज के सम्मुख नहीं रखा जाता जिसके लिए लोग श्रम करें, तब तक त्याग की आशा करना व्यर्थ है। इन सब कामों के लिए युवक की आदर्शप्रियता, उसकी निर्भीकता, उसका साहस, उसकी लगन चाहिए। यह तभी हो सकता है जब हम युवक के अधिकार को स्वीकार करें।

यदि हम इस विषय में अपने कर्तव्य का पालन ना करेंगे तो भय है कि हमारा युवक गैर-जिम्मेदार ना हो जाए। विद्यार्थी समाज की उच्छृंखलता, विदेशी शासन से लड़ने का एक अनिवार्य फल है। एक अर्थ में कांग्रेस कार्यकर्ता भी उच्छृंखलताथे। किंतु स्वतंत्रता की जो कीमत हमको अदा करनी थी, उसमें यह भी शामिल था। लेकिन अब समय आ गया है जब विद्यार्थियों को आत्मशासन के महत्व को समझना चाहिए। आज की उच्छृंखलता के बदले में कोई सारवस्तु नहीं मिलती। इतना ही नहीं उससे समाज का अनिष्ट ही होगा। यह उच्छृंखलता युवक के अधिकार को स्वीकार करने से ही दूर होगी।

इस संबंध में एक बात और विचारने के योग्य है। युवक शक्ति का भंडार होता है। जिस परिस्थिति में रहता है, उससे वह अत्यंत प्रभावित होता है। यह भाव-प्रणव होता है तथा शूरता दिखाने की किसी अवस्था को छोड़ना नहीं चाहता। यदि उसका समाज स्वतंत्र होने की चेष्टा कर रहा है तो वह उसी में लग जाता है और यदि उसका समाज सांप्रदायिक युद्ध में लगा है तो वह उसका अगुवा बनना चाहता है। यदि इस दृष्टि से देखा जाए, तो युवक न प्रगतिशील है और न प्रतिक्रियावादी वह किसी भी नए काम में लगाया जा सकता है। शर्त यह है कि उसकी भावना पूरी होनी चाहिए और उसे काम का मौका मिलना चाहिए।

इसलिए यदि हम युवक की शक्ति का सदुपयोग नहीं करेंगे तो दूसरा उसका दुरुपयोग करेंगे।'फासिस्ट' राष्ट्रों ने युवक की शक्ति के महत्व को समझा और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसका दुरुपयोग किया।

क्या हम राष्ट्र निर्माण के कार्य के लिए युवकों के अधिकार को स्वीकार नहीं करेंगे? मैं यह जानता हूँ कि प्रत्येक अधिकार के साथ कर्तव्य होता है किंतु आज की परिस्थिति में अधिकार को स्वीकार करके ही कर्तव्य की बात कही जा सकती है।स्थूल सत्य है कि आज की किसी भी समस्या का समाधान युवकों के सहयोग के बिना समुचित रूप से नहीं हो सकता।

10th Standard.indd 59 10-01-2019 12:09:47

I) 'युवकों का समाज में स्थान' लेख के प्रश्न

1. समाज का मुख्य आधार कौन है और क्यों?
2. बदलते परिप्रेक्ष्य में समाज की भूमिका कैसी होनी चाहिए?
3. युवकों का समाज में क्या स्थान है?
4. युवकों के कौन-कौन से कर्तव्य और जिम्मेदारी है?
5. समाज-कल्याण के लिए हमें कौन-कौन से सिद्धांतों को अपनाना होगा?
6. युवकों का समाज में स्थान निर्धारित कीजिए। बहुत ही मीठे स्वरों के साथ

II) सही या गलत चुनकर लिखिए

1. आचार्य नरेन्द्र देव का वैचारिक योगदान एवं मार्गदर्शन महनीय माना जाता है
2. वृद्धों का अनुभव ही समाज का मुख्य आधार होता है।
3. नवयुवक समाज का नेतृत्व करने आगे आ रहे हैं।
4. लोकतंत्र अभ्यास का विषय है,
5. युवक शक्ति का भंडार होता है।
6. आज पुराने युग का अंत हो रहा है।
7. समाज अपना आचरण और व्यवहार बदलने का प्रयत्न करता है।

10th Standard.indd 60 10-01-2019 12:09:47

17

मिठाईवाला

पं. भगवती प्रसाद वाजपेयी

पं. भगवती प्रसाद वाजपेयी

पं. भगवती प्रसाद वाजपेयी की कहानियाँ कथ्य की दृष्टि से बेजोड़ हैं। भाव, भाषा एवं शैली की दृष्टि से ये कहानियाँ आधुनिक कहानी का प्रतिनिधित्व करती हैं।

पं. भगवती प्रसाद वाजपेयी जी की कहानियों की समीक्षाएँ तो की गई हैं परन्तु कथ्यात्मक सौन्दर्य का जैसा विवेचन श्रीराम वर्मा ने किया है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। लेखक ने प्रत्येक कहानी के कथ्य को हर दृष्टिकोण से थाहा है और स्थापनाएँ दी हैं। श्रीराम वर्मा के इस शोध कार्य से कहानी विधा के अध्येताओं को मदद मिलेगी।

बहुत ही मीठे स्वरों के साथ वह गलियों में घूमता हुआ कहता - "बच्चों को बहलानेवाला, खिलौनेवाला।"



इस अधूरे वाक्य को वह ऐसे विचित्र किन्तु मादक-मधुर ढंग से गाकर कहता कि सुननेवाले एक बार अस्थिर हो उठते। उनके स्नेहाभिषिक्त कंठ से फूटा हुआ उपयुक्त गान सुनकर निकट के मकानों में हलचल मच जाती। छोटे-छोटे बच्चों को अपनी गोद में लिए युवतियाँ चिकों को उठाकर छज्जों पर नीचे झाँकने लगतीं। गलियों और उनके अन्तर्व्यापी छोटे-छोटे उद्यानों में खेलते और इठलाते हुए बच्चों का झुंड उसे घेर लेता और तब वह खिलौनेवाला वहीं बैठकर खिलौने की पेटी खोल देता।

बच्चे खिलौने देखकर पुलकित हो उठते। वे पैसे लाकर खिलौने का मोल-भाव करने लगते। पूछते - "इछका दाम क्या है, औल इछका? औल इछका?"खिलौनेवाला बच्चों को देखता, और उनकी नन्हीं-नन्हीं उँगलियों से पैसे ले लेता, और बच्चों की इच्छानुसार उन्हें खिलौने दे देता। खिलौने लेकर फिर बच्चे उछलने-कूदने लगते और तब फिर खिलौनेवाला उसी प्रकार गाकर कहता - "बच्चों को बहलानेवाला, खिलौनेवाला।" सागर की हिलोर की भाँति उसका यह मादक गान गली भर के मकानों में इस ओर से उस ओर तक, लहराता हुआ पहुँचता, और खिलौनेवाला आगे बढ़ जाता।

राय विजयबहादुर के बच्चे भी एक दिन खिलौने लेकर घर आए! वे दो बच्चे थे - चुन्नू और मुन्नू! चुन्नू जब खिलौने ले आया, तो बोला - "मेला घोला कैछा छुन्दल ऐ?"

10th Standard.indd 61 10-01-2019 12:09:47

मुन्नू बोला - "औल देखो, मेला कैछा छुन्दल ऐ?"

दोनों अपने हाथी-घोड़े लेकर घर भर में उछलने लगे। इन बच्चों की माँ रोहिणी कुछ देर तक खड़े-खड़े उनका खेल निरखती रही। अन्त में दोनों बच्चों को बुलाकर उसने पूछा - "अरे ओ चुन्नू - मुन्नू, ये खिलौने तुमने कितने में लिए है?"

मुन्नू बोला - "दो पैछे में! खिलौनेवाला दे गया ऐ।"

रोहिणी सोचने लगी - इतने सस्ते कैसे दे गया है? कैसे दे गया है, यह तो वही जाने। लेकिन दे तो गया ही है, इतना तो निश्चय है!

एक जरा-सी बात ठहरी। रोहिणी अपने काम में लग गई। फिर कभी उसे इस पर विचार की आवश्यकता भी भला क्यों पड़ती।

2

छह महीने बाद।

नगर भर में दो-चार दिनों से एक मुरलीवाले के आने का समाचार फैल गया। लोग कहने लगे - "भाई वाह! मुरली बजाने में वह एक ही उस्ताद है। मुरली बजाकर, गाना सुनाकर वह मुरली बेचता भी है सो भी दो-दो पैसे भला, इसमें उसे क्या मिलता होगा। मेहनत भी तो न आती होगी!"

एक व्यक्ति ने पूछ लिया - "कैसा है वह मुरलीवाला, मैंने तो उसे नहीं देखा!"

उत्तर मिला - "उम्र तो उसकी अभी अधिक न होगी, यही तीस-बत्तीस का होगा। दुबला-पतला गोरा युवक है, बीकानेरी रंगीन साफा बाँधता है।"

"वही तो नहीं, जो पहले खिलौने बेचा करता था?"

"क्या वह पहले खिलौने भी बेचा करता था?'

"हाँ, जो आकार-प्रकार तुमने बतलाया, उसी प्रकार का वह भी था।"

"तो वही होगा। पर भई, है वह एक उस्ताद।"

10th Standard.indd 62 10-01-2019 12:09:47

प्रतिदिन इसी प्रकार उस मुरलीवाले की चर्चा होती। प्रतिदिन नगर की प्रत्येक गली में उसका मादक, मृदुल स्वर सुनाई पड़ता - "बच्चों को बहलानेवाला, मुरलियावाला।"

रोहिणी ने भी मुरलीवाले का यह स्वर सुना। तुरन्त ही उसे खिलौनेवाले का स्मरण हो आया। उसने मन ही मन कहा - "खिलौनेवाला भी इसी तरह गा-गाकर खिलौने बेचा करता था।"

रोहिणी उठकर अपने पति विजय बाबू के पास गई - "जरा उस मुरलीवाले को बुलाओ तो, चुन्नू-मुन्नू के लिए ले लूँ। क्या पता यह फिर इधर आए, न आए। वे भी, जान पड़ता है, पार्क में खेलने निकल गए है।"

विजय बाबू एक समाचार पत्र पढ़ रहे थे। उसी तरह उसे लिए हुए वे दरवाजे पर आकर मुरलीवाले से बोले - "क्यों भई, किस तरह देते हो मुरली?"

किसी की टोपी गली में गिर पड़ी। किसी का जूता पार्क में ही छूट गया, और किसी की सोथनी (पाजामा) ही ढीली होकर लटक आई है। इस तरह दौड़ते-हाँफते हुए बच्चों का झुण्ड आ पहुँचा। एक स्वर से सब बोल उठे - "अम बी लेंदे मुल्ली, और अम बी लेंदे मुल्ली।"

मुरलीवाला हर्ष से गदगद हो उठा। बोला - "देंगे भैया! लेकिन जरा रुको, ठहरो, एक-एक को देने दो। अभी इतनी जल्दी हम कहीं लौट थोड़े ही जाएँगे। बेचने तो आए ही हैं, और हैं भी इस समय मेरे पास एक-दो नहीं, पूरी सत्तावन।... हाँ, बाबूजी, क्या पूछा था आपने कितने में दीं!... दी तो वैसे तीन-तीन पैसे के हिसाब से है, पर आपको दो-दो पैसे में ही दे दूँगा।"

विजय बाबू भीतर-बाहर दोनों रूपों में मुस्करा दिए। मन ही मन कहने लगे - कैसा है। देता तो सबको इसी भाव से है, पर मुझ पर उलटा एहसान लाद रहा है। फिर बोले - "तुम लोगों की झूठ बोलने की आदत होती है। देते होगे सभी को दो-दो पैसे में, पर एहसान का बोझा मेरे ही ऊपर लाद रहे हो।"

मुरलीवाला एकदम अप्रतिभ हो उठा। बोला - "आपको क्या पता बाबू जी कि इनकी असली लागत क्या है। यह तो ग्राहकों का दस्तूर होता है कि दुकानदार चाहे हानि उठाकर चीज क्यों न बेचे, पर ग्राहक यही समझते हैं - दुकानदार मुझे लूट रहा है। आप भला काहे को विश्वास करेंगे? लेकिन सच पूछिए तो बाबूजी, असली दाम दो ही पैसा है। आप कहीं से दो पैसे में ये मुरलियाँ नहीं पा सकते। मैंने तो पूरी एक हजार बनवाई थीं, तब मुझे इस भाव पड़ी हैं।"

विजय बाबू बोले - "अच्छा, मुझे ज्यादा वक्त नहीं, जल्दी से दो ठो निकाल दो।"

10th Standard.indd 63 10-01-2019 12:09:47

दो मुरलियाँ लेकर विजय बाबू फिर मकान के भीतर पहुँच गए। मुरलीवाला देर तक उन बच्चों के झुण्ड में मुरलियाँ बेचता रहा। उसके पास कई रंग की मुरलियाँ थीं। बच्चे जो रंग पसन्द करते, मुरलीवाला उसी रंग की मुरली निकाल देता।

"यह बड़ी अच्छी मुरली है। तुम यही ले लो बाबू, राजा बाबू तुम्हारे लायक तो बस यह है। हाँ भैए, तुमको वही देंगे। ये लो।... तुमको वैसी न चाहिए, यह नारंगी रंग की, अच्छा वही लो।.... ले आए पैसे? अच्छा, ये लो तुम्हारे लिए मैंने पहले ही निकाल रखी थी...! तुमको पैसे नहीं मिले। तुमने अम्मा से ठीक तरह माँगे न होंगे। धोती पकड़कर पैरों में लिपटकर, अम्मा से पैसे माँगे जाते हैं बाबू! हाँ, फिर जाओ। अबकी बार मिल जाएँगे...। दुअन्नी है? तो क्या हुआ, ये लो पैसे वापस लो। ठीक हो गया न हिसाब?....मिल गए पैसे? देखो, मैंने तरकीब बताई! अच्छा अब तो किसी को नहीं लेना है? सब ले चुके? तुम्हारी माँ के पैसे नहीं हैं? अच्छा, तुम भी यह लो। अच्छा, तो अब मैं चलता हूँ।"

इस तरह मुरलीवाला फिर आगे बढ़ गया।

3

आज अपने मकान में बैठी हुई रोहिणी मुरलीवाले की सारी बातें सुनती रही। आज भी उसने अनुभव किया, बच्चों के साथ इतने प्यार से बातें करनेवाला फेरीवाला पहले कभी नहीं आया। फिर यह सौदा भी कैसा सस्ता बेचता है! भला आदमी जान पड़ता है। समय की बात है, जो बेचारा इस तरह मारा-मारा फिरता है। पेट जो न कराए, सो थोड़ा!

इसी समय मुरलीवाले का क्षीण स्वर दूसरी निकट की गली से सुनाई पड़ा - "बच्चों को बहलानेवाला, मुरलियावाला!"

रोहिणी इसे सुनकर मन ही मन कहने लगी - और स्वर कैसा मीठा है इसका!

बहुत दिनों तक रोहिणी को मुरलीवाले का वह मीठा स्वर और उसकी बच्चों के प्रति वे स्नेहासिक्त बातें याद आती रहीं। महीने के महीने आए और चले गए। फिर मुरलीवाला न आया। धीरे-धीरे उसकी स्मृति भी क्षीण हो गई।

4

आठ मास बाद -

सर्दी के दिन थे। रोहिणी स्नान करके मकान की छत पर चढ़कर आजानुलंबित केश-राशि सुखा रही थी। इसी समय नीचे की गली में सुनाई पड़ा - "बच्चों को बहलानेवाला, मिठाईवाला।"

मिठाईवाले का स्वर उसके लिए परिचित था, झट से रोहिणी नीचे उतर आई। उस समय उसके पति मकान में

10th Standard.indd 64 10-01-2019 12:09:47

नहीं थे। हाँ, उनकी वृद्धा दादी थीं। रोहिणी उनके निकट आकर बोली - "दादी, चुन्नू-मुन्नू के लिए मिठाई लेनी है। जरा कमरे में चलकर ठहराओ। मैं उधर कैसे जाऊँ, कोई आता न हो। जरा हटकर मैं भी चिक की ओट में बैठी रहूँगी।"

दादी उठकर कमरे में आकर बोलीं - "ए मिठाईवाले, इधर आना।"

मिठाईवाला निकट आ गया। बोला - "कितनी मिठाई दूँ, माँ? ये नए तरह की मिठाइयाँ हैं - रंग-बिरंगी, कुछ-कुछ खट्टी, कुछ-कुछ मीठी, जायकेदार, बड़ी देर तक मुंह में टिकती हैं। जल्दी नहीं घुलतीं। बच्चे बड़े चाव से चूसते हैं। इन गुणों के सिवा ये खाँसी भी दूर करती हैं! कितनी दूँ? चपटी, गोल, पहलदार गोलियाँ हैं। पैसे की सोलह देता हूँ।"

दादी बोलीं - "सोलह तो बहुत कम होती हैं, भला पच्चीस तो देते।"

मिठाईवाला - "नहीं दादी, अधिक नहीं दे सकता। इतना भी देता हूँ, यह अब मैं तुम्हें क्या... खैर, मैं अधिक न दे सकूँगा।"

रोहिणी दादी के पास ही थी। बोली - "दादी, फिर भी काफी सस्ता दे रहा है। चार पैसे की ले लो। यह पैसे रहे।

मिठाईवाला मिठाइयाँ गिनने लगा।

"तो चार की दे दो। अच्छा, पच्चीस नहीं सही, बीस ही दो। अरे हाँ, मैं बूढ़ी हुई मोल-भाव अब मुझे ज्यादा करना आता भी नहीं।"

कहते हुए दादी के पोपले मुंह से जरा-सी मुस्कराहट फूट निकली।

रोहिणी ने दादी से कहा – "दादी, इससे पूछो, तुम इस शहर में और भी कभी आए थे या पहली बार आए हो? यहाँ के निवासी तो तुम हो नहीं।"

दादी ने इस कथन को दोहराने की चेष्टा की ही थी कि मिठाईवाले ने उत्तर दिया - "पहली बार नहीं, और भी कई बार आ चुका है।"

रोहिणी चिक की आड़ ही से बोली - "पहले यही मिठाई बेचते हुए आए थे, या और कोई चीज लेकर?"

मिठाईवाला हर्ष, संशय और विस्मयादि भावों में डूबकर बोला - "इससे पहले मुरली लेकर आया था, और उससे भी पहले खिलौने लेकर।"

10th Standard.indd 65 10-01-2019 12:09:47

रोहिणी का अनुमान ठीक निकला। अब तो वह उससे और भी कुछ बातें पूछने के लिए अस्थिर हो उठी। वह बोली - "इन व्यवसायों में भला तुम्हें क्या मिलता होगा?"

वह बोला - "मिलता भला क्या है! यही खाने भर को मिल जाता है। कभी नहीं भी मिलता है। पर हाँ; सन्तोष, धीरज और कभी-कभी असीम सुख जरूर मिलता है और यही मैं चाहता भी हूँ।"

"सो कैसे? वह भी बताओ।"

"अब व्यर्थ उन बातों की क्यों चर्चा करूँ? उन्हें आप जाने ही दें। उन बातों को सुनकर आप को दु:ख ही होगा।"

"जब इतना बताया है, तब और भी बता दो। मैं बहुत उत्सुक हूँ। तुम्हारा हर्जा न होगा। मिठाई मैं और भी कुछ ले लूँगी।"

अतिशय गम्भीरता के साथ मिठाईवाले ने कहा - "मैं भी अपने नगर का एक प्रतिष्ठित आदमी था। मकान-व्यवसाय, गाड़ी-घोड़े, नौकर-चाकर सभी कुछ था। स्त्री थी, छोटे-छोटे दो बच्चे भी थे। मेरा वह सोने का संसार था। बाहर संपत्ति का वैभव था, भीतर सांसारिक सुख था। स्त्री सुन्दरी थी, मेरी प्राण थी। बच्चे ऐसे सुन्दर थे, जैसे सोने के सजीव खिलौने। उनकी अठखेलियों के मारे घर में कोलाहल मचा रहता था। समय की गति! विधाता की लीला। अब कोई नहीं है। दादी, प्राण निकाले नहीं निकले। इसलिए अपने उन बच्चों की खोज में निकला हूँ। वे सब अन्त में होंगे, तो यहीं कहीं। आखिर, कहीं न जन्मे ही होंगे। उस तरह रहता, घुल-घुल कर मरता। इस तरह सुख-संतोष के साथ मरूँगा। इस तरह के जीवन में कभी-कभी अपने उन बच्चों की एक झलक-सी मिल जाता है। ऐसा जान पड़ता है, जैसे वे इन्हीं में उछल-उछलकर हँस-खेल रहे हैं। पैसों की कमी थोड़े ही है, आपकी दया से पैसे तो काफी हैं। जो नहीं है, इस तरह उसी को पा जाता हूँ।"

रोहिणी ने अब मिठाईवाले की ओर देखा - उसकी आँखें आँसुओं से तर हैं।

इसी समय चुन्नू-मुन्नू आ गए। रोहिणी से लिपटकर, उसका आँचल पकड़कर बोले - "अम्माँ, मिठाई!"

"मुझसे लो।" यह कहकर, तत्काल कागज की दो पुड़िया, मिठाइयों से भरी, मिठाईवाले ने चुन्नू-मुन्नू को दे दीं!

रोहिणी ने भीतर से पैसे फेंक दिए।

मिठाईवाले ने पेटी उठाई, और कहा - "अब इस बार ये पैसे न लूँगा।"

दादी बोली - "अरे-अरे, न न, अपने पैसे लिए जा भाई!"

10th Standard.indd 66 10-01-2019 12:09:47

तब तक आगे फिर सुनाई पड़ा उसी प्रकार मादक-मृदुल स्वर में - "बच्चों को बहलानेवाला मिठाईवाला।"

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. मिठाईवाला के व्यापार करने का तरीका क्या था?

2. मिठाईवाला बच्चों को किस प्रकार बहलाता था?

3. मिठाईवाले के गुणों के बारे में लिखिए।

4. मुरलीवाले की खुशी का कारण प्रस्तुत कीजिए।

5. मुरलीवाले की किस बात पर विजयबहादुर खुश हुए और क्या किये?

6. मिठाईवाला क्या कहकर अपना व्यापार करता है?

7. रोहिणी के मन में फेरी वाले के प्रति दया क्यों आयी?

8. मिठाईवाला का परिचय दीजिए।

9. भगवतीशरण बाजपेयी ने मिठाईवाले की करुण कहानी द्वारा क्या संदेश दिया है?

10th Standard.indd 67 10-01-2019 12:09:47

18

हींगवाला

सुभद्रा कुमारी चौहान

उनका जन्म नागपंचमी के दिन इलाहाबाद के निकट निहालपुर नामक गांव में रामनाथसिंह के जमींदार परिवार में हुआ था। बाल्यकाल से ही वे कविताएँ रचने लगी थीं। उनकी रचनाएँ राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण हैं।[1] सुभद्रा कुमारी चौहान, चार बहने और दो भाई थे। उनके पिता ठाकुर रामनाथ सिंह शिक्षा के प्रेमी थे और उन्हीं की देख-रेख में उनकी प्रारम्भिक शिक्षा भी हुई। १९१९ में खंडवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ विवाह के बाद वे जबलपुर आ गई थीं। १९२१ में गांधी जी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली वह प्रथम महिला थीं। वे दो बार जेल भी गई थीं।[2] सुभद्रा कुमारी चौहान की जीवनी, इनकी पुत्री, सुधा चौहान ने 'मिला तेज से तेज' नामक पुस्तक में लिखी है। इसे हंस प्रकाशन, इलाहाबाद ने प्रकाशित किया है। वे एक रचनाकार होने के साथ-साथ स्वाधीनता संग्राम की सेनानी भी थीं। डॉ० मंगला अनुजा की पुस्तक सुभद्रा कुमारी चौहान उनके साहित्यिक व स्वाधीनता संघर्ष के जीवन पर प्रकाश डालती है। साथ ही स्वाधीनता आंदोलन में उनके कविता के जरिए नेतृत्व को भी रेखांकित करती है।[3] १५ फरवरी १९४८ को एक कार दुर्घटना में उनका आकस्मिक निधन हो गया था।



सुभद्रा कुमारी चौहान

लगभग 35 साल का एक खान आंगन में आकर रुक गया। हमेशा की तरह उसकी आवाज सुनाई दी - ''अम्मा... हींग लोगी?''

पीठ पर बँधे हुए पीपे को खोलकर उसने, नीचे रख दिया और मौलसिरी के नीचे बने हुए चबूतरे पर बैठ गया। भीतर बरामदे से नौ - दस वर्ष के एक बालक ने बाहर निकलकर उत्तर दिया - ''अभी कुछ नहीं लेना है, जाओ!''

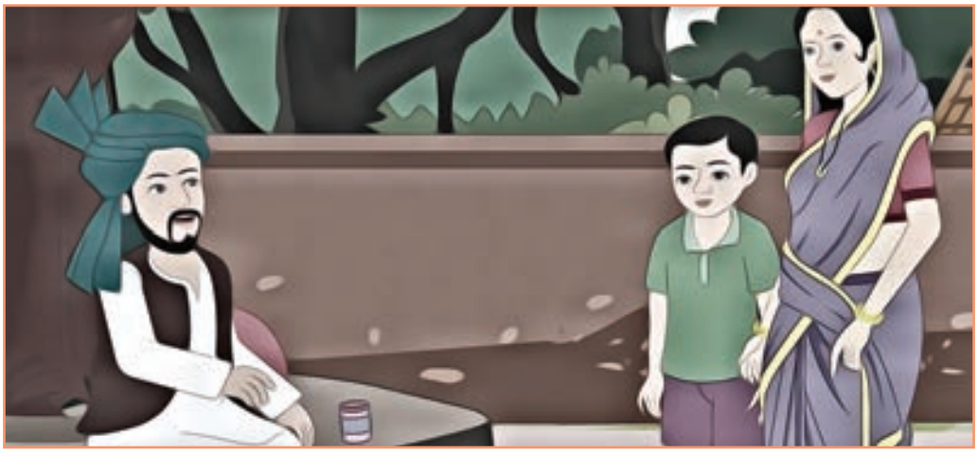
पर खान भला क्यों जाने लगा? जरा आराम से बैठ गया और अपने साफे के छोर से हवा करता हुआ

बोला- ''अम्मा, हींग ले लो, अम्मां! हम अपने देश जाता हैं, बहुत दिनों में लौटेगा ।''सावित्री रसोईघर से हाथ धोकर बाहर आई और बोली - ''हींग तो बहुत-सी ले रखी है खान! अभी पंद्रह दिन हुए नहीं, तुमसे ही तो ली थी।''

वह उसी स्वर में फिर बोला-''हेरा हींग है मां, हमको तुम्हारे हाथ की बोहनी लगती है। एक ही तोला ले लो, पर लो

10th Standard.indd 68 10-01-2019 12:09:48

जरूर।'' इतना कहकर फौरन एक डिब्बा सावित्री के सामने सरकाते हुए कहा- ''तुम और कुछ मत देखो मां, यह हींग एक नंबर है, हम तुम्हें धोखा नहीं देगा।''



वह उसी स्वर में फिर बोला-''हेरा हींग है मां, हमको तुम्हारे हाथ की बोहनी लगती है। एक ही तोला ले लो, पर लो जरूर।'' इतना कहकर फौरन एक डिब्बा सावित्री के सामने सरकाते हुए कहा- ''तुम और कुछ मत देखो मां, यह हींग एक नंबर है, हम तुम्हें धोखा नहीं देगा।''

सावित्री बोली- ''पर हींग लेकर करूंगी क्या? ढेर-सी तो रखी है।'' खान ने कहा-''कुछ भी ले लो अम्मां! हम देने के लिए आया है, घर में पड़ी रहेगी। हम अपने देश कूं जाता है। खुदा जाने, कब लौटेगा?'' और खान बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए हींग तोलने लगा। इस पर सावित्री के बच्चे नाराज हुए। सभी बोल उठे-''मत लेना मां, तुम कभी न लेना। जबरदस्ती तोले जा रहा है।'' सावित्री ने किसी की बात का उत्तर न देकर, हींग की पुड़िया ले ली। पूछा-''कितने पैसे हुए खान?''

''पैंतीस पैसे अम्मां!'' खान ने उत्तर दिया। सावित्री ने सात पैसे तोले के भाव से पांच तोले का दाम, पैंतीस पैसे लाकर खान को दे दिए। खान सलाम करके चला गया। पर बच्चों को मां की यह बात अच्छी न लगीं।

बड़े लड़के ने कहा-''मां, तुमने खान को वैसे ही पैंतीस पैसे दे दिए। हींग की कुछ जरूरत नहींथी।'' छोटा मां से चिढ़कर बोला-''दो मां, पैंतीस पैसे हमको भी दो। हम बिना लिए न रहेंगे।'' लड़की जिसकी उम्र आठ साल की थी, बड़े गंभीर स्वर में बोली-''तुम मां से पैसा न मांगो। वह तुम्हें न देंगी। उनका बेटा वही खान है।'' सावित्री को बच्चों की बातों पर हँसी आ रही थी। उसने अपनी हँसी दबाकर बनावटी क्रोध से कहा-''चलो-चलो, बड़ी बातें बनाने लग गए हो। खाना तैयार है, खाओ। ''

छोटा बोला- ''पहले पैसे दो। तुमने खान को दिए हैं।''

10th Standard.indd 69 10-01-2019 12:09:48

सावित्री ने कहा- ''खान ने पैसे के बदले में हींग दी है। तुम क्या दोगे?'' छोटा बोला- '' मिट्टी देंगे।'' सावित्री हँस पड़ी- ''अच्छा चलो, पहले खाना खा लो, फिर मैं रुपया तुड़वाकर तीनों को पैसे दूंगी।''

खाना खाते-खाते हिसाब लगाया। तीनों में बराबर पैसे कैसे बंटे? छोटा कुछ पैसे कम लेने की बात पर बिगड़ पड़ा- ''कभी नहीं, मैं कम पैसे नहीं लूंगा!'' दोनों में मारपीट हो चुकी होती, यदि मुन्नी थोड़े कम पैसे स्वयं लेना स्वीकार न कर लेती।

कई महीने बीत गए। सावित्री की सब हींग खत्म हो गई। इस बीच होली आई। होली के अवसर पर शहर में खासी मारपीट हो गई थी। सावित्री कभी- कभी सोचती, हींग वाला खान तो नहीं मार डाला गया? न जाने क्यों, उस हींग वाले खान की याद उसे प्राय: आ जाया करती थी। एक दिन सवेरे-सवेरे सावित्री उसी मौलसिरी के पेड़ के नीचे चबूतरे पर बैठी कुछ बुन रही थी। उसने सुना, उसके पति किसी से कड़े स्वर में कह रहे हैं- ''क्या काम है?' भीतर मत जाओ। यहाँ आओ। ''उत्तर मिला-''हींग है, हेरा हींग।'' और खान तब तक आंगन मैं सावित्री के सामने पहुँच चुका था। खान को देखते ही सावित्री ने कहा- ''बहुत दिनों में आए खान! हींग तो कब की खत्म हो गई।''

खान बोला- ''अपने देश गया था अम्मां, परसों ही तो लौटा हूँ। '' सावित्री ने कहा- '' यहाँ तो बहुत जोरों का दंगा हो गया है।'' खान बोला-''सुना, समझ नहीं है लड़ने वालों में।''

सावित्री बोली-''खान, तुम हमारे घर चले आए। तुम्हें डर नहीं लगा?''

दोनों कानों पर हाथ रखते हुए खान बोला-''ऐसी बात मत करो अम्मां। बेटे को भी क्या मां से डर हुआ है, जो मुझे होता?''और इसके बाद ही उसने अपना डिब्बा खोला और एक छटांक हींग तोलकर सावित्री को दे दी। रेजगारी दोनों में से किसी के पास नहीं थी। खान ने कहा कि वह पैसा फिर आकर ले जाएगा। सावित्री को सलाम करके वह चला गया।

इस बार लोग दशहरा दूने उत्साह के साथ मनाने की तैयारी में थे। चार बजे शाम को मां काली का जुलूस निकलने वाला था। पुलिस का काफी प्रबंध था। सावित्री के बच्चों ने कहा- "हम भी काली का जुलूस देखने जाएंगे ।"

सावित्री के पति शहर से बाहर गए थे। सावित्री स्वभाव से भीरु थी। उसने बच्चों को पैसों का, खिलौनों का, सिनेमा का, न जाने कितने प्रलोभन दिए पर बच्चे न माने, सो न माने। नौकर रामू भी जुलूस देखने को बहुत उत्सुक हो रहा था। उसने कहा-"भेज दो न मां जी, मैं अभी दिखाकर लिए आता हूँ।" लाचार होकर सावित्री को जुलूस देखने के लिए बच्चों को बाहर भेजना पड़ा। उसने बार-बार रामू को ताकीद की कि दिन रहते ही वह बच्चों को लेकर लौट आए।

10th Standard.indd 70 10-01-2019 12:09:48

बच्चों को भेजने के साथ ही सावित्री लौटने की प्रतीक्षा करने लगी। देखते-ही-देखते दिन ढल चला। अंधेरा भी बढ़ने लगा, पर बच्चे न लौटे अब सावित्री को न भीतर चैन था, न बाहर। इतने में उसे-कुछ आदमी सड़क पर भागते हुए जान पड़े। वह दौड़कर बाहर आई, पूछा-''ऐसे भागे क्यों जा रहे हो? जुलूस तो निकल गया न।"

एक आदमी बोला-''दंगा हो गया जी, बड़ा भारी दंगा!' सावित्री के हाथ-पैर ठंडे पड़ गए। तभी कुछ लोग तेजी से आते हुए दिखे। सावित्री ने उन्हें भी रोका। उन्होंने भी कहा-''दंगा हो गया है!"

अब सावित्री क्या करे ? उन्हीं में से एक से कहा-''भाई, तुम मेरे बच्चों की खबर ला दो। दो लड़के हैं, एक लड़की। मैं तुम्हें मुंह मांगा इनाम दूंगी।" एक देहाती ने जवाब दिया-''क्या हम तुम्हारे बच्चों को पहचानते हैं मां जी? '' यह कहकर वह चला गया।

सावित्री सोचने लगी, सच तो है, इतनी भीड़ में भला कोई मेरे बच्चों को खोजे भी कैसे? पर अब वह भी करें, तो क्या करें? उसे रह-रहकर अपने पर क्रोध आ रहा था। आखिर उसने बच्चों को भेजा ही क्यों? वे तो बच्चे ठहरे, जिद तो करते ही, पर भेजना उसके हाथ की बात थी। सावित्री पागल-सी हो गई। बच्चों की मंगल-कामना के लिए उसने सभी देवी-देवता मना डाले। शोरगुल बढ़कर शांत हो गया। रात के साथ-साथ नीरवता बढ़ चली। पर उसके बच्चे लौटकर न आए। सावित्री हताश हो गई और फूट-फूटकर रोने लगी। उसी समय उसे वही चिरपरिचित स्वर सुनाई पड़ा- "अम्मा!"

सावित्री दौड़कर बाहर आई उसने देखा, उसके तीनों बच्चे खान के साथ सकुशल लौट आए हैं। खान ने सावित्री को देखते ही कहा-''वक्त अच्छा नहीं हैं अम्मां! बच्चों को ऐसी भीड़-भाड़ में बाहर न भेजा करो।" बच्चे दौड़कर मां से लिपट गए ।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. हींगवाला क्या बेचता है?
2. खान की उम्र कितने वर्ष की है?
3. घर के चबूतरे के पास कौन-सा पेड़ था?
4. हींग बेचने के लिए वह क्या बोलता है?
5. हींग लेने मना किया तो खान ने सावित्री से क्या कहा?
6. सावित्री ने कितने दिन पहले हींग खरीदा था?

10th Standard.indd 71 10-01-2019 12:09:48

7. हींग का भाव कितना था? सावित्री ने कितने तोले खरीदी।

8. हींग लेने के बाद बच्चों ने माँ से क्या-क्या कहा?

9. बच्चों की बात सुनकर सावित्री को क्यों हंसी आई?

10. छोटी बेटी ने क्यों कहा कि खान ही सावित्री का बेटा है?

11. पैसे देने पर भी बच्चे क्यों आपस में झगड़ते हैं?

12. सावित्री ने खान से क्यों पूछा कि हमारे घर आने के डर नहीं लगा?

13. दशहरे के दिन किस देवी का जुलूस निकलने वाला था?

14. बच्चों को क्यों सावित्री जुलूस देखने नहीं ले जाना चाहती थी?

15. बच्चों के जुलूस जाने की जिद्द को बदलने का क्या-क्या प्रलोभन दिया?

16. बच्चों को किसने साथ जुलूस देखने भेजा?

17. सावित्री नागिने वाले से कारण पूछा तो उन्होंने क्या कहा?

18. सावित्री ने देहाती से क्या कहा? देहाती ने क्या जवाब दिया?

19. सावित्री को अपने पर ही क्रोध नहीं आया?

20. सावित्री हताश होकर क्यों रोने लगी?

21. बच्चों को कौन सुरक्षित घर ले आया?

22. बच्चों को सावित्री के हाथ सौंपकर खान ने क्या कहा?

23. इस कहानी से कौन-सी सीख मिलती है?

24. इस कहानी की लेखिका कौन हैं?

25. भारत के वसुदैवकुटुंबकम की भावना इस कहानी के द्वारा सार्थक है, क्यों?

10th Standard.indd 72 10-01-2019 12:09:48

19

बाप का हृदय

सुदर्शन

सुदर्शन (1895-1967) प्रेमचन्द परम्परा के कहानीकार हैं। इनका दृष्टिकोण सुधारवादी है। ये आदर्शोन्मुख यथार्थवादी हैं। मुंशी प्रेमचंद और उपेन्द्रनाथ अश्क की तरह सुदर्शन हिन्दी और उर्दू में लिखते रहे हैं। उनकी गणना प्रेमचंद संस्थान के लेखकों में विश्वम्भरनाथ कौशिक, राजा राधिकारमणप्रसाद सिंह, भगवतीप्रसाद वाजपेयी आदि के साथ की जाती है। अपनी प्रायः सभी प्रसिद्ध कहानियों में इन्होंने समस्यायों का आदशर्वादी समाधान प्रस्तुत किया है। चौधरी छोटूराम जी ने कहानीकार सुदर्शन जी को जाट गजट का सपादक बनाया था। केवल इसलिये कि वह पक्के आर्यसमाजी थे और आर्य समाजी समाज सुधारर होते हैं। एक गोरे पादरी के साथ टक्कर लेने से गोरा शाही सुदर्शन जी से चिढ़ गई। चौ. छोटूराम, चौ. लालचन्द से आर्यसमाजी सपादक को हटाने का दबाव बनाया। चौ. छोटूराम अड़ गये। सरकार की यह बात नहीं मानी। यह घटना प्रथम विश्व युद्ध के दिनों की है। सुदर्शन जी 1916-1917 में रोहतक में कार्यरत थे।



सुदर्शन

लाला राजारम ने दफतर से आते ही क्रोध-भरे स्वर में अपनी स्त्री से कहा,-"शादी ने आज फिर चोरी की।"

कौशल्या लड़की के लिए कुर्ता सी रही थी, पति की आवाज सुनकर उसने सिर उठाया और आश्चर्य के साथ बोली,-"बड़ी पाजी लड़का है। रोज मार खाता है, मगर इसका आँखें नहीं खुलती। आज क्या चुराया है?"

"कल रात जेब में सवा रुपया रखा था, आज दफ्तर जाकर देखा तो रुपया था, चवन्नी न थी, बस इसी के हाथ लग गयी होगी, कहाँ है?" जरा बुलाओ तो पूछूँ।

कौशल्या का कलेजा धड़कने लगा उसने समझ लिया कि आज फिर लड़की की खैर नहीं, झूठी हँसी हँसकर बोली, "तुम कपड़े तो बदल लो, दफ्तर से थककर आये हो, आते ही क्रोध करोगे, तो स्वास्थ्य बिगड़ जाएगा।"

10th Standard.indd 73 10-01-2019 12:09:49

राजाराम - तुम्हारी बातें मैं खूब समझता हूँ। तुम्हारी इच्छा है मैं उसे कुछ न कहूँ। पर यह कभी न होगा, मैं आज उसकी हड्डियाँ तोड़े बिना रहूँगा, बोलो, कहाँ हैं?

राजाराम – यही कि यह मेरा बाप नहीं।

कौशल्या – चलो, चुप रहे, अगर कल को मुझे कुछ हो जाए, तो इन बच्चों का क्या हो? रो-रोकर मर जाएं तब भी तुमसे आशा नहीं कि इन्हें चुप भी करा जाओ।

राजाराम – लो, अब मरने को भी तैयार हो गयीं?

कौशल्या – कैसे आदमी हो, हर समय तने ही रहते हो।

राजाराम – यह क्रोध अब उतरेगा भी या नहीं।

कौशल्या – परमेश्वर ने बच्चे दे दिए, यह बुद्धि न दी कि बालक शरारतें भी क्या करते हैं। बचपन ही में तुम्हारी-सी समझ कहाँ से ले आएँ?

राजाराम – अगर हुक्म हो तो आज से मारना छोड़ दूँ।

कौशल्या – क्यों छोड़ दो? मैं यह कभी न कहूँगी। बाप की तरह मारो, मगर बाप की तरह प्यार भी तो करो।

राजाराम – और जिसे प्यार करना न आए, वह क्या करें? मेरे ख्याल में मार-पीट में कर देता हूँ, प्यार तुम कर लिया करो। अब सारा काम मैं ही कैसे कर लूँ?

कौशल्या – बस, यही तो तुममें ऐब है, हर बात को हँसी में उड़ा देते हो!

राजाराम - तो अब हँसना भी पाप हो गया?

कौशल्या – सारा दिन देखते-देखते गुजरता है और घर आते ही कोई न कोई ऐसी बात कर देते हो कि देह में आग लग जाए।

राजाराम – (हँसकर) चलो, आज शादी से कुछ न कहूँगा, अब तो देवी खुश हुई? कौशल्या भी हँसी पड़ी, प्यार-भरी दृष्टि से पति की तरफ देखकर बोली -"अपने कमरे में चलकर कपड़े बदलो, इतने में मैं दूध गरम कर लाऊँ? "

10th Standard.indd 74 10-01-2019 12:09:49

शादी के सिर से मुसीबत टल गयी। इतवार का दिन था। लाला राजाराम धूप में लेटे अख़बार देख रहे थे, इतने में कौशल्या लड़की को लिए हुए आकर उनके पास बैठ गयी और अख़बार छीनकर बोली- "लो सुनो! आज तुम्हारी बिटिया ने एक नयी बात सीखी है।"

राजाराम - मालूम होता है, अख़बार न देखने दोगी। बड़ा अजीब लेख है।

कौशल्या – इसकी बात उससे भी अजीब है।

राजाराम – भाई को बुलाना सीख लिया होगा।

कौशल्या - वाह! मेरी बेटी क्या ऐसी मामूली बातें सीखेगी? तुम्हारा दिल खुश कर देगी।

यह कहकर कौशल्या ने शकुंतला से कहा, क्यों बेटी! तू मरेगी या नहीं मरेगी?

शन्नी ने माँ की तरफ देखकर जोर से सिर हिलाया और कहां- "आँ"

राजाराम को हँसी आ गयी।

कौशल्या – तू मरना जानती है?

शन्नी ने फिर उसी तरह से सिर हिलाया और तोतली जबान से कहा-"आँ" कौशल्या - कैसे मरेगी? जरा बाबूजी को मरकर दिखा दे।

शन्नी अपना नखरा दिखाने को झट मां की गोद से उतर गई, इसके बाद उसने कौशल्या के सिर से दुपट्टा उतार लिया और ओढ़कर जमीन पर चुपचाप लेट गई। राजा राम हँस-हँसकर लोट-पोट हो जाते थे।

कौशल्या – (धीरे से) जरा देखते चलो।(ऊंची आवाज से) शन्नी!ओ! शन्नी! बाप रे बाप! कैसी लड़की है, पता नहीं कहाँ चली गई,(सहसा चौककर) अरे, यह तो यहाँ लेटी हुई है।शन्नी ने उसी तरह लटे-लेटे मगर सिर हिला-हिलाकर उत्तर दिया -"छन्नी नहीं, छन्नी नहीं, माँ! छन्नी नहीं ईई।"

कौशल्या - तो क्या शन्नी मर गई? शन्नी – (सिर हिलाकर)आँ, मल गयी। राजाराम ने हँसकर शन्नी को जमीन से उठा लिया और उसका मुंह चूमकर कहा,-"क्यों बिटिया!मरने की क्या जरूरत है? तेरी मां को बड़ा दुख होगा, अब न मरना।"

शन्नी ने दोनों हाथों से बाप का मुंह पकड़ लिया और उसकी आंखों में अपनी शक्ल देखते-देखते कहा -"वो ओ ओ छन्नी!वो ओ ओ छन्नी!"

10th Standard.indd 75 10-01-2019 12:09:49

कौशल्या पर ब्रह्मानन्द की मस्ती छा गयी, वह की दूसरी दुनिया में पहुँच गयी। इतनीकि उसे दो हजार के आभूषण लेकर भी न होती। वह यही चाहती थी, उसकी बड़ी ख्वाहिश यही थी, वह अपने पति का स्नेह मांगती थी। पर अपने लिए नहीं अपनी संतान के लिए। यकायक उसे शादी का ध्यान आया, घर में मिठाई बांट रही हो, तो माँ को सारे बच्चों का ख्याल आता है। वह यह नहीं देख सकती कि एक बच्चा सब कुछ ले जाए और दूसरा मुंह ताकता रह जाए। आज उसके यहाँ पिता का प्यार बँट रहा था। पता नहीं कितने दिनों बाद, बहन अपना भाग ले चुकी थी। अब भाई की बारी थी। कौशल्या ने दुपट्टा ओढ़कर शादी को गोद में लिया और जल्दी से नीचे उतर गई, वहाँ शादी कागज की नाव बना रहा था। कौशल्या ने अपना मुंह धोया, सिर पर तेल डाला, कंघी की, नए कपड़े पहनाए और धीरे से कहा, -"जा जाकर बाबू जी को कपड़े दिखा आ।"

शादी ने नए कपड़े पहनकर दिल में फूला ना समाता था, मगर बाप के पास जाने की बात सुनकर उसका चेहरा उतर गया। वह सीढ़ियां चढ़ने लगा पर उसका दिल धड़क रहा था।

वह बाप के सामने जाकर खड़ा हो गया, मगर वे फिर अख़बार देख रहे थे, उनको मालूम भी न हुआ कि लड़का सामने खड़ा है। शादी ने बहुत देर तक प्रतीक्षा की मगर जब बाप ने उसकी ओर आँख उठाकर देखा भी नहीं, तब उसने कहा -"पिताजी, नए कपड़े।"

राजाराम ने चौंककर सिर उठाया और फिर अखबार पढ़ते हुए कहा –"क्या है? शादी - नए कपड़े।

आजा राम ने बिना सिर उठाए उत्तर दिया,-"तुमने नए कपड़े पहने हैं बहुत अच्छा किया, अब जाओ जाकर खेलो, मैं अखबार पढ़ रहा हूँ।"

शादी की जान छूटी, परंतु कौशल्या संतुष्ट न हुई। वह सीढ़ियों के पास खड़ी यह सब कुछ देख रही थी। शादी नीचे जाने लगा तो उसने उसे फिर पकड़ लिया और धीमे से उसके कान में कहा,"पीछे से जाकर बाबू जी की गर्दन में बाँह डाल दे।"

शादी फिर उदास हो गया। वह सोचता था, नए कपड़े पहने हैं, चलकर अपने दोस्तों को दिखाऊंगा। मगर माँ ने मुझे फिर पिताजी की ओर धकेल दिया।

अब शादी के लिए कोई और रास्ता न था, उसने जान पर खेलकर अपनी नन्हीं-नन्हीं बाहें खोलीं और बड़े जोर के साथ बाप के गले से लिपट गया। राजाराम अखबार पढ़ने में लीन थे, झटका जो लगा, तो उनके हाथ से अखबार गिर गया, चौंककर बोले,-"ओ कौन शादी?"

शादी ने उनकी तरफ मुसकुराकर देखा, उस समय यह मुस्कुराहट कैसी फीकी,कितनी सौंदर्यहीन दिखाई देती थी।

10th Standard.indd 76 10-01-2019 12:09:49

कौशल्या – तू मरना जानती है?

शन्नी ने फिर उसी तरह से सिर हिलाया और तोतली जबान से कहा-"आँ" कौशल्या - कैसे मरेगी? जरा बाबूजी को मरकर दिखा दे।

शन्नी अपना नखरा दिखाने को झट मां की गोद से उतर गई, इसके बाद उसने कौशल्या के सिर से दुपट्टा उतार लिया और ओढ़कर जमीन पर चुपचाप लेट गई। राजा राम हँस-हँसकर लोट-पोट हो जाते थे।

कौशल्या – (धीरे से) जरा देखते चलो।(ऊंची आवाज से) शन्नी!ओ! शन्नी! बाप रे बाप! कैसी लड़की है, पता नहीं कहाँ चली गई,(सहसा चौककर) अरे, यह तो यहाँ लेटी हुई है।शन्नी ने उसी तरह लटे-लेटे मगर सिर हिला-हिलाकर उत्तर दिया -"छन्नी नहीं, छन्नी नहीं, माँ! छन्नी नहीं ईई।"

कौशल्या - तो क्या शन्नी मर गई? शन्नी – (सिर हिलाकर)आँ, मल गयी। राजाराम ने हँसकर शन्नी को जमीन से उठा लिया और उसका मुंह चूमकर कहा,-"क्यों बिटिया!मरने की क्या जरूरत है? तेरी मां को बड़ा दुख होगा, अब न मरना।"

शन्नी ने दोनों हाथों से बाप का मुंह पकड़ लिया और उसकी आंखों में अपनी शक्ल देखते-देखते कहा -"वो ओ ओ छन्नी!वो ओ ओ छन्नी!"

कौशल्या पर ब्रह्मानन्द की मस्ती छा गयी, वह की दूसरी दुनिया में पहुँच गयी। इतनीकि उसे दो हजार के आभूषण लेकर भी न होती। वह यही चाहती थी, उसकी बड़ी ख्वाहिश यही थी, वह अपने पति का स्नेह मांगती थी। पर अपने लिए नहीं अपनी संतान के लिए। यकायक उसे शादी का ध्यान आया, घर में मिठाई बांट रही हो, तो माँ को सारे बच्चों का ख्याल आता है। वह यह नहीं देख सकती कि एक बच्चा सब कुछ ले जाए और दूसरा मुंह ताकता रह जाए। आज उसके यहाँ पिता का प्यार बँट रहा था। पता नहीं कितने दिनों बाद, बहन अपना भाग ले चुकी थी। अब भाई की बारी थी। कौशल्या ने दुपट्टा ओढ़कर शादी को गोद में लिया और जल्दी से नीचे उतर गई, वहाँ शादी कागज की नाव बना रहा था। कौशल्या ने अपना मुंह धोया, सिर पर तेल डाला, कंघी की, नए कपड़े पहनाए और धीरे से कहा, -"जा जाकर बाबू जी को कपड़े दिखा आ।"

शादी ने नए कपड़े पहनकर दिल में फूला ना समाता था, मगर बाप के पास जाने की बात सुनकर उसका चेहरा उतर गया। वह सीढ़ियां चढ़ने लगा पर उसका दिल धड़क रहा था।

वह बाप के सामने जाकर खड़ा हो गया, मगर वे फिर अख़बार देख रहे थे, उनको मालूम भी न हुआ कि लड़का सामने खड़ा है। शादी ने बहुत देर तक प्रतीक्षा की मगर जब बाप ने उसकी ओर आँख उठाकर देखा भी नहीं, तब उसने कहा -"पिताजी, नए कपड़े।"

10th Standard.indd 77 10-01-2019 12:09:49

राजाराम ने चौंककर सिर उठाया और फिर अखबार पढ़ते हुए कहा –"क्या है? शादी - नए कपड़े।

आजा राम ने बिना सिर उठाए उत्तर दिया,-"तुमने नए कपड़े पहने हैं बहुत अच्छा किया, अब जाओ जाकर खेलो, मैं अखबार पढ़ रहा हूँ।"

शादी की जान छूटी, परंतु कौशल्या संतुष्ट न हुई। वह सीढ़ियों के पास खड़ी यह सब कुछ देख रही थी। शादी नीचे जाने लगा तो उसने उसे फिर पकड़ लिया और धीमे से उसके कान में कहा,"पीछे से जाकर बाबू जी की गर्दन में बाँह डाल दे।"

शादी फिर उदास हो गया। वह सोचता था, नए कपड़े पहने हैं, चलकर अपने दोस्तों को दिखाऊंगा। मगर माँ ने मुझे फिर पिताजी की ओर धकेल दिया।

अब शादी के लिए कोई और रास्ता न था, उसने जान पर खेलकर अपनी नन्हीं-नन्हीं बाहें खोलीं और बड़े जोर के साथ बाप के गले से लिपट गया। राजाराम अखबार पढ़ने में लीन थे, झटका जो लगा, तो उनके हाथ से अखबार गिर गया, चौंककर बोले,-"ओ कौन शादी?"

शादी ने उनकी तरफ मुसकुराकर देखा, उस समय यह मुस्कुराहट कैसी फीकी,कितनी सौंदर्यहीन दिखाई देती थी।

राजाराम ने शादी की ओर क्रोध से देखा और कड़ककर कहा,"जाकर खेल! नए कपड़े पहने हैं, तो क्या मुझे अख़बार न पड़ने देगा?"

डर कर चला गया और चुपचाप नीचे उतर गया। कौशल्या की आंखों से आंसू आ गये। उसने ठंडी आह भरी और अपनों को ढेरों में जाकर चारपाई पर लेट गई। इस समय उसकी आंखों में पानी था हृदय में आग, रह-रहकर सोचती थी कैसा कठोर हृदय है, इन्हें बच्चों से जरा भी स्नेह नहीं, अगर हंस कर दो बातें कर लेते हैं तो इनका क्या बिगड़ जाता? इस तरह धमका दिया, जैसे कोई फकीर का लड़का भीख मांगने आया हो, इन्हें अखबार की इच्छा है बच्चे की चाह नहीं। अभी ना सोचा कि गरीब का दिल छोटा हो जाएगा। कौशल्या की आंखों में आंसू उसके गालों पर बहने लगे शकुंतला ने मां के मुंह पर अपने सुकोमल हाथ फेरते हुए कहा-"मां।"

कौशल्या ने बेटी का मुंह चूम लिया और रोते-रोते कहा,- "क्योंशन्नी, क्या है?"

शन्नी ने मन को मोह लेने वाले ढंग से झूम-झूमकर कहा, "शन्नी नहीं ई ई ई, शन्नी नहीं ई ई ई।" कौशल्या की आंखें अपने बेटे के दुर्भाग्य पर आँसू बहा रही थी, मगर उसके होंठ बेटी की तोतली बातों पर हँस रहे थे, जैसे कभी-कभी वर्षा में धूप निकल आती है।

राजाराम अपने अखबार के मनोरंजन लेख में तन्मय थे और कौशल्या के नारी हृदय में सुख और दुख के कैसे वेदनापूर्ण भाव पैदा हो रहे हैं, इसका उन्हें जरा भी पता ना था।

10th Standard.indd 78 10-01-2019 12:09:49

'बाप का हृदय' कहानी पर आधारित प्रश्न

1. 'बाप का हृदय' कहानी के प्रमुख पात्र कौन हैं?

2. राजाराम के गुस्से का क्या कारण था?

3. राजाराम के चरित्र की विशेषताओं पर पाँच वाक्य लिखिए।

4. कौशल्या के मातृत्व पर पाँच वाक्य लिखिए।

5. शादी के हानि-लाभ पर पाँच वाक्य लिखिए।

6. कौशल्या ने राजाराम के गुस्से को कैसे ठंडा किया? विवरण दीजिए।

7. राजाराम के बाप के हृदय में कैसे भाव थे?

8. शकुन्तला ने अपने माता-पिता को किस प्रकार आनंदित किया?

9. 'बाप का हृदय' कहानी का सार अपने शब्दों में लिखिए। "माँ, मैं भी राखी बाँधूँगी।"

10th Standard.indd 79 10-01-2019 12:09:49

20

बदला

आरिगपूडी

आधुनिक हिन्दी कहानी के विकास में आपका महत्वपूर्ण स्थान है व आप आधुनिक हिंदी कहानी निर्माताओं में से एक थे। भाव, भाषा एवं शैली की दृष्टि से ये कहानियाँ आधुनिक कहानी का प्रतिनिधित्व करती हैं।

मामूली आदमी, मामूली बात, मामूली रकम,....सभी कुछ मामूली। ऐसा कोई मामला नहीं, जिस पर कोई खास गौर किया जाए। पर कहने वाले कहते सुने गए हैं,....बूँद-बूँद मिलकर ही बाढ़ बनती है और उसमें पहाड़ के पहाड़ भी कट जाते हैं।बात यों हैं.....धम्मपट्टनम में एक अस्पताल है, उस इलाके का सबसे बड़ा। बहुत से डॉक्टर हैं, वे भी अपने को कभी-कभी सुविधानुसार मामूली बताते हैं। हो सकता है। यह विनम्रता हो और पदा भी....मैं नहीं जानता। पर उनके मातहत बहुत से नौकर चाकर हैं....नर्स, क्लर्क, भंगी, मेहतर, वगैरह, यों मामूली आदमी हैं और इनको किसी आड़-परदे की ज़रूरत नहीं है।

अस्पताल है,तिस पर सरकारी मुक्त है, बड़े-बड़े लोगों से थोड़ा बहुत रुपया जरूर लिया जाता है, पर बिना पैसे के वहाँ कुछ नहीं होता, न मरीज दाखिल किया जाता है, इलाज किया जाता है, ना खारिज किया जाता है। कदम-कदम पर घूसखोरी, भ्रष्टाचार, दिन-दहाड़े 'मालूम' वसूला जाता है और जो इसे वसूलते हैं उनकी नजर में यह मामूली बात है।

मामूली लोग हैं, घूस भी लेंगे तो कितना लेंगे.....यह ही मामूली रकम। ज़्यादा-से-ज़्यादा पाँच-दस रुपये और यह लेना-देना इतना आम है कि किसी को यह गैर मामूली नहीं मालूम होता। कोई देन क आदी हो गया है, तो कोई लेने का।

शायद कोई इन सब बातों के बारे में सोचता भी न, अगर कोटय्या हो हल्ला न करता, रोता-धोता न। कोटय्या अस्पताल के मामूली आदमियों से भी अधिक मामूली है। मरा-पिटा किसान मज़दूर। कभी एक डेढ़ एकड़ ज़मीन थी, पर पास की नहीं में बाढ़ आई और वह ज़मीन कटकटा कर उसमें जा मिली। तब से वह दूसरों की खेती में मजदूरी करता है। खास पढ़ा-लिखा नहीं है, निरा कालाक्षर भैंस बराबर भी नहीं। अख़बार बाँच लेता है।

उसकी पत्नी गर्भवती थी, नवाँ महीना आते-आते उसके पैर सूज गए। रक्तचाप भी बढ़ा-बढ़ा गया और भी कितनी ही उलझनें। उसनें अपने मालिक की बैलगाड़ी माँगी और उसमें अपनी पत्नी को लिटाकर वह धम्मपट्टनम पहुँचा। बीस मील तक कोई अस्पताल न था, डॉक्टर न था।

10th Standard.indd 80 10-01-2019 12:09:49

अस्पताल के फाटक के पास पहुँचा तो रोक दिया गया। बहुत मिन्नत करने के बाद और चवन्नी हाथ में थमाने के बाद, दरबान ने उसे अंदर जाने दिया। शायद कुछ सफर के कारण या किसी और कारण, अस्पताल में घुसते ही उसकी पत्नी बेहोश हो गई। कोटय्या ने सोचा कि लोग भागे-भागे आयेंगे....दो चार आये भी पर जिनको आना चाहिए था, वे नहीं आये। अस्पताल है शायद वहाँ बेहोशी भी मामूली बात है। किसी को मनाया, किसी के हाथ जोड़े, किसी के पैरो पड़ा, पर सब यूँ देखकर चलते हुए जैसे उससे भी अधिक कोई सीरियस बीमार हो और वे उसको देखने में लगे हों।

कोटय्या दुकानदार न था, अस्पताल भी पहली बार आया था, पहली बार उसकी पत्नी गर्भवती हुई थी। पैसेवाला न था कि पैसे की करामात जानता। इतना जना-सुना भीन था कि उस अस्पताल में बिना "मामूल" के मुर्दे भी नहीं हटाए जाते थे। वह चिंतित खड़ा रहा। पसीना-पसीना हो गया, घुटने थरथराने लगे। हट्टा-कट्टा आदमी, काँपने लगा....भय, विवशता, अज्ञान, अंधकार।

कुछ देर बाद ए कलेटी ड़क्टर आई, बाद में उसको पता लगा कि उनका नाम पद्मा था। उन्होंने कोटय्या की पत्नी को अंदर भरती करवा दिया नर्सों ने उनके सामने उसे देखा-भाला भी और कोटय्या बाहर खड़ा-खड़ा भगवान को हाथ जोड़ रहा था। "....कुछ भी हो....सुशीला जाती रहे, बच्चा हो तो भला, न हो तो भला पर वह ज़िन्दी रहे, हे भगवान.....।" नर्से अंदर आ जा रही थीं, उस कमरे में और भी कई मरीज़ थे। कोटय्या उनके आता जाता देख, न मालूम क्या-क्या सोच रहा था.....ऐसा भी क्या हो गया सुशीला को, कि इन लोगों की इतनी भागदौड़ मची हुई है। उसकी फिक्र बढ़ी उसका डर बढ़ा।

कुछ देर बाद, उसको बताया गया कि प्रसव के पहले ही, उसकी पत्नी के प्राण चले गये। वह लंबी साँसे खींचता अंदर गया। उसने देखा कि उसकी पत्नी वहीं पड़ी थी, जहाँ उसको पहले लिटाया गया था। कुछ नहीं किया गया था। नर्सों की भाग-दौड़ शायद किसी और के लिए थी। बेपढ़ ही सही, कोटय्या इतना बुड़बक न था कि यह आँखों देखी बात न समझ सके।

दो चार आदमियों ने आकर मुरदा एक तरफ ले जाकर रख दिया और उसके इधर-उधर इस तरह प्रदक्षिणा करने लगे जैसे उनको "मामूल" मिलना अभी बाकी हो। किसी की पत्नी मरती है तो मरे, अपनी बला से। उनको क्या? उन्होंने काम किया है और उनको काम के पैसे मिलने ही चाहिए। कोटय्या पत्नी को देखता-देखता खड़ा-खड़ा जम-सा गया। वे उसको घूरते-घूरते चले गये।

कोटय्या का गाँव दूर था और धम्मपट्टनम में उसकी जान-पहचान का कोई न था। क्या करता? मुरदे को उसी गाड़ी में, वह गाँव ले गया। बैलों को अगर गाँव रास्ता याद न होता तो जाने वह कहाँ पहुँचता! गाड़ी अपने आप चलती जाती थी और वह बिलखता, सिसकता, पत्नी की बगल में, गाड़ी में ही पड़ा रहा।

10th Standard.indd 81 10-01-2019 12:09:49

"पत्नी ही तो सब कुछ थी! इस संसार में जब वह नहीं है, तो मेरे लिए संसार ही नहीं है....मैं भी उसी रास्ते चला जाऊँगा, जिस रास्ते वह गयी है, उसी जगह जाकर धरना दूँगा, जहाँ वह जीने के लिए गयी थी और अब मरकर वापिस जा रही है....ये अस्पताल नहीं बूचड़खाने हैं...मर जाऊँगा, पर मरते-मरते दुनिया की आँखों खोलता जाऊँगा....." उसका दुःख इस रोष में उमड़ता और रोष एक दृढ़ निश्चय के रूप में उसके मन में जड़ कर गया।

"जीकर क्या पाऊँगा? मर जाऊँ.....यही बात कोटय्या के मन में गाड़ी के पहिए की तरह चक्कर काटती जाती थी,....दुख, क्रोध, प्रतिकार, सभी मन में गाड़ी के चरमर की तरह गुन-गुना रहे थे।"

गाँव में हर किसी ने हाथ दिया और पत्नी का दहन संस्कार हो गया कोटय्या अपनी सूनी झोपड़ी में पल भर न बैठ सका। तेरहवीं के होते ही, वह धम्मपट्टनम चला आया। अस्पताल के सामने भूख हड़ताल करने लगा। कभी गाँव में गाँधी के नारे लगाए थे, पर यह न सोचा था कि कभी उसे यूँ ,सत्याग्रह करना होगा।

एक दिन बीता, कहीं कोई खलबली न मची। दूसरा दिन बीता, कहीं कोई हल्ला-गुल्ला नहीं। तीसरा दिन भी बीता, किसी के कान पर जूँ तक न रेंगी। चौथा दिन बीता, कहीं कोई सनसनी न हुई धम्मपट्टनम का अस्पताल जैसे रोज़ चलता था, चलता रहा।

कोटय्या ने अस्पताल के फाटक के पास नीम के पेड़ के नीचे धरना दे रख था। और उसके पास एक कपड़े पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था-"इस अस्पताल से प्राणखाऊ घूसखोरी हटाओ।" यह कपड़ा वह शायद स्वयं न लगाता यदि उसको सुझाव व दिया जाता। इसके बावजूद उसको इलाज के लिया हुआ, गँवार समझकर लोग नज़र फेरकर चले जाते थे।

जब वह ठीक तरह न खड़ा हो पाता था, न बैठे ही पाता था, वह कड़ी ज़मीन पर लेट गया। लोग उसको पागल समझ रहे थे और जो कुछ अस्पताल में हो रहा था, असाधारण नहीं लग रहा था, इलाज करवाने के लिए अगर पाँच-दस रुपये यूँ बिखेरने पड़ जाएं, तो क्या खराबी है। खैर!

पाँचवां जिन धम्मपट्टनम की बड़ी डॉक्टर, पद्मा जिनकी मेहरबानी से उसकी पत्नी को एक कमरे में फर्श पर ही कही, कम-से-कम जगह मिल गयी थी उससे मिलने आयी। समझाया-बुझाया, पर वे भी शायद समझ न पा रही थीं, कि जिसको अस्पताल में दाखला नहीं चाहिए। उसको अस्पताल के बाहर धरना देने की क्या ज़रूरत है। हाँ, उन्होंने अपना अफसोस ज़रूर प्रकट किया, पर कोटय्या ने अपना सत्याग्रह यथापूर्व जारी रखी।

अगर उन दिनों समाचार-पत्रों में, एकाएक भ्रष्टाचार के विरूद्ध खबरें न छपतीं तो कोटय्या शायद "शहीदों" में शामिल हो जाता और शहीद न माना जाता। शहर के दो-तीन नेता उससे मिलने आये। उसने उनसे अपनी शिकायत की, उनको शिकायत करता देख और कई शिकायत करने लगे। देखते-देखते शिकायतों का ढेर-सा लगा

10th Standard.indd 82 10-01-2019 12:09:49

गया। उसके बाद तो कोटय्या के पास हमेशा छोटी-मोटी भीड़ बनी रहती। शायद जो चिंगारी उसने शुरू की थी, वह जलने-बढ़ने लगी थी।

बात इतनी बढ़ी कि सरकार तक पहुंची। उस छोटे शहर में बढ़ी सरगर्मी फैल गई। अफसरों की दौड़-धूप बढ़ने लगी। पर कोटय्या की भूख हड़ताल जारी र।ही वह दिन प्रतिदिन कमजोर होता जा रहा था। हालात नाजुक थी। उसको बताया गया कि जिस डॉक्टर को वह अपनी पत्नी की मौत के लिए जिम्मेदार समझ रहा था उनका तबादला कर दिया जाएगा।

परंतु कोटय्या ने कहा-"मैं किसी का तबादला वगैरा नहीं चाहता, मैं चाहता हूं कि सारे मामले की पूरी तहकीकात हो और इंतजाम हो कि बिना घूस रिश्वत के हर किसी का इलाज हो और जब तक यह नहीं होगा मैं अपनी हड़ताल नहीं तोड़ूँगा।"

तहकीकात करना तो छत्ते को कुरेदना था। बहुत आनाकानी की गई। बाद में सरकार स्थानीय दबाव के कारण तहकीकात के लिए मान गयी।

कोटय्या भूख हड़ताल के कारण इतना कमजोर हो गया था कि उसकी हालत अब और तब की हो गयी, यद्यपि उसने हड़ताल अब तोड़ दी थी। उसे स्वास्थ्य सुधार के लिए उसी अस्पताल में भर्ती कर दिया गया।

पूछताछ शुरू हुई। बहुत-सी बातें प्रकाश में आने लगीं। कई कारनामें जो बड़ों की आड़ में होते थे, बाहर आए। पूछताछ का रुख कुछ-कुछ विस्फोटक होने लगा था। कई काम ऐसे थे, जिनके बारे में बड़ी डॉक्टर पद्मा को जानकारी न थी, वह शायद आँखें मूंदे बैठी थीं। रास्ता कुछ भी हो, जब तक उनका हिस्सा उनके पास आ जाता था, उनको कोई फिक्र ना थी। कौन जानता था कि कोई सिरफिरागँवार यूँ सत्याग्रह करेगा और तबाही ढायेगा।

डॉ. पद्मा को कमेटी के सामने गवाही देने के लिए बुलाया गया। उन्होंने पहले छुट्टी पर जाने की सोची, फिर बीमारी का बहाना किया, आखिर इधर-उधर के डोरे भी खींचने पड़े। पर पाँचछ:दिन के लिए सुनवाई मुल्तवी कर अंत में डॉक्टर पद्मा को कमेटी के सामने पेश किया गया।

डॉ. पद्मा की सांसें एकाएक लंबी हो गई। दुनिया भर के ठेकेदार, दूध के ठेकेदार, रोटी के ठेकेदार, दवाइयों के दुकानदार.....शहर के और कई लोग जो अस्पताल में कभी न कभी मरीज थे उनको यूँ देखने लगे जैसे कोई अपराधिनी रंगे हाथ पकड़ी गई हो। कमबख्त इन लोगों में एहसान मानने की भी तमीज नहीं है। इनकी बीमारियाँठीक क्या हुई कि अब ये मुझ पर ही ईंट पत्थर फेंकने को उतारू है। डॉक्टर पद्मा की लाल पीली होती आँखें कहती-सी लगती थी।

10th Standard.indd 83 10-01-2019 12:09:49

डॉ. पद्मा ने यह भी देखा की सुनवाई कोटय्या के केस तक ही सीमित न ।थी उनका ख्याल था कि और बातों की पूछ तलब न हो, पर उन्होंने यह पाया कि सारे अस्पताल के बारे में, वहाँ के कर्मचारियों के बारे में तहकीकात हो रही थी। वे शायद इसके लिए तैयार न थीं। कुछ घबरा गई।

कई ऐसे प्रश्न किए गए, जिनका जवाब उन से नहीं बनता था। वे कैसे जाने कि उनके नाम पर, उनकी नाक के नीचे ही इतनी सब कुछ गंदगी थी घूसखोरी थी। तैयार न थी, इसलिए कई उत्तर ऐसे दे गई जिससे औरों की नौकरी पर भी आँच आने की संभावना थी।

सुनवाई डॉक्टर पद्मा की हो रही थी और सारे अस्पताल में, शहर में कोहराम मचा हुआ था। हर कोई इसके बारे में ही पूछताछ कर रहा था। सब जगह सनसनी फैली हुई थी।

दूसरे दिन फिर डॉक्टर पद्मा बुलवायी गयी। पिछले दिन जो सुराग की तरह शुरू हुआ था, पूछताछ के सिलसिले में वह एक बड़ी सुरंग-सी हो गयी थी। कई की पोल खुली। कई का भंडाफोड़ हुआ। डॉक्टर पद्मा, संभव है यह सब न बताती बताना चाहती थीं पर चुप भी ना रह सकी थीं।

काफी कुछ जानकारी मिल गई थी, फिर भी साफ था और भी कई मुख्य बातें थीं जो समिति से छिपी थीं और छिपाई जा रही थीं।

डॉ. पद्मा दो-तीन दिन अस्पताल न गयी। वे सचमुच कुछ अस्वस्थ थीं। सुनवाई भी न हो सकी थी। उनके रहने की व्यवस्था अस्पताल के अहाते में ही थी। वह बुरी तरह भयभीत थीं। स्थिति ऐसी थी कि अस्पताल छोड़कर कोई विशेष रक्षा की आवश्यकता थी।

उस दिन रात थी, उस अस्पताल में उसी तरह आई जैसे और दिन आया करती थीं।पर सवेरा कुछ और तरह का था। अस्पताल के अंदर-बाहर सब जगह होहल्ला हो रहा था। बड़ी भीड़ लगी हुई थी। मुंह अंधेरे किसी ने अस्पताल में डॉक्टर पद्मा को मार दिया था और पुलिस ने कोटय्या को पकड़ लिया था।

डॉ. पद्मा को मार दिया जाना समझा जा सकता था पर हत्यारा कोटय्या ठहराया जाएगा, यह हर किसी को समझ में नहीं आ रहा था। परंतु अब गवाही उसके विरुद्ध थी।

जिस कमरे में रखा गया था, वह डॉक्टर पद्मा के मकान के पास था। अब वह अब पूर्ण स्वस्थ भले ही न हुआ हो पर चल-फिर सकता था। उसके पास अस्पताल की ही खून से तरबतर सर्जिकल नाइफ पाई गई, जिससे कहा जा रहा था उसने डॉक्टर पद्मा की हत्या की थी। उसके कपड़ों पर खून के धब्बे भी थे।

10th Standard.indd 84 10-01-2019 12:09:49

वह इस कदर घबराया हुआ था कि न मालूम क्या-क्या बड़बड़ा रहा था। पुलिस को यह भी बताया गया कि उसने अपनी पत्नी की मृत्यु के लिए यूँ डॉक्टर पद्मा से बदला लिया था।

पुलिस उसको चलाकर वेन की ओर ले जा रही थी और कुटिया गला फाड़-फाड़ कर चिल्ला रहा था"..... मैं निर्दोष हूँ, मैंने यह हत्या नहीं की है। मैं कुछ नहीं जानता मुझ पर यूँ ही झूठ-मुठ हत्या का अपराध थोपा जा रहा है....." पर कोई उसकी बात सुनता न लगता था। उस अस्पताल में जहाँ बड़ी-बड़ी बातें भी मामूली समझी जाती थी शायद यह एक मामूली घटना थी।

बड़ी-बड़ी खिड़कियों के पीछे वर्दी पहने 'मामूल' के आदी मुलाज़िम मुस्कुरा रहे थे, यूँ खिलखिला रहे थे जैसे कुछ छिपाने की कोशिश कर रहे हों, पर उनके मन कह रहे थे.....जो उनके बारे में और भेद बता सकती थी वह डॉक्टर पद्मा जान से गई और अपराध भी उनके सिर पर न आकर किसी गँवार के सिर पर मढ़ दिया गया था। हो भला इस कोटिय्या का।

कोटय्या शायद न जानता था कि वह एक ऐसी गंदी नाली में आ पड़ा था, जहाँ अच्छी चीज़ भी, गंदी हो जाती है और गंदगी ही गंदगी को ढकेलती हुई जाती है।

कोटय्या संसार छोड़ना चाहता था, पर वह न जानता था कि उसके हाथ पैर बाँध कर उसे धकेलने का यूँ प्रयत्न किया जाएगा। उसकी हालत उस बैल की जोड़ी की तरह थी, जो बियाबान जंगल में,

'बदला' कहानी पर आधारित प्रश्न

1. 'बदला' किसकी कहानी हैं?
2. 'बदला' कहानी के प्रमुख पात्रों के नाम बताइये।
3. कोटय्या कैसा आदमी था?
4. कोटय्या कौन था?
5. लेखक ने मामूल को मामूली बात के रूप में किस प्रकार जिक्र किया है?
6. कोटय्या की पत्नी का दशा कैसी थी?
7. अस्पताल गाँव से कितनी दूरी पर था?

10th Standard.indd 85 10-01-2019 12:09:49

8. कोटय्या के अस्पताल के अंदर जाने मामूल के रूप में कितने रुपये देने पड़े?

9. मरीज के इलाज के लिए लोगों को क्या-क्या करना पड़ता है?

10. जब पत्नी का इलाज समय पर नहीं हुआ तो कोटय्या ने क्या किया?

11. अस्पताल के डॉक्टरों का गैर-जिम्मेदारी के कारण नतीजा क्या हुआ?

12. कोटय्या ने सत्याग्रह क्यों किया?

13. कोटय्या क्या चाहता था?

14. कोटय्या की बातें सुनकर सरकार ने क्या किया?

15. सत्याग्रह के कारण कोटय्या की दशा क्या हुई?

16. कोटय्या का चरित्र-चित्रण लिखिए।

17. डॉक्टर पद्मा के बरे में पाँच वाक्य लिखिए।

18. 'बदला' कहानी का सारांश लिखिए।

10th Standard.indd 86 10-01-2019 12:09:49

21

रक्षा बंधन

विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक

कथाकार विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक का जन्म अम्बाला छावनी में 1891 में हुआ। आप जब चार वर्ष के थे तब आपके दादाजी आपको कानपुर ले आए। आपने लगभग ३०० कहानियां लिखी हैं।

कथाकार विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक की गणना प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, गुलेरी के समकक्ष की जाती है। समस्त हिंदी कथा-साहित्य में अकेले 'कौशिक' जी ही ऐसे कथाकार हैं जो इस क्षेत्र में प्रेमचंद के अधिक निकट हैं। आधुनिक हिन्दी कहानी के विकास में आपका महत्वपूर्ण स्थान है व आप आधुनिक हिंदी कहानी निर्माताओं में से एक थे।

आपकी कहानी 'ताई' हिंदी की श्रेष्ठ कहानियों में से एक है। 'ताई' कहानी में नारी की मनोवृति का सफल चित्रण किया गया है।

आपकी कहानियाँ उस समय की प्रसिद्ध पत्रिकाओं जैसे 'सरस्वती', 'माधुरी' और 'सुधा' इत्यादि में प्रकाशित होती थीं।

कौशिक जी 'विजयानन्द दुबे' के नाम से 'दुबेजी की चिट्ठियाँ' व 'दुबे जी की डायरी' भी विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लिखते रहे हैं। उनका हास्य-साहित्य अपने समय में मौलिक व बेजोड़ था।

1945 में 'कौशिक' जी का निधन हो गया।

मुख्य साहित्यिक कृतियाँ:

उपन्यास: माँ, भिखारिणी

कहानी संग्रह: खोटा बेटा, पेरिस की नर्तकी, साध की होली, चित्रशाला, मणिमाला, कल्लोल

"माँ, मैं भी राखी बाँधूँगी।"

श्रावण की धूम है। नगरवासी स्त्री-पुरुष बड़े आनंद तथा उत्साह से श्रावणी का उत्सव मना रहे हैं। बहनें भाइयों की और ब्राह्मण अपने यजमानों के यहाँ राखियाँ बाँध-बाँधकर चाँदी कर रहे हैं। ऐसे ही समय एक छोटे-से घर में एक दस वर्ष की बालिका ने अपनी माता से कहा – माँ मैं भी राखी बाँधूँगी।

10th Standard.indd 87 10-01-2019 12:09:49

उत्तर में माता ने एक ठंडी साँस भरी और कहा – किसको बांधेगी बेटी, आज तेरा भाई होता तो.....

माता आगे कुछ न कह सकीं। उसका गला रूँध गया, नैन अश्रुपूर्ण हो गये।

अबोध बालिका ने इठलाकर कहा-तो क्या भइया के हो राखी बांधी जाती है और किसी को नहीं? भइया नहीं है तो अम्मा, मैं तुम्हारे ही राखी बाँधूँगी।

इस दुःख के समय भी पुत्री की बात सुनकर माता मुसकुराने लगी और बोली-अरी, तू इतनी बड़ी हो गयी। भला कहीं माँ के भी राखी बांधी जाती है?

बालिका ने कहा-वाह, जो पैसा दे उसी के राखी बाँधी जाती है।

माता- अरी कँगली। पैसे भर के नहीं भाई ही के राखी बांधी जाती है।

बालिका उदास हो गयी।



माता घर का काम-काज करने लगी। घर का काम पूरा करके उसने पुत्री से कहा-आ, तुझे नहला दूँ।

बालिका मुख गंभीर करके बोली-मैं नहीं नहाऊँगी।

माता-क्यों, नहायेगी क्यों नहीं?

बालिका-मुझे क्या किसके राखी बाँधनी है?

माता-अरी, राखी नहीं बाँधनी है, तो क्या नहावेगी भी नहीं? आज त्यौहार का दिन है। चल, उठ नहा।

बालिका- राखी नहीं बाँधूँगी, तो तिवहार काहे का?

माता- (कुछ कृद्ध होकर) अरी, कुछ .....हो गयी है? राखी-राखी रट लगी रखी है। बड़ा राखी बाँधना वाली बनी है। ऐसा ही होता तो आज यह दिन देखना पड़ता? पैदा होते ही बाप को खो बैठी। ढाई बरस की होते-होते भाई का घर छुड़ा दिया। तेरे ही कर्मों से ये सब ल्रास (नाश) हो गया।

10th Standard.indd 88 10-01-2019 12:09:50

बालिका बड़ी अप्रतिभ हुई और आँखों में आँसू भरे हुए चुपचाप नहाने को उठ खड़ी हुई।

एक घंटा पश्चात हम उसी बालिका को उसके घर के द्वार पर खड़ी देखते हैं। इसी समय भी उसके सुंदर मुख पर उदासी विद्यमान है। अब भी उसके बड़े-बड़े नेत्रों में पानी छलछला रहा है।

परंतु बालिका इस समय द्वार पर क्यों? जान पड़ता है, वह किसी कार्यवश खड़ी है क्योंकि उसके द्वार के सामने से जब कांडे निकालता है, तब वह खड़ी उत्सुकता से उसकी ओर ताकने लगती है। मानो वह मुख से कुछ कहे बिना केवल इच्छा-शक्ति ही से उस पुरुष का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने की चेष्टा कर रही थी। परंतु जब उसे इसमें सफलता नहीं होती, तब उनकी उदासी बढ़ जाती है।

इसी प्रकार एक, दो, तीन करके कई पुरुष बिना उसकी ओर देखे निकल गये। अंत में बालिका निराश होकर घर के भीतर लौट जाने को उद्यत हुई थी कि एक सुंदर युवक की दृष्टि जो कुछ सोचता हुआ धीरे-धीरे जा रहा था, बालिका पर पड़ी। बालिका की आँखें युवक की आँखों से जा लगी। न जाने उन उदास तथा करुणा-पूर्ण नेत्रों में क्या जादू भरा था कि युवक ठिठककर खड़ा हो गया और बड़े ध्यान से पैर तक देखने लगा। ध्यान से देखने पर युवक को ज्ञान हुआ कि बालिका की आँखें अश्रुपूर्ण हैं। तब वह अधीर हो गया। निकट जाकर पूछा-बेटी, क्यों रोती हो?

बालिका इसका कुछ उत्तर न दे सकी। परंतु उसने अपना एक हाथ युवक की ओर बढ़ा दिया। युवक ने देखा, बालिका के हाथ में एक लाल डोरा है। उसने पूछा-यह क्या है? बालिका ने आँखें नीची करके उत्तर दिया-राखी। युवक समझ गया। उसने मुस्कुराकर अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ा दिया।

बालिका का मुख-कमल खिल उठा। उसने बड़े चाव से युवक के हाथ में राखी बाँध दी।



राखी बंधवा चुकने पर युवक ने जेब में हाथ डाला और दो रुपये निकालकर बालिका को देने लगा। परंतु बालिका ने उन्हें लेना स्वीकार न किया। बोली-नहीं, पैसे दो।

युवक – ये पैसे से भी अच्छे है।

बालिका – नहीं, मैं पैसे लूँगी, यह नहीं।

युवक – ले लो बिटिया। इसके पैसे मँगा लेना। बहुत से मिलेंगे।

10th Standard.indd 89 10-01-2019 12:09:50

बालिका – नहीं, पैसे दो।

युवक ने चार आने पैसे निकालकर कहा - अच्छा, ले पैस भी ले और यह भी ले।

बालिका – नहीं खाली पैसे लूँगी।

तुझे दोनों लेने पड़ेंगे। यह कहकर युवक ने बलपूर्वक पैसे तथा रुपये बालिका के हाथ पर रख दिये।

इतने में घर के भीतर से किसने पुकारा अरी सरखुनी कहाँ गयी?

बालिका ने आयी कहकर युवक की ओर कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि डाली और चली गयी।

गीलागंज (लखनऊ) की एक बड़ी तथा सुंदर अट्लिका के एक सुसज्जित कमरे में एक युवक चिन्ता-सागर में निमग्न बैठा है। तभी वह ठंडी साँस भरता है, कभी रुमाल से आँखें पोंछता है, कभी आप ही आप कहता है, हाँ, सारा परिश्रम व्यर्थ गया। सारी चेष्टाएँ निष्फल हुईं। क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? उन्हें कहाँ ढूंढूँ? सारा उन्नाव छान डाला, परंतु फिर भी पता न लगा। युवक आगे कुछ और कहने को था कि कमरे का द्वार धीरे-धीरे खुला और एक नौकर अंदर आया।

युवक ने कुछ विखत होकर पूछा, क्यों, क्यों है?

नौकर – सरकार, अमरनाथ बाबू आये हैं।

युवक – (संभलकर) अच्छा, यहीं भेज दो।

नौकर के जाने के बाद युवक ने रुमाल से आँखें पोंछ डाली और मुख पर गंभीरता लेने की चेष्टा करने लगा।

द्वार फिर खुला और एक युवक अंदर आया।

युवक – आओ भाई , अमरनाथ!

अमरनाथ – कहो घनश्याम, आज अकेले कैसे बैठे हो? कानपुर से कब लौटे?

घनश्याम – कल आया था।

अमरनाथ – उन्नाव ही अवश्य उतरे होगे?

घनश्याम – (एक ठंडी साँस भरकर) हाँ, उतरा था। परंतु व्यर्थ। वहाँ अब मेरा क्या रखा है?

10th Standard.indd 90 10-01-2019 12:09:50

अमरनाथ – परंतु करने क्या? हृदय नहीं मानता, क्यों? यदि तुम्हारे स्थान पर मैं होता, तो मैं भी ऐसा ही करता।

घनश्याम – क्या कहूँ मित्र, मैं तो हार गया। तुम तो जानते ही हो कि मुझे लखनऊ आकर रहे एक वर्ष हो गया और जब से यहाँ आया हूँ उन्हें ढूंढने में कुछ भी कसर उठा नहीं रखी, परंतु सब व्यर्थ।

अमरनाथ – उन्होंने उन्नाव न जान क्यों छोड़ दिया और कब छोड़ा इसका भी कोई पता नहीं चलना।

घनश्याम – इसका तो पता चल गया न कि वे लोग मेरे चले जाने के एक वर्ष पश्चात उन्नाव से चले गये। परंतु कहाँ गये, यह नहीं मालूम।

अमरनाथ – यह किससे मालूम हुआ?

घनश्याम – उसी मकानवाले से, जिसके मकान में हम लोग रहते थे।

अमरनाथ – हाँ शोक।

घनश्याम – कुछ नहीं, यह सब मेरे ही कर्मों का फल है। यदि मैं उन्हें छोड़कर न जाता, यदि गया था, तो भी उनकी खोज-खबर लेता रहता। परंतु मैं तो दक्षिण जाकर रुपया कमाने में इतना व्यस्त रहा कि कभी याद ही न आया। और जो आई भी तो क्षण मात्र के लिए। उफ, कोई भी अपने घर को भूल जाता है? मैं ही ऐसा अधम.....

अमरनाथ – (बात काटकर) अजी नहीं, सब समय की बात है।

घनश्याम – मैं दक्षिण न जाता तो अच्छा था।

अमरनाथ – तुम्हारा दक्षिण जाना तो व्यर्थ नहीं हुआ। यदि न जाने तो इतना धन.....

घनश्याम – अजी, चूल्हे में जाए धन ऐसा। धन किस काम का? मेरे हृदय में सुख-शांति नहीं तो धन किस मर्ज की दवा है?

अमरनाथ – ऐं, यह हाथ में लाल डोरा क्यों बाँधा है?

घनश्याम – इसकी तो बात ही भूल गया। यह राखी है।

अमरनाथ – भई, वाह। अच्छी राखी है।

10th Standard.indd 91 10-01-2019 12:09:50

लाल डोरे को राखी बताते हो। यह किसने बाँधी है? किसी बड़े कंजूस ब्राह्मण ने एक पैसा तक खरचना पाप समझा। डोरे ही से काम निकाला।

घनश्याम – संसार में यदि कोई बढ़िया से बढ़िया राखी बन सकती है, तो मुझे उससे भी कहीं अधिक प्यारा यह लाल डोरा है।

यह कहकर घनश्याम ने उसे खोलकर बड़े यत्नपूर्वक अपने बक्स में रख लिया।

अमरनाथ – भई, तुम भी विचित्र मनुष्य हो।

आखिर यह डोरा बाँधा किसने है?

घनश्याम – एक बालिका ने।

अमरनाथ – बालिका ने कैसे बाँधा और कहां?

घनश्याम - कानपुर में।

घनश्याम ने सारी घटना कह सुनाई।

अमरनाथ – यदि यह बात है तो सत्य ही यह डोरा अमूल्य है।

घनश्याम – न जाने क्यों, उस बालिका का ध्यान मेरे मन से नहीं उतरता।

अमरनाथ – उसकी सरलता तथा प्रेम ने तुम्हारे हृदय पर प्रभाव डाला है। भला उसका नाम क्या है?

घनश्याम – नाम तो मुझे नहीं मालूम भीत से किसी ने उसका नाम लेकर पुकारा था। परंतु मैं सुन न सका।

अमरनाथ – अच्छा, खैर। अब तुमने क्या करना विचारा है?

घनश्याम – धैर्य रखकर चुपचाप बैठने के अतिरिक्त और मैं कर ही क्या सकता हूँ? मुझसे जो हो सका, मैं कर चुका।

अमरनाथ – हाँ, यही ठीक भी है। ईश्वर पर छोड़ दो, देखो, क्या होता है।

पूर्वोत्तर घटना हुई पाँच वर्ष व्यतीत हो गये। घनश्याम पिछली बातें प्रायः भूल गये हैं। परंतु उस बालिका की याद कभी-कभी आ जाती है। उसे देखने वे एक बार कानपुर भी गये थे। परंतु उसका पता न चला उस घर में पूछने पर ज्ञान हुआ कि वह वहाँ से अपनी माता सहित, बहुत दिन हुए न जाने कहाँ चली गयी।

10th Standard.indd 92 10-01-2019 12:09:50

इसके पश्चात ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, उसका ध्यान भी कम होता गया। पर अब भी जब वे अपना बक्स खोलते हैं, तब कोई वस्तु देखकर चौंक पड़ते हैं और खास ही कोई पुराना दृश्य भी आँखों के सामने आ जाता है।

घनश्याम अभी तक अविवाहित है। पहले तो उन्होंने निश्चय कर लिया था कि विवाह करेंगे ही नहीं। पर मित्रों के कहने और स्वयं अपने अनुभव ने उनका यह विचार बदल दिया। अब वे विवाह करने पर तैयार हैं। परंतु अभी तक कोई कन्या उनकी रुचि के अनुसार नहीं मिली।

जेठ का महीना है। दिन भर की जला देने वाली धूप के पश्चात सूर्यास्त के समय अत्यन्त सुखमयी प्रतीत हो रहा है। इस समय घनश्याम दास अपनी कोठी के बाग़ में मित्रों सहित बैठे मंद-मंद शीतल वायु का आनंद ले रहे हैं। आपस में हास्य-रस पूर्ण बातें हो रही हैं। बातें करते-करते एक मित्र ने कहा- अजी, अभी तक अमरनाथ नहीं आये?

घनश्याम – वह मनमौजी आदमी हैं। कहीं रम गया होगा।

दूसरा – नहीं रमा नहीं, वह आजकल तुम्हारे लिए वर ढूँढने की चिंता में रहता है।

घनश्याम – बड़े दिल्लगीबाज हो।

दूसरा – नहीं, दिल्लगी की बात नहीं है।

तीसरा – हाँ, परसों मुझसे भी वह कहता था कि घनश्याम का विवाह हो जाए, तो मुझे चैन पड़े।

ये बातें हो रही थी कि अमरनाथ लपकते हुए आ पहुँचे।

घनश्याम – आओ यार, बड़ी उमर। अभी तुम्हारी ही बात हो रही थी।

अमरनाथ – इस समय बोलिये नहीं, एकाध को मार बैठूँगा।

दूसरा – जान पड़ता है कहीं से पिटकर आये हो।

अमरनाथ – तू फिर बोला, क्यों?

दूसरा – क्यों बोल ना किसी के हाथ क्या बेच खाया है?

अमरनाथ – अच्छा, दिल्लगी छोड़ों। एक आवश्यक बात है।

10th Standard.indd 93 10-01-2019 12:09:50

सब उत्सुक होकर बोले –कहो कहो, क्या बात है?

अमरनाथ – (घनश्याम से) तुम्हारे लिए दुल्हन ढूँढ ली है।

सब – (एक स्वर से) फिर क्या, तुम्हारी शादी है।

अमरनाथ – फिर वही दिल्लगी? यार, तुम लोग अजीब आदमी हो।

तीसरा – अच्छा बताओ, कहाँ ढूँढा?

अमरनाथ – यहीं लखनऊ में।

दूसरा – लड़की का पिता क्या करता है?

अमरनाथ – पिता तो स्वर्गवास करता है।

तीसरा – यह बुरी बात है।

अमरनाथ – लड़की है और उसकी माँ। बस तीसरा कोई नहीं। विवाह में कुछ मिलेगा भी नहीं। लड़की की माता बड़ी गरीब है।

दूसरा – यह उससे भी बुरी बात है।

तीसरा – उल्लू मर गये, पट्ठे छोड़ गये। घर भी ढूँढ़ा तो गरीब। कहाँ हमारे घनश्याम इतने धनाढ्य और कहाँ ससुराल इतनी दरिद्र। लोग क्या कहेंगे?

अमरनाथ – अरे भाई, कहने या ना कहने वाले हमी लोग हैं और यहाँ उनका कौन बैठा है जो कहेगा?

घनश्यामदास ने एक ठंडी सांस ली।

तीसरा – आपने क्या भलाई देखी, जो यह संबंध करना विचारा है?

अमरनाथ – लड़की की भलाई। लड़की लक्ष्मी रूपा है। जैसी सुंदर वैसी ही सरल। ऐसी लड़की यदि दीपक लेकर ढूंढी जाए तो भी कदाचित ही मिले।

दूसरा – हाँ, यह अवश्य एक बात है।

अमरनाथ – परंतु लड़की की माता लड़का देखकर विवाह करने को कहती है।

तीसरा – यह तो व्यवहार की बात है।

घनश्याम – और, मैं भी लड़की देखकर विवाह करूँगा।

दूसरा – यह भी ठीक है।

10th Standard.indd 94 10-01-2019 12:09:50

अमरनाथ – तो इसके लिए क्या विचार है?

तीसरा – विचार क्या, लड़की देखेंगे।

अमरनाथ – तो कब?

घनश्याम - कल!

(4)

दूसरे दिन शाम को घनश्याम और अमरनाथ गाड़ी पर सवार होकर लड़की देखने चले। गाड़ी चक्कर खाती हुई दहिया गंज की एक गली के सामने जा खड़ी हुई। गाड़ी से उतरकर दोनों मित्र गली में घुसे। लगभग सौ कदम चलकर अमरनाथ एक छोटे से मकान के सामने खड़े हो गए और मकान का द्वार खटखटाया।

घनश्याम बोले – मकान देखने से तो बड़े गरीब मान पड़ते हैं। अमरनाथ – हाँ, बात तो ऐसी हाँ है। परंतु यदि लड़की तुम्हारी पसंद आ जाए, तो यह सब सहन किया जा सकता है।

इतने में द्वार खुला और दोनों भीतर गये। संध्या हो जाने के कारण मकान में अँधेरा हो गया था। अतएव ये लोग द्वार खोलने वाले को स्पष्ट न देख सके।

एक दालान में पहुँचने पर ये दोनों चारपाइयों पर बिठा दिये गये और बिठाने वाली ने जो स्त्री थी, कहा- मैं जरा दिया जला लूँ। अमरनाथ - हाँ जला लो।

स्त्री ने दीपक जलाया और पास ही एक दीवार पर उसे रख दिया। फिर उनकी ओर मुख करके नीचे चटाई पर बैठ गयी। परंतु ज्यों ही उसने घनश्याम पर दृष्टि डाली- एक हृदयभेदी आह उनकी मुख से निकली और वह ज्ञान-शून्य होकर गिर पड़ी। स्त्री की ओर कुछ अँधेरा था, इस कारण उन लोगों को उसका मुख स्पष्ट न दिखाई पड़ता था। घनश्याम उसे उठाने को उठे। परंतु ज्यों ही उन्होंने उसका सिर उठाया और रोशनी उसके मुख पर पड़ी, त्यों ही घनश्याम के मुख से निकला - मेरी माता! और उठकर वे भूमि पर बैठ गये।

अमरनाथ विस्मित हो काष्ठवत बैठे रहे। अंत को कुछ क्षण उपरांत बोले –उफ ईश्वर की महिमा बड़ी विचित्र है। जिसके लिए तुमने न जाने कहाँ-कहाँ की ठोकरें खायीं, वे अंत को इस प्रकार मिले।

घनश्याम अपने को संभालकर बोले थोड़ा पानी मंगाओ।

अमरनाथ – किससे मंगाऊँ? यहाँ तो कोई और दिखाई ही नहीं पड़ता। परंतु हाँ, वह लड़की तुम्हारी कहते अमरनाथ रुक गये। फिर उन्होंने पुकारा बिटिया थोड़ा पानी दे जाओ। परंतु कोई उत्तर न मिला। अमरनाथ ने फिर

10th Standard.indd 95 10-01-2019 12:09:50

पुकारा –बेटी तुम्हारी माँ अचेत हो गयी है। थोड़ा पानी दे जाओ। इस अचेत शब्द में ना जाने क्या बात थी कि तुरंत ही घर के दूसरी ओर बरतन खड़कने का शब्द हुआ। तत्पश्चात एक पूर्णवयस्क लड़की लोटा लिये आयी।

लड़की मुंह कुछ ढँके हुए थी। अमरनाथ ने पानी लेकर घनश्याम की माता की आँखों तथा मुख धो दिया। थोड़ी देर में उसे होश आया। उसने आँख खोलते ही फिर घनश्याम को देखा तब वह शीघ्रता से उठकर बैठ गयी और बोली – ऐ, मैं क्या स्वप्न देख रही हूँ? घनश्याम – क्या तू मेरा खोया हुआ घनश्याम है? या कोई और?

माता ने पुत्र को उठाकर छाती से लगा लिया और अश्रुबिन्दु विसर्जन किये। परंतु वे बिन्दु सुख के थे अथवा दुख के कौन कहे? लड़की ने यह सब देख-सुनकर अपना मुँह खोल लिया। और भैया-भैया कहती हुई घनश्याम से लिपट गयी। घनश्याम ने देखा लड़की कोई और नहीं, वही बालिका है जिसने पाँच वर्ष पूर्व उसको राखी बाँधी थी और जिसकी याद प्रायः उन्हें आया करती थी।

श्रावण का महीना है और श्रावणी का महोत्सव। घनश्यामदास की कोठी खूब सजायी गयी है। घनश्याम अपने कमरे में बैठे एक पुस्तक पढ़ रहे हैं। इतने में एक दासी ने आकर कहा – बाबू, भीतर चलो, घनश्याम भीतर गये। माता ने उन्हें एक आसन पर बिठाया और उनकी भगिनी सरस्वती ने उनके तिलक लगाकर राखी बाँधी। घनश्याम ने दो अशरफियाँ उसके हाथ में रख दी। और मुसकुराकर बोले –क्या पैसे भी देने पड़ेंगे?

सरस्वती ने हँसकर कहा – नहीं भैया, ये अशरफियाँ पैसों से अच्छी हैं। इनसे बहुत पैसे आवेंगे।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1) पर्व 'रक्षा-बंधन' की विशेषता एवं महत्व पर पाँच वाक्य लिखिए।

2) रक्षा-बंधन का त्यौहार कब और क्यों मनाया जाता है?

3) युवक ने बालिका से क्या कहा और क्या दिया?

4) बालिका की खुशी का कारण बताइये।

5) युवक की परेशानी का विवरण दीजिए।

6) घनश्याम और अमरनाथ के बीच हुए संवाद का सार बताइये।

7) घनश्याम स्त्री को देखकर क्यों विस्मित हो गया?

8) 'रक्षा-बंधन' कहानी का सार अपने शब्दों में लिखिए।

10th Standard.indd 96 10-01-2019 12:09:50

22

व्याकरण

संज्ञा

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, जाति, भाव आदि का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं।

संज्ञा पाँच प्रकार के होते हैं वे व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, भाववाचक संज्ञा, द्रव्यवाचक संज्ञा और समूहवाचक संज्ञा है।

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा** : एक ही व्यक्ति अथवा वस्तु को बोध कराने वाला।

   उदाहरण : राम, सीता, दिल्ली, पुस्तक

2. **जातिवाचक संज्ञा** : एक ही जाति के प्राणियों या वस्तुओं का बोध करानेवाला।

   उदाहरण : मनुष्य, हाथी, गाय

3. **भाववाचक संज्ञा** : किसी के गुण, धर्म या भाव का बोध करानेवाला॥

   उदाहरण : चालाकी, मिठास, वीरता

4. **द्रव्यवाचक संज्ञा** : द्रव्य का बोध करानेवाला॥

   उदाहरण : सोना, चांदी, तांबा

5. **समूहवाचक संज्ञा** : अनेक पदार्थों अथवा समूह का बोध करानेवाला॥

   उदाहरण : सेना, गुच्छा, झुँड

सर्वनाम

जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं उन्हें सर्वनाम कहते हैं।

जैसे – मैं, हम, तुम, आप आदि।

सर्वनाम के छ: भेद होते हैं।

10th Standard.indd 97 10-01-2019 12:09:50

1.पुरुषवाचक सर्वनाम, **2.निजवाचक सर्वनाम,** **3.निश्चयवाचक सर्वनाम,**

4.अनिश्चयवाचक सर्वनाम **5.संबंधवाचक सर्वनाम,** **6.प्रश्नवाचक सर्वनाम।**

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं-

1.उत्तम 2.मध्य 3.अन्य

1.**पुरुषवाचक सर्वनाम** : बोलने वाले, सुनने वाले और किसी अन्य का बोध कराने वाले4 उसके तीन भेद हैं-

1.उत्तम – मैं, हम

2.मध्य – तुम, आप

3.अन्य – यह, वह

2.**निजवाचक सर्वनाम** : स्वयं अर्थ का बोध कराने वाले।

उदाहरण : आप

3.**निश्चयवाचक सर्वनाम** : किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध कराने वाले।

उदाहरण : यह, ये, वह, वे।

4.**अनिश्चयवाचक सर्वनाम** : किसी अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध कराने वाले।

उदाहरण : कोई, कुछ

5.**संबंधवाचक सर्वनाम** : संबंध का बोध कराने वाले।

उदाहरण : जो, सो

6.**प्रश्नवाचक सर्वनाम** : प्रश्न का बोध कराने वाले।

उदाहरण : कौन, क्या

क्रिया

जिससे किसी कार्य का करना या होना पाया जाए, उसे क्रिया कहते हैं।

क्रिया के भेद

1.सकर्मक क्रिया 2.अकर्मक क्रिया 3.द्विकर्मक क्रिया

1.**सकर्मक क्रिया** – सकर्मक उस क्रिया को कहते हैं, जिसका कर्म होता है। उदाहरण: राम काम करता है।

10th Standard.indd 98 10-01-2019 12:09:50

2.**अकर्मक क्रिया** - अकर्मक उस क्रिया को कहते हैं, जिसका कर्म नहीं हो सकता।

उदाहरण : राम आता है।

3.**द्विकर्मक क्रिया** - द्विकर्मक उस क्रिया को कहते हैं, जिसके दो कर्म होते हैं। प्रधान कर्म और गौण कर्म। प्रधान कर्म कर्मकारक में और गौण कर्म संप्रदान कारक में होते हैं।

उदाहरण : मालिक नौकर को रुपये देते हैं।

रुपये - प्रधान कर्म नौकर को - गौण कर्म

विशेषण

संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता (आकार, गुण , संख्या आदि) प्रकट करने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं।

जिन शब्दों की विशेषता प्रकट की जाती है उन्हें विशेषण कहते हैं।

विशेषण के चार भेद हैं।

1.**गुणवाचक विशेषण**

2.**संख्यावाचक विशेषण**

3.**परिणामवाचक विशेषण**

4. **सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण**

(क) गुणवाचक विशेषण : संज्ञा या सर्वनाम के गुण, आकार, दशा आदि का बोध कराने वाला विशेषण।

उदाहरण : वह सज्जन है। गोपाल लंबा है।

(ख) संख्यावाचक विशेषण : संज्ञा या सर्वनाम की संख्याका बोध कराने वाले विशेषण।

उदाहरण : चार लड़के, चौथा वर्ग

(ग) परिणामवाचक विशेषण : किसी वस्तु के माप, तौल या परिणाम का बोध कराने वाले विशेषण।

उदाहरण : दो मीटर कपड़ा, दो लीटर दूध

(घ) सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण:

किसी की ओर निदेश या संकेत करने के लिए सर्वनामों से बने विशेषण ।उदाहरण: वह सुंदर है। वे लड़के नटखट हैं।

क्रिया विशेषण

जो अविकारी शब्द क्रिया की विशेषता का बोध कराते हैं उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं।

इसके चार भेद होते हैं-

10th Standard.indd 99 10-01-2019 12:09:50

1.**कालवाचक** 2.**स्थानवाचक** 3.**परिणामवाचक** 4.**रीतिवाचक**

1.**कालवाचक**	:	क्रिया का समय, अवधि और क्रिया की आवृति को सूचित करने वाला।
उदाहरण	:	आज, कल
2.**स्थानवाचक**	:	क्रिया के स्थान, दिशा आदि को सूचित करने वाले।
उदाहरण	:	यहाँ, इधर, ओर
3.**परिणामवाचक**	:	क्रिया का परिणाम बनाने वाले।
उदाहरण	:	बहुत, कम, इतना
4.**रीतिवाचक**	:	क्रिया की रीति सूचित करने वाले।
उदाहरण	:	धीरे-धीरे, अचानक

(संबंध बोधक, 'ने' नियम, कारक, उपसर्ग)

संबंध बोधक : जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम का संबंध, वाक्य के साथ बताता है, वह संबंध बोधक है।

जैसे –

1.मंदिर के सामने तालाब है।

2.स्कूल के अंदर बड़ा मैदान है।

ज्यादातर संबंध बोधक शब्द विभक्ति के साथ प्रयुक्त होते हैं।

जैसे - के ऊपर, के बिना, के पीछे

कुछ संबंध बोधक शब्दों में यह विभक्ति लुप्त भी हो जाती है।

जैसे –

1. गुरु बिना कौन मार्ग बतायेगा।

2. हमने यह काम राम भरोसे छोड़ दिया।

संबंध बोधक जब किसी शब्द या सर्वनाम के साथ नहीं आते, तब वे क्रिया विशेषण बन जाते हैं।

जैसे – आप बाहर जाइये।

अंदर आना मना है।

प्रश्नोत्तर

1. संबंध बोधक की परिभाषा देकर सोदाहारण समझाइये?

10th Standard.indd 100 10-01-2019 12:09:50

समुच्चय बोधक

परिभाषा : शब्द, वाक्यांश या वाक्यों को आपस में मिलाने वाले शब्द को समुच्चय बोधक कहते हैं। समुच्चय बोधक दो प्रकार के होते हैं –

1.संयोजक समुच्चय बोधक

2.वियोजक समुच्चय बोधक

1.संयोजक समुच्चय बोधक - यह समुच्चय बोधक शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों का मेल प्रकट करता है।

जैसे - 1.राम और श्याम

और, तथा, एवं, व आदि संयोजक समुच्चय बोधक है।

2.वियोजक समुच्चय बोधक – यह समुच्चय बोधक शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को मिलाता तो है, लेकिन मिलाकर उनके महत्व को अलग करता है।

जैसे हीनही, न कि, अथवा, या

इसके पाँच भेद हैं-

1.विरोध बोधक –पर, परंतु, किन्तु, मगर, लेकिन

2.परिणाम बोधक – अंत, अतएव, क्योंकि, इसलिए, कि

3.संकेत बोधक – यदि, जो, तो. चाहे, पर, यद्यपि

4.रूप बोधक – यानी, यहाँ तक कि, मानो, अर्थात

5.विकल्प बोधक – या, वा, चा, कि, न, अथवा, नहीं तो

प्रश्नोत्तर

1. समुच्चय बोधक की परिभाषा क्या है

2. समुच्चय बोधक की परिभाषा देकर संयोजक समुच्चय बोधक और नियोजक समुच्चय बोधक का अंतर स्पष्ट कीजिए।

उपसर्ग और प्रत्यय

उपसर्ग - परिभाषा – जो शब्दांश किसी शब्द के आदि में जुड़कर उसका अर्थ बदल देते हैं या उसके अर्थ में विशेषता उत्पन्न करते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं।

प्रत्यय – परिभाषा – जो शब्दांश किसी धातु या शब्द के अंत में लगकर उसका अर्थ बदल देते हैं या उसके अर्थ में विशेषता उत्पन्न करते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं। प्रत्यय को परसर्ग भी कहा जाता है।

10th Standard.indd 101 10-01-2019 12:09:50

उपसर्ग तीन प्रकार के हैं

1.**तत्सम उपसर्ग** – हिन्दी में उसी रूप में प्रयुक्त होते हैं।

जैसे – प्र-प्रबल, उप-वन, अ-अहिंसा

2. **तत्भव उपसर्ग** – ये संस्कृत के उपसर्ग हैं।

दु-दुना, भर – भरपेट, सपरिवार

3. **आगत उपसर्ग** – ये भारतेतर भाषाओं के उपसर्ग हैं। हिन्दी में खासकर उर्दू के उपसर्गों का अधिक प्रयोग है।

खुश - खुशकिस्मत ना - नासमझ, गैर - गैरहाजिरी बे - बेशक

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं –

1.कृत प्रत्यय

2.तद्धित प्रत्यय

1.**कृत प्रत्यय** – ये धातु के अंत में लगकर संज्ञा या विशेषण शब्दों का निर्माण करते हैं। इस तरह बनने वाले शब्द को कृत प्रत्यय कहते हैं।

जैसे – धूमना-धुमक्कड़, भावना-भगोड़ा, कमाना-कमाऊ

2.**तद्धित प्रत्यय** – ये संज्ञा, सर्वनाम विशेषण या किसी अव्यय शब्द के अंत में जुड़ते हैं।

जैसे - सोना-सुना तेल-तेली मीठा-मिठास रंग-रँगीला, झगड़ा-झगड़ालू

प्रश्नोत्तर

1. प्रत्यय का दूसरा नाम क्या है?
2. तत्सम उपसर्ग किसे कहते हैं?
3. उपसर्ग किसे कहते हैं? उदाहरण देकर उसके भेदों को समझाइये।
4. प्रत्यय की परिभाषा देकर उसके भेदों पर प्रकाश डालिए।
5. उपसर्ग और प्रत्यय का अंतर उदाहरण सहित समझाइये।

'ने' का प्रयोग

1. **क्रिया सकर्मक होकर भूतकाल में होने पर कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग होता है।**
   उदाहरण: राम ने पत्र लिखा।
2. **कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग होने पर कर्म के लिंग और वचन के अनुसार क्रिया बदलती है।**
   उदाहरण: राम ने रोटी खायी।

10th Standard.indd 102 10-01-2019 12:09:51

3. **कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग होने पर कर्म के साथ 'को' विभक्ति आवे, तो क्रिया हमेशा पुल्लिंग एक वचन में होती है।**

उदाहरण: गीता ने लता को देखा।

4. **कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग होने पर जब कर्म लुप्त होता है, तब भी क्रिया पुल्लिंग एकवचन में होती है।**

उदाहरण: सीता ने लिखा।

5. **'ला', 'बोल', भूल, चुक, सक, लग, इनके आने पर कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं होता।**

उदाहरण: पिताजी यह घड़ी लाये।

वाच्य

क्रिया के जिस रूप से यह मालूम होता है कि क्रिया का मुख्य कर्ता, कर्म है, अथवा भाव है, उसे वाच्य कहते हैं।

वाच्य तीन प्रकार के होते हैं

1.कर्तृवाच्य **2.कर्म वाच्य** **3.भाववाच्य**

1.**कर्तृवाच्य** - इसमें क्रिया के द्वारा किए गए प्रधान का मुख्य विषय कर्ता होता है। कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार क्रिया होती है।

उदाहरण : राम पुस्तक पढ़ता है।

2.**कर्म वाच्य** - इसमें क्रिया के द्वारा किए गए प्रधान का मुख्य विषय कर्म होता है। कर्म के लिंग और वचन के अनुसार क्रिया होती है। यह सकर्मक क्रियाओं के साथ काम करती है।

3.**भाववाच्य** - इसमें धातु ही प्रधान होती है। क्रिया तथा पुल्लिंग एकवचन में रहती है। यह अकर्मक क्रियाओं से बनती है।

वाक्य - विचार

वाक्य एक से अधिक शब्दों से बनता है। यह भाषा के तीनों अंश, वर्ण, शब्द और वाक्य में सबसे महत्वपूर्ण अंग है।वक्ता, लेखक के मन के भावों का स्पष्ट रूप से प्रकट करने वाले सार्थक शब्द-समूह के मेल को वाक्य कहते हैं।

उदाहरण :मोहन पढ़ता है।

रचना की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार के होते हैं –

1.सरल वाक्य **2.संयुक्त वाक्य** **3.मिश्रित वाक्य**

10th Standard.indd 103 10-01-2019 12:09:51

1.**सरल वाक्य** : जहाँ वाक्य में केवल एक ही उपवाक्य होता है, वहाँ वह स्वतंत्र उपवाक्य होता है और सरल वाक्य कहलाता है।

उदाहरण : यह घर मेरा है।

2.**संयुक्त वाक्य** : जिस वाक्य में एक से अधिक स्वतंत्र उपवाक्य योजकों द्वारा जुड़े हो तथा कोई प्रधान या आश्रित उपवाक्य न हो, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं।

उदाहरण : घड़ी नीचे गिरी, परंतु टूटी नहीं।

3.**मिश्रित वाक्य** : जिस वाक्य में एक मुख्य वाक्य और अन्य उपवाक्य पर आश्रित होता है, वह मिश्रित वाक्य कहलाता है।

उदाहरण : मुझे मालूम है कि वह अवश्य प्रथम आएगा।

10th Standard.indd 104 10-01-2019 12:09:51

शुद्ध कीजिए

1. हम आपके घर कल आयेगा।
2. कृपया करके मेरी बात सुन लो।
3. नौकर से कहो कि मेरा सामान तैयार रखो।
4. तुम तुम्हारे घर अभी चले जाओ।
5. तेरे को पिताजी तुरंत बुलाया है।
6. अनेको बार समझाने पर भी वह नहीं समझा।
7. हर एक ने कमीजें पहन रखी हैं।
8. हमारे से कोई काम नहीं हो सकता।
9. यह पुस्तक में पढ़ा हूँ।
10. वह लौट आये।
11. मैंने घर जाना है।
12. वह तेरे को बुला रहा है।
13. वह लोग आ गये हैं।
14. आप लोग क्या करता है।
15. राम ने रोटी खाया।
16. मेरा एक भाई दो बहना है।
17. उसने किताब लाना भूला।
18. आज वहाँ राम ने जाना है।
19. उसने किताब लाना भूला।
20. बच्चे स्कूल जाना चाहिए।

10th Standard.indd 105 10-01-2019 12:09:51

वाच्य बदलिए

1. राज चिट्ठी लिखता है।
2. लता पुस्तक पढ़ती है।
3. गीता ने किताब पढ़ी।
4. मैंने उड़ती चिड़िया मारी।
5. आज अध्यापक ने नया पाठ पढ़ाया।
6. कहारों ने डोली उठाई।
7. उसने दान दिया।
8. इतनी रोटी कौन खायेगा?
9. तुम पाठ सिखाओगे।
10. उन्होंने काम शुरू किया।
11. लोगों से होली मनायी जाती है।
12. हिन्दू लोगों से गाय की पूजा की जाती है।
13. पत्र राजू द्वारा लिखा जाता है।
14. लड़की से कपड़ा सिया जाता है।
15. लड़के से चिट्ठी लिखी गई।
16. नौकर से दरवाजा खोला जाएगा।
17. हमसे फल खरीदा जाएगा।
18. समाचार पत्र रामू से पढ़ा जाता है।
19. बिल्ली द्वारा सारा दूध पिया गया।
20. मुझसे तड़के उठा नहीं जाता।

10th Standard.indd 106 10-01-2019 12:09:51

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

1.	जो ईश्वर को मानता हो	–	आस्तिक
2.	जो ईश्वर को न मानता हो	–	नास्तिक
3.	जो कम खर्च करता हो	–	मितव्ययी
4.	जो व्याकरण के नियम जानता हो	–	वैयाकरण
5.	जो दूर की बातें सोचता हो	–	दूरदर्शी
6.	जिसके कोई अंग न हो	–	अनंग
7.	जो सब कुछ जानता हो	–	सर्वज्ञ
8.	जितना हो सके	–	यथा संभव
9.	जो हित चाहता हो	–	हितैषी
10.	जिसे लड़ने की आदत हो	–	लड़ाकू
11.	जो किसी का उपकार न माने	–	कृतघ्न
12.	जो दूसरों का उपकार माने	–	कृतज्ञ
13.	जो मार्ग दिखाता हो	–	मार्गदर्शक
14.	जो आकाश में चलता हो	–	नभचर
15.	जो लिखना-पढना न जानता हो	–	निरक्षर
16.	जिसने शिक्षा पायी हो	–	शिक्षित
17.	जो केवल शाकाहार करता हो	–	शाकाहारी
18.	जिसका कोई शत्रु न हो	–	अजातशत्रु
19.	जो महीने में एक बार होता है	-	मासिक
20.	जिसे मांस खाने की आदत हो	–	मांसाहारी

10th Standard.indd 107 10-01-2019 12:09:51

शब्द युग्म

1.	अंश – भाग (Part)	अंस - कंधा (Shoulder)
2.	अंग – देह (Body)	अंक – गोद (Lap)
3.	आकार – रूप (shape)	आहार – भोजन (Food)
4.	अवलम्ब – सहारा (Support)	अविलम्ब – शीघ्र (Fast)
5.	अन्तर – भेद (Difference)	अन्दर – भीतर (Inside)
6.	अभिनय – नाट्य (Acting)	क्रिया अभिनय – नया (New)
7.	कर - हाथ (Hand)	करि - हाथी (Elephant)
8.	कृपण – कंजूस (Miser)	कृपाण – तलवार (Sword)
9.	कलम – लेखनी (Pen)	कमल – पद्म (Lotus)
10.	ग्रह – सूर्य (Planets)	गृह – घर (Home)
11.	कुल – जोड़ (Altogether)	कूल किनारा (Shore)
12.	चर्म – चमड़ा (Skin)	चरम – अंतिम (Ultimate)
13.	मात्र – केवल (Only)	मातृ - माता (Mother)
14.	लक्ष – लाख (Lakh)	लक्ष्य – उद्देश्य (Purpose)
15.	प्रवाह - बहाव (Flow)	प्रभाव – असर (Effect)
16.	निर्वाण – मुक्ति (Freedom)	निर्माण – रचना (Create)
17.	अपेक्षा – बजाय (Instead)	उपेक्षा -अनादर (Disrespect)
18.	चिता – जलने की समाधि (Fire)	चीता – बाघ (Leopard)
19.	कपट – छल (Cheat)	कपाट – दरवाजा (Door)
20.	किला – दुर्ग (Fort)	कीला – खूंटा (Nail)

10th Standard.indd 108 10-01-2019 12:09:51

गद्यांश लिखिए

गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

सुकरात के जीवन का अंतिम समय करीब आ गया था। उसे प्राण दण्ड की आज्ञा के कारण विष का प्याला पीना पड़ा। अपनी जीवन यात्रा समाप्त करने के पहले उसने शिष्यों और मित्रों के सामने मृत्यु के बारे में एक सुंदर भाषण दिया। उसने कहा कि आत्मा का इस नश्वर शरीर से मुक्त होना ही मृत्यु कहलाता है। सुकरात ने भाषण देकर विष पिया तो उसके शिष्य और मित्र फूट-फूट कर रोने लगे। सुकरात ने कहा, "क्या आपको मालूम नहीं कि मैंने अपनी पत्नी को यहाँ से दूर कर दिया, केवल इसलिए कि मैं शांति से मरना चाहता हूँ। आप भी रोयें बिना अंतिम घड़ी तक मेरे साथ रहें, यही मेरी प्रार्थना है।"

(1) सुकरात ने विष क्यों पिया?

(2) सुकरात के अनुसार मृत्यु क्या है?

(3) सुकरात ने अपनी पत्नी को क्यों यहाँ से दूर रखा?

(4) इस गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

एक बार भगवान बुद्ध का प्रचारक घूम रहा था। उसे एक भिखारी मिला और वह प्रचारक उसे धर्म का उपदेश देने लगा। भिखारी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया क्योंकि उपदेश में उसका मन नहीं लग रहा था। प्रचारक को बहुत क्रोध आया और उसने बुद्ध के पास जाकर कहा, "वहाँ एक भिखारी बैठा है वह मेरे उपदेश नहीं सुनता है।" बुद्ध ने कहा "उसे मेरे पास लाओ प्रचारक उसे बुद्ध के पास ले गया, बुद्ध ने समझ लिया कि वह तीन चार दिनों से भूखा है। उन्होंने उसे भरपेट भोजन खिलाया और वापस भेज दिया। बुद्ध ने कहा आज उसके लिए अन्न ही उपदेश था और उसे भोजन की ही सब से अधिक आवश्यकता थी। यदि मनुष्य के पेट में भूख की ज्वाला भड़क रही हो तो उसके उपदेश देने से कोई लाभ नहीं होगा।"

(1) प्रचारक क्यों नाराज हुआ?

(2) भिखारी ने क्यों नहीं सुना?

(3) भिखारी को देखकर बुद्ध ने क्या दिया?

(4) बुद्ध ने भिखारी के बारे में क्या कहा?

(5) इस गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

10th Standard.indd 109 10-01-2019 12:09:51

बचत खाता खोलने की प्रार्थना

देना बैंक, टी. नगर शाखा में बचत खाता खोलने के लिए शाखा प्रबंधक को एक प्रार्थना पत्र लिखिए।

4-02-2018

चेन्नई-17

प्रेषक

सुमित एस.

40, राम गली

टी. नगर चेन्नई-600017

सुमित055जीमेल.कॉम

सेवा में

शाखा प्रबंधक

देना बैंक

टी. नगर

चेन्नई-60017

प्रिय महोदय

विषय :- नया खाता खोलने संबंधित।

मैं आपके बैंक में मेरे नाम पर एक बचत खाता खोलना चाहता हूँ। आपसे नम्र निवेदन है कि कृपया खाता खौलने का नियम एवं जानकारी मेरे ई.मेल पर सूचित करें।

धन्यवाद

आपका

सुमित एस.

10th Standard.indd 110 10-01-2019 12:09:51

किताब घर नई दिल्ली की ओर से लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद को गलत माल भेजने की शिकायत करते हुए एक पत्र लिखिए।

किताब घर

(पुस्तक विक्रेता एवं प्रकाशक)

कश्मीरी गेट,

नई दिल्ली

03 दिसंबर, 2018

क्रमांक : 482/13

व्यवस्थापक महोदय,

लोकभारती प्रकाशन

15-ए.महात्मा गाँधी मार्ग

इलाहाबाद-211001

प्रिय महोदय

आपका पत्र 01 दिसंबर, 2018 को प्राप्त हुआ। आपका भेजा हुआ पार्सल भी हमे प्राप्त हुआ। आपने 'प्रामाणिक हिन्दी कोश' की 20 प्रतियाँ भेजी हैं, जबकि हमने 'प्रामाणिक हिन्दी बाल-कोश' की 20 प्रतियाँ माँगी थी। विद्यार्थियों को दिसंबर के दूसरे सप्ताह तक उनका वितरण करना था।

आपसे निवेदन है कि पत्र प्राप्त करते ही 'प्रामाणिक हिन्दी बाल-कोश' की बीस प्रतियाँ मात्र भिजवाने का उचित प्रबंध करें। आपका पार्सल मिलते ही हम आपको भेजी हुई पुस्तकें लौटा देंगे।

आशा है कि आप ये पुस्तकें जल्दी भेज देंगे।

सधन्यवाद

भवदीय

ह./xxxx

व्यवस्थापक, किताब घर

नई दिल्ली

10th Standard.indd 111 10-01-2019 12:09:51

अनुवाद

1 रेगिस्तान की यात्रा के लिए उँट उपयोगी होने के कारण् उसे रेगिस्तानी जहाज कहते है।

2 दुनिया की चीजों के पीछे दौडने से मन की शांति जाति रहती है।

3 हवाई जहाज के आकाश से उतरने और जमीन से उडने के लिए बडे खुले मैदान की आवष्यकता है

4 ज्यों ज्यों पहाड पर चढते जाते हैं, त्यों त्यों हवा में प्राण वायु की कमी आती जाती है।

5 हर भारतवासी का कर्तव्य है कि वह देश की सेना कर आजाद को बनायें।

6 शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थी पर किसी भी प्रकार का बोझ या दबाव नहीं होना चाहिए।

7 गरीबी और भूख दोनो शापों को देश से हटाना चाहिए

8 प्रकृति के अनुसार अपने को बदल लेना प्रकृति पर मनुश्य की विजय नहीं है।

9 रविन्द्रनाथ ठाकुर को श्रेष्ठ साहित्यिक रचना के लिए सन् 1913 को नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया।

10 छोत्रों को विद्यार्थी जीवन में पढाई के साथ कोई न कोई धंधा सीख लेना चाहिए

11 पहाड बादलों को रोककर पानी बरसाते है।

12 हैदर अली ने अपने सैनिको को यूरोपिय ढंग सं सैनिक शिक्षा देने के लिए फांसीसियों को नियुक्त किया

13 समुद्र की सतह से करीब 2000 फुट ऊँचा होने के कारण मैसूर की आवहवा नीरोग और आनंद प्रद है।

14 कोलंबस धैर्यवान और खोज प्रवृत्ति का युवक था

15 रबर का दूध निकालने के लिए रबर के पेड के तने में एक छोटा सा छेद कर दिया जाता है।

16 मरनेवाले से जिलानेवाला अच्छा है।

17 जिसका मन सत्य का मंदिर है, उसका आचनण भी पवित्र होता है।

18 यह मानी हुई बात है कि अच्छाई की अपेक्षा बूराई की उपेक्षा का अनुकरण लोग आसानी से करते है।

19 आज का बालक कल का नागरिक है।

20 आरविली राइट और विलवर राइट जिन्होंने हवाई जहाज का आविश्कार किया था

10th Standard.indd 112 10-01-2019 12:09:51

निबंध सूची

1.पर्यावरण

2.स्वच्छ भारत

3.खेलों का महत्त्व

4.पर्यटन

5.अहिंसा परमोधर्म

6.प्रदूषण

7.समाज सुधार के महत्त्व

8.आधुनिक दान (रक्त / अंग)

9.महँगाई की समस्या

10.भारत के वैज्ञानिक

HINDI MODEL QUESTION PAPER

CLASS : X STD | MAX. TIME: 2.30 Hrs.

SUB : HINDI | Paper I | MAX. MARKS : 100 marks

I <u>संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए:</u> (2x10=20)

1 जाको राखै साँइयाँ, मारि न सकै कोय।
वाल न बाँका करि सकै, जो जग बैरी होय।

2 विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही,
उमडी कल थी मिट आज चली

3 एक भेद है और, जहाँ निर्भय होते नर नारी
कलम उगलती आग, जहाँ अक्षर बनते चिंगारी

II <u>किसी एक कवि का परिचय दीजिए:</u> (1x10=10)

4 रसखान 5 मैथिलीशरण गुप्त

III किसी एक पद्य का सारांश लिखिए : (1x15=15)

6 मातृभूमि 7 पाँच जन्य

IV कंठस्थ पद्य ज्यों का त्यों लिखिए : (5x1=5)

8 कलम देश ..... मरेगा मारे?
या
साधु ऐसा .....देई उडाया।।

V <u>हिन्दी में अर्थ लिखिकर अलग अलग वाक्यों में प्रयोग कीजिए</u> (5x1=5)

9 नूतन 10 अतिरेक 11 महत्व 12 तुलना 13 युक्ति

VI <u>सही या गलत बताइए ।</u> (5x1=5)

14 व्यक्तित्व बाहर आपने आप प्रकट होता है।
15 अकड और आडंबर का नाम व्यक्तित्व है।
16 संतो निरोगता का लक्षण है।
17 संस्कृति का स्वभाव है कि वह आदान प्रशन से बढती है।
18 आचरण बदलने का प्रयत्न करता है।

VII <u>खाली जगह भरिए</u> (5x1=5)

19 उँचे से उँचे दर्जे की शिक्षा बिलकुल .....
20 आत्म निर्भरता के संबंध में जो शिक्षा हमें ..... से मिलती है।
21 व्यक्तित्व भीतर संपूर्ण जीवन को ..... किया करता है।
22 ..... वह है जिसकी तस्वीर जमाना अपने आप में खोदता चला जाये।
23 जीवन और शिक्षण समाज को ..... करने के लिए बाध्य करता है।

VIII <u>कोष्ठक से सही शब्द चुनकर खाली जगह भरिए</u> (5x1=5)

24 किसी न किसी वस्तु की सदैन ..... बनी ही रहती है। (कमी, ज्यादा, अधिक)

25 ..... दिल से होती है, माल से नही । (इच्छा, लोभ, प्रार्थना)

26 आज की आवाज में थोडी .....थी। (श्रद्धा, शीतलता, मधुरता)

27 शिक्षा कर्तव्य कर्म का .....फल है। (प्यारा, अनुषंगिक , अनुशासन)

28 विश्व में वयकितत्व ही जानकारों के .....बने हुए है। (आधार, सुधार, समाधान)

IX <u>किन्ही दो प्रश्नों के संक्षिपत उत्तर दीजिऐ</u> (2x5=10)

29. ऐसे ऐसे एकांकी की विशेषता बताइए?

30. आत्मनिर्भरता से होनेवाले लाभ बताइए?

31. लोभ किसे कहते हैं और उसका परिणाम क्या होता है?

32. विनोबा के जीवन दर्शन पर पॉच वाक्य लिखाए?

X <u>किन्ही दों प्रश्नो के विस्तृत उत्तर दीजिऐ</u> (2x10=20)

33 जीवन और शिक्षण का महत्व बताइए।

34 मानव कल्याण कैसे हो सकता है? बताइए।

35 लोभ से लाभ नही, लेखक के शब्दों को समझाइए?

36 महात्मा गॉधी के सिद्धांतों पर टिप्पण लिखिए ?

10th Standard.indd 115 10-01-2019 12:09:51

MODEL QUESTION PAPER

CLASS : X STD | MAX. TIME: 2.30 Hrs.

SUB : HINDI | Paper II | MAX. MARKS : 100 marks

I किसी एक कहानी का सारांश। लिखिए : (1x15=15)

1 बदल। 2 हीगवाला

II किसी एक विषय पर तीन सौ शब्दों का निबंध लिखिए: (1x15=15)

3 समय का सदुपयोग 4 पुस्तकालय

5 विद्यार्थी जीवन

III कोई एक पत्र लिखिए (1x10=10)

6 बैंक में बचत खाता खोलने के लिए शाखा प्रबंधक को एक प्रार्थना पत्र लिखिए।

या

7 किताब घर की ओर से लोकभारती प्रकाखन, इलाहाबाद को गलत माल भेजने की शिकायत करते हुए एक पत्र लिखिए

IV किन्ही चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (5x2=10)

8 संज्ञा की परिभाषा दीजिए।

9 विशेषण। किसे कहते है?

10 समुच्चय बोधक की परिभाषा क्या है?

11 तत्सम उपसर्ग किसे कहते है?।

12 रचना की दृष्टि से वाक्य कितने प्रकार के है?

13 क्रिया विशेषण। किसे कहते है?

14 संबंधबोधक की परिभाषा देकर सोदाहरण। समझाइये?

15 तत्सम उपसर्ग किसे कहते है?

V 15 सही मिलन कीजिए (5x1=5)

1	मनुष्य	.....	परिणाम बोधक
2	सज्जन	.....	निजवाचक सर्वनाम
3	आज	.....	जातिवाचक संज्ञा
4	आप	.....	कालवाचक क्रिया विशेषण।
5	इसलिए	.....	गुणवाचक विशेषण।

10th Standard.indd 116 10-01-2019 12:09:51

VI 16 शुद्ध कीजिए (5x1=5)

1 आज वहाँ राम ने जाना है।

2 राम ने रोटी खाया

3 हमारे से कौई काम नही हो सकता

4 उसने किताब लाना भूला।

5 बच्चे स्कूल जाना चाहिए ।

VII 17 लिंग बदलिए (5x1=5)

1 वृद्ध 2 देवर 3 महोदय 4 बिल्ली 5 मोर

VIII 18 वचन बदलिए: (5x1=5)

1 रस्सी 2 देश 3 बूँद 4 साडी 5 लता

IX 19 वाच्य बदलिए (2x2.5=5)

1 राम पाठ पढता है।

2 सरला ने दो फल खाये।

X 20 निम्नोक्त गद्यांश का एक तिहाई में संक्षिप्त का लिखिए: (5x1=5)

सुकरांत के जीवन का अंतिम समय करीब आ गया थ। उसे प्राण दण्ड की आज्ञा के कारण विष का प्याला पीना पडा। अपनी जीवन यात्रा समाप्त करने के पहले उसने शिष्यों और मित्रों के सामने मृत्यु के बारे में एक सुंदर भाषण दिया। उसने कहा कि उात्मा का इस नश्वर शरीर से मृक्त होना ही मृत्यु कहलाता है। सुकरात ने भाषण देकर विष पिया तो उसके शिष्य और मिल फूट फूट कर रोने लगे। सुकरात ने कहा, क्या आपको मालूम नही कि मैने अपनी पत्नी को यहाँ से दूर कर दिया, केवल इसलिए कि मै शांति से मरना चाहिता हूँ। आप भी रायें बिना अंतिम घडी तक मेरे साथ रहें यही मेरी प्रार्थना है।

XI 21 अंग्रजी में अनुवाद कीजिए (10x2=20)

1 जो पढे लिखे है, उनका आदर सब जगह होता है।

2 जितना चाहो, उतना खाओ।

3 वह लडका जल्दी सोने लगता है।

4 सबको मिल जुलकर यह काम करना पडता है।

5 लडके परीक्षा के लिए तैयारी करते होंगे।

6 हम रोज समाचार पत्र पढा करते है।

7 कंबर की लिखी हुई रामायण बहुत प्रसिद्ध है।

8 हमसे अधिक समय तक बैठा नहीं जाता।

9 यह काम अब पूरा नही किया जाएगा।

10 रविवर्मा ने यह तस्वीर बनायी थी।

10th Standard.indd 117 10-01-2019 12:09:51

Hindi – Std X

List of Authors and Reviewers

Chairperson

Dr. M. Seshan,
Professor (Retd.,)
Head of the Department. (Hindi)
D.G. Vaishnav College, Arumbakkam, Chennai.

Reviewer

Dr. Kokila P.C.,
Associate Professor (Retd.),
Head of the Department. (Hindi)
Presidency College, Chennai.

Authors

S. Anandakrishnan, M.A., M.Ed.,
Headmaster (Retd.)
The Hindu Hr. Sec. School, Triplicane, Chennai.

S. Satyanarayanan, M.A., M.Ed.,
PG Asst. in Hindi (Retd.)
Kesari Hr. Sec. School, Mylapore, Chennai.

M. Gabriel Govindaraju, M.A., B.Sc., B.Ed.,
Lecturer in Hindi (Retd.)
Navalar Nedunchezhin GHSS, Lawspet, Puducherry.

S. Muralidharan, M.A., B.Ed.,
PG Asst.,
Jawahar Higher Secondary School, Ashok Nagar, Chennai.

O.V.S. Mallika, M.A., B.Ed., M.Phil.,
B.T. Asst.,
Kesari Hr. Sec. School, Mylapore, Chennai.

R. Radjamohane, M.A., B.Ed.,
Lecturer in Hindi
Jeevanandam GHSS, Karamanikuppam,
Directorate of School Education, Puducherry.

Coordinator

K. Chandrasekaran,
Lecturer, DIET, Chennai.

Art and Design Team

Layout
Thy Designers

QC
Asker Ali
Rajesh Thangappan
Manohar Radhakrishnan
Jerald Wilson

Wrapper Design
Kathir Arumugam

Co-ordination
Ramesh Munisamy

Typist
DR.Saroj singh

This book has been printed on 80 GSM Elegant Maplitho paper.

Printed by offset at:

Notes

10th Standard.indd 109 10-01-2019 12:09:51

Notes

10th Standard.indd 109 10-01-2019 12:09:51